युवराज चूण्डा

भगवतीचरण वर्मा

राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

मूल्य रु० १५.००

© भगवतीचरण वर्मा

प्रथम संस्करण १९७८

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
८, नेताजी सुभाष मार्ग नयी दिल्ली ११०००२

मुद्रक शान प्रिन्टर्स
शाहदरा, दिल्ली ११००३२

युवराज चूण्डा

प्रथम परिच्छेद

सत्य एक संदिग्ध संज्ञा है। विशेष रूप से इतिहास के माध्यम से उभरा हुआ सत्य। लेकिन इससे कैसे इनकार किया जा सकता है कि घटनाओं का एक निश्चित रूप होता है। वैसे इतिहास-लेखक घटनाओं के आधार पर ही इतिहास लिखता है। तिथि, सम्वत, दिन—सबकुछ यथावत लेकिन कार्य और कारण—उस कार्य कारण के पीछे मानव प्रवृत्ति और मनोविज्ञान, इन सबमें कभी-कभी जमीन आसमान का अन्तर पड़ जाता है। और इसी लिए शायद इतिहास को बार बार मूल्यांकित करने की परम्परा पड़ गयी है। मनुष्य को देवता समझने की, मनुष्य को दानव समझने की प्रवृत्ति अनादिकाल से दिखती आयी है। यह सत्य है कि आज के बौद्धिक युग में प्राचीनकाल के अतिशयोक्तियों या प्रशस्तियों में भरे इतिहास पर विश्वास नहीं होता। लेकिन किया क्या जाय, मानव की समस्त स्थापना ही विश्वासों पर है। और इसलिए विश्वास का साथ नहीं छोड़ा जा सकता। युवराज चण्डा की इस ऐतिहासिक कहानी में विश्वास ही धरातल है।

यह एक ऐतिहासिक कहानी है, जिसके पूरी तौर से ऐतिहासिक होने का दावा करना गलत होगा। यह कहानी पूर्ण रूप से उपन्यासकार की कल्पना की उपज भी नहीं है इसलिए, इसके पूरी तौर से कल्पित कहानी होने का दावा करना भी गलत होगा। स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न खड़ा हो जाता है तो फिर इस ऐतिहासिक कहानी को लिखने की आवश्यकता ही क्या है?

आखिर आनन्द जिस धरातल पर खडा है वह मनोरजन का धरातल है । लेकिन शुद्ध मनोरजन का आनन्द नही कहा जा सक इसीलिए मनोरजन से पथक आनन्द की अपनी निजी सत्ता है। जा रजन मानव को अपने मे तन्मय करके उसकी भावना को उदात्त व वही आनन्द है । और भावना को उदात्त बनाने मे आदर्श हमे महत्त्वपूर्ण तत्व माना गया है । तो इस यथार्थवाद से कुछ अलग कर आदर्शवाद ही इस कहानी का क्षेत्र है । उपन्यासकार अपने नि यथार्थवादी और बौद्धिकता के क्षेत्र से हटकर आदर्श के क्षेत्र म गया है । लेकिन इस भटकाव की स्थिति से अरुचि क्या हो ? का समस्त जीवन ही भटकाव का जीवन है । एक भटकाव से त्राण के लिए मनुष्य अनगिनती भटकावो मे पड जाता है, तो आदर्शवा यह भटकाव कहानीकार को कुछ समय के लिए बडा मजेदार लग र है ।

और अब भटकावो की बात उठ खडी हुई है तो इस लम्बी भू म पाठक को अनायास ही भटकाव के अवयवो का दिखना स्वाभावि जायगा । इसलिए इस भूमिका से अलग हटकर अपनी कहानी पर वे हाना आवश्यक होगा ।

यह कहानी मेवाड के युवराज चूण्डा की कहानी है और इस क की ऐतिहासिकता और प्रामाणिकता कर्नल टाड के राजस्थान के इति पर आधारित है । लिखित अलिखित किंवदंतिया और सत्य का अ सम्मिश्रण, अनगिनती घटनाओ अतिशयोक्तियो से भरा पूरा कर्नल का यह ग्रन्थ, कल्पना और प्रामाणिकता के ताने बाने का एक अ उदाहरण है ।

युवराज चूण्डा की कहानी का मेवाड के इतिहास म अधिक म पूर्ण स्थान तो नहा है, लेकिन आदर्शवाद का एक बडा प्यारा प्रदर्श कहानी म है । युवराज चूण्डा का जन्म किस सम्वत म हुआ, उनकी का देहान्त कब हुआ, किन परिस्थितियो म हुआ—इसका उत्तर

टाड के उपन्यास में नहीं है। कहानी उस समय आरम्भ होती है, जब राणा लाखा चित्तौड के शासक थे। ऐसा लगता है कि राणा लाखा विधुर थे और उनकी आयु साठ वर्ष के ऊपर रही होगी, क्योंकि उनकी लम्बी और शानदार दाढ़ी पककर सफेद हो गयी थी और उनकी गणना वयोवृद्ध लोगों में होने लगी थी।

यह कहना भी कठिन है कि युवराज चूण्डा की अवस्था उस समय कितनी रही होगी, लेकिन उनकी आयु पच्चीस वर्ष से कम तो रही नहीं होगी, क्योंकि उनका विवाह या उनके विवाह तो हो ही चुके थे और शायद उनकी दो एक सन्तान भी रही हों। राजपूतों में उन दिनों बहु-विवाह की प्रथा थी और चित्तौड के युवराज का कहना ही क्या! हरेक छोटा मोटा राजा चित्तौड के युवराज को अपना जामाता बनाने में गौरव का अनुभव करता था। प्राचीन वैदिक परम्परा तो न जाने कब की खत्म हो चुकी थी बाल विवाह प्रचुरता के साथ होने लगे थे। कर्नल टाड ने यह सब खोजबीन करने की आवश्यकता नहीं समझी होगी, क्योंकि उनके इतिहास में इस सबका जिक्र नहीं है। तो, तथ्य की बात इतनी है कि चूण्डाजी युवराज थे। राज्य का आधा काम वह सम्हालते थे। राणा लाखा तो साठ वर्ष की आयु पार करके भी वानप्रस्थ का नाम नहीं ले रहे थे।

युवराज चूण्डा को किस तरह के शौक थे यह कहना कठिन है। कर्नल टाड ने अपने इतिहास में इसका जिक्र नहीं किया है। लेकिन युवराज चूण्डा को बुरे शौक नहीं थे। उनका जो चरित्र कर्नल टाड ने चित्रित किया है, उससे तो यही लगता है, और जहां तक अच्छे शौकों का प्रश्न है, क्षत्रियों में सबसे अच्छा शौक शिकार का माना जाता था। प्राचीन काल के राजा सबके सब शिकार खेलते थे।

चूण्डा शिक्षित युवक थे—ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों का शिक्षित होना उन दिनों अनिवार्य माना जाता था। उनकी शिक्षा वेद शास्त्रों की शिक्षा रही होगी—आदर्शों पर आस्था, आत्मविश्वास और संयम धर्म पर उच्च आस्था! राणा लाखा को अपने ज्येष्ठ पुत्र चूण्डा पर गर्व था। फिर राणा लाखा भी धार्मिक प्रवृत्ति के ही आदमी थे—कर्नल टाड भी

इसी परिणाम पर पहुंचे थे। यहा तक कि उनके पुत्रो को विमाता का कोपभाजन न बनना पडे, अत उन्होने राजपूती परम्परा से दूर हटकर अपना दूसरा विवाह भी नही किया था। राणा लाखा ने हमेशा अपनी प्रजा को सुखी बनाने का प्रयत्न किया, कुछ आधुनिकता और प्रगतिशीलता पर उनका विश्वास था। मेवाड की खनिज सम्पदा को ढढ निकालने म उनका अच्छा खासा योगदान था। फिर राणा लाखा सौभाग्य शाली थे। दिल्ली के मुसलमान बादशाह पश्चिम से हिन्दुस्तान मे घुसने वाले अन्य मुसलमानो को रोकने और युद्ध करने म व्यस्त थे और अपने जिम्मारे के लिए पूर्व की हरी भरी उपजाऊ भूमि उनके सामने थी, राजस्थान की बीहड भूमि पर नजर डालने का उस समय उन्हे अवकाश ही नहा था और इसलिए मेवाड मे उन दिनो सुख शान्ति थी। राणा लाखा ने मेवाड म कलाओ को विकसित किया था, पाण्डित्य को बढावा दिया था बडे-बडे पण्डित और कलावन्त वहा पल रहे थे।

युवराज चूण्डा के कितने भाई थे, इस पर कर्नल टाड मौन ही रहे है। हा उनके एक सगे छोटे भाई का जिक्र अवश्य किया—केवल प्रसगवश। लेकिन इस कहानी के आरम्भ म मेवाड के राजकुल के केवल दो ही व्यक्तियो का जिक्र है—राणा लाखा और युवराज चूण्डाजी। कहानी के आरम्भ म कर्नल टाड ने दोनो के जो चरित्र चित्रित किये हैं, वे इस प्रकार से है

राणा लाखा कलाप्रेमी, विद्याव्यसनी धार्मिक प्रवत्ति के, यानी गुण-ही-गुण, अवगुण के नाम पर—किसी कदर शोखी और हठी, गरजिम्मेदारी की सीमा तक पहुचनेवाली विनोदप्रियता, राजपूतो की पारम्परिक वीरता पर अन्धविश्वास की सीमा तक पहुचनेवाला विश्वास।

युवराज चूण्डा म अपने पिता के समस्त गुण थे—विवेकशील तेजस्वी और धीर वीर गम्भीर यानी अपने पिता से हर बात पर सवाये। वस हठ नाम की चीज नहीं, लेकिन जब हठ पकड लिया तब अन्त समय तक अपने हठ का निबाह करने की प्रवत्ति।

इस कहानी की घटना का काल चौदहवी शताब्दी का अन्तिम चरण है। तिथि सम्वत का उल्लेख नहीं है। जहां-जहां उल्लेख है, वहां वहां

कापनिक है।

तो कनल टाड के इतिहास में विश्राम के रूप में केवल इतना ही प्राप्त होता है। बाकी जो कुछ है वह उपन्यासकार की कल्पना की उपज है। बहुत-कुछ प्रामाणिक और बहुत कुछ अप्रामाणिक। आगे पीछे की घटनाएँ कुछ इस तरह उलझी हुई हैं कि कनल टाड के क्रम को इस उपन्यास में त्याग देना ही उचित होगा। और कनल टाड ने जो कुछ लिखा है, उसकी ऐतिहासिकता भी अतिशयोक्तियों एवं भ्रान्तियों से युक्त है। फिर यह उपन्यास है इतिहास नहीं। उपन्यास में उपन्यासकार की कल्पना अधिक मुखर होती है। तो इस उपन्यास की ऐतिहासिक प्रामाणिकता पर ध्यान न देकर इस उपन्यास के रूप में समझा जाना चाहिए।

मेवाड की राजधानी उन दिनों चित्तौड थी और चित्तौड का गढ उन दिनों दुर्भेद्य समझा जाता था। एक पहाडी पर बसा हुआ चित्तौड गढ। उसकी आबादी सीमित थी। भारतवर्ष में मुसलमानों के शासन काल में कई सौ वर्षों तक चित्तौड का इतिहास वीरता, जौहर और राजपूतों की शान-बान का इतिहास रहा है।

चित्तौड राणा लाखा की राजधानी थी। राणा लाखा सिसोदिया राजपूत थे। और सिसोदिया वंश के लोग अपने को भगवान राम का वंशज मानते रहे हैं। तो घोर कलियुग में सिसोदिया वंश के राजपूत त्रेतायुग के राम की धर्मनिष्ठा निभाते आये थे—ऐसा समझा जाता है।

इस उपन्यास की पृष्ठभूमि में इतना कह देना यथेष्ट है। और अब आरम्भ होता है उपन्यास, कल्पना की रंगीनियों से युक्त, ऐतिहासिक प्रामाणिकताओं की किसी हद तक उपेक्षा करता हुआ।

दूसरा परिच्छेद

चैत का प्रथम सप्ताह था, यानी होली का त्योहार बीत चुका था। बसन्त ऋतु की मादकता समस्त वातावरण में व्याप्त थी। सन्ध्याकाल ने समय दिन की गर्मी से चित्तौडवासियों को त्राण मिला था। तो, राणा

व्यक्ति प्रतिहारी ने पीछे से आगे बढ़ा, "महाराजा की जय हो ! मैं मारवाड़ के राव रणमल का सामन्त आया हूँ। मारवाड़ के राठौर राव रणमल मेवाड़ के सिसौदिया से सम्बन्ध स्थापित करने को उत्सुक हैं। तो, राजा रणमल ने अपनी बेटी के लिए मेवाड़ में नारियल भेजा है। राव रणमल के छोटे भाई राव रत्नदेव नारियल के साथ फाटक पर खड़े हैं।

सामन्त जगता ने ताली बजाते हुए कहा, 'राठौर राव रणमल अपनी बेटी सिसौदिया को देना चाहते हैं—राठौर सामन्त के लिए विजया मँगायी जाय।'

राणा लाखा हँस पड़े, 'विजया नहीं, कुसम्मा का प्रबन्ध कराया जाये इनके लिए।" और उन्होंने प्रतिहारी से कहा, "फाटक खोल दो ! हमारे दो सौ सैनिक मेवाड़ युवराज चूण्डा की अध्यक्षता में जाकर मारवाड़ के सैनिकों को ठहराने की व्यवस्था करें।'

प्रतिहारी ने उत्तर दिया अन्नदाता ! कँवर जू तो पण्डितों की सभा में गये हैं, अभी तक नहीं लौटे हैं।'

सामन्त रूपा ने कहा, "कँवर जू कहीं साधू संन्यासी न बन जायें। न उन्हें विजया से रुचि, न मदिरा का प्रेम, न कुसम्मा के प्रति मोह। दिन रात घूमना, आखेट करना, किसानों के खेतों में जाकर उनसे बातें करना, पण्डितों के प्रवचन सुनना !

सामन्त जगता ने सामन्त रूपा को मीठी डाँट पिलायी "कँवर जू की बदौलत ही मेवाड़ में चार नये तालाब बन हैं। जावरा में चाँदी मिली है !" और वह भावातिरेक में बोल उठा, 'युवराज चूण्डा की जय ! महाराज लाखा की जय !"

करीब दो मिनट तक यह जय जयकार का हंगामा चलता रहा और मानो पूरी सभा को याद आ गया कि मारवाड़ का नारियल चित्तौड़ में प्रवेश की प्रतीक्षा कर रहा है।

स्वयम् राणा लाखा ने इस जय जयकार के क्रम को समाप्त किया। गम्भीर स्वर में वह बोले, "युवराज के लिए नारियल आया है, स्वतः गढ़ के फाटक पर जाना उचित न होगा। जगता, तुम जाकर राव रत्नदेव तथा उनके सैनिकों का स्वागत करो ! राव रत्नदेव को सीधे यहाँ

जाओ। पुरोहितों एवं अनुचरों और सैनिकों को अतिथिशाला में ठहराने की व्यवस्था करके एक घड़ी में नारियल एवं पुरोहितों को यहां लाओ—वह स्वतन्त्र महल में ही ठहरेंगे। और इस बार उन्होंने अपने निजी सेवक से कहा, मातंगा! देख युवराज के लौटने का समय हो रहा है। उनके आते ही उन्हें यहां भेज देना।'

आध आध घण्टे बाद राव रणमल के छोटे भाई राव रतनदेव ने पुरोहितों के साथ दरबार में प्रवेश किया। राव रतनदेव ने राणा लाखा को विधिवत अभिवादन करके विनय की, 'महाराणा, राठौर कुल शिरोमणि राव रणमल ने अपनी पुत्री राजकुमारी गुणवती को सिसौदिया कुल में ब्याहने के लिए नारियल भेजा है।'

'इस नारियल का स्वागत है।' राणा लाखा ने कहा। और तभी सिसौदिया राजा की चांदी की कटोरियों में घुला हुआ कुसुम्भा (अफीम) प्रस्तुत किया गया। कुसुम्भा का दौर समाप्त होने पर राणा लाखा की विनोदप्रियता जागी। अपनी सफेद दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए वह बोले, 'मजाक से राणा लाखा वृद्ध हैं और अब तो वह वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण करने की सोच रहे हैं। स्पष्ट रूप से अब नया ब्याह रचाने की उनकी अवस्था पार हो चुकी है। तो उनके लिए तो यह नारियल आया न होगा।' और अपने मजाक पर वह स्वयं हँस पड़े।

'आप ठीक कहते हैं महाराज! यह नारियल युवराज चूण्डाजी के लिए आया है।' राव रतनदेव ने कहा, 'बस आपको वृद्ध कहनेवाला मूर्ख ही समझा जायगा।'

सारी सभा इस भद्दे मजाक पर जी खोलकर हँस रही थी। तभी अचानक युवराज चूण्डा ने उस सभा में प्रवेश किया।

युवराज चूण्डा उस दिन बुरी तरह थके और झुंझलाये हुए थे। आज रात वह गिर्वा का शिकार खेलने निकले—उन दिनों मेवाड़ में गुजरात के मिहिरों के एक समूह ने पर्वत पर बड़ा आतंक मचा रखा था लेकिन पता चला कि मिहिरों का वह समूह फिर गुजरात चला गया। युवराज के पहुँचने तक वह दौर हो चुका था। पण्डितों के प्रतिनिधियों ने शामिल और काशी से पधारे हुए दो पण्डितों में शास्त्रार्थ का निर्णायक बनने का उनसे

आग्रह किया और चण्डा उस शास्त्राय म चले गय। शास्त्राथ म कुछ गरमागरमी बढी और मारपीट की नौबत आ गयी। दाना पण्डित घी-दूध पर पले थ, हृष्ट-पुष्ट तो युवराज चूण्डा का इन दाना की मार-पीट मल्ल-युद्ध म न परिणत हा जाय—इस रोकन क लिए अपन बाहु-बल का प्रयोग करना पडा था। ता वह जब राजभवन लौट उनम थका-वट के साथ झुझलाहट भी थी। कुछ एसा लगता है कि चूण्डा न दर-बारकक्ष म प्रवश करत समय राणा लाखा और राव रणमल्ल की बात चीत सुन ली थी। दरबार म प्रवश करत ही युवराज न अपन पिता क चरण छुए "आना।

'अपना स्थान ग्रहण करा।' राणा लाखा बाल, 'मारवाड क राव रणमल न अपनी पुत्री क लिए नारियल भजा है तुम्हारे लिए। सिसो-दिया और राठौरा का यह सम्बन्ध सौभाग्यशाली हागा।'

युवराज चूण्डा बठे नही। थकावट और झुझलाहट उन पर थम के अनका रूपा म उनकी विचित्र आस्थाएँ। उन्हान गड़ गद ही शान्त स्वर म उत्तर दिया, 'राठौरा की राजकुमारी आपक वचन क अनुसार अब मरी माता के समान बन गयी है—यह नारियल ता अब महाराणा लाखा क लिए हो चुका है क्याकि महाराणा न स्वय यह कहा है।'

सारी सभा युवराज चूण्डा क उस वचन पर स्तब्ध रह गयी। राणा लाखा थाडी दर तक विस्मय क साथ चूण्डा का दखत रह। अपन पुत्र की सनक म धोरा बहुत वह परिचित ता थ ही। फिर विनोदप्रियता का स्थान गम्भीरता न ले लिया युवराज यह बात ता मैंन मजाक म कही थी।"

युवराज न तनकर उत्तर दिया 'महाराज। सिसोदिया क प्रमुख का वचन वज्र की भाँति अकाट्य और कठार हाता है। मारवाड की राजकुमारी अब मरी माता बन चुकी है।

गम्भीरता न क्रोध का रूप धारण कर लिया 'तुम्हारा यह वचन अपमान स भरा हुआ है—सारी सभा मरी बात स सहमत हागी।

सब पहल कि सभा अपनी सहमति प्रकट करती, युवराज न फिर मुस्काकर विनम्र किन्तु दृढ़ता स भरे शब्दा म कहा सारा अपमान

ने पर विश्वास और आस्था की सत्ता है, ऋषियों ने उसे धर्म का नाम दिया है। एक बार जिसे मैंने मन से और वचन से माता के रूप में स्वीकार कर लिया है, उसे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करने की मैं परिकल्पना ही नहीं कर सकता। राजपण्डित आचार्य त्रिलोचन से व्यवस्था ले लीजिए।

इससे पहले कि राजपण्डित आचार्य त्रिलोचन से व्यवस्था देने को कहा जाय वह उठकर बगल के द्वार से बाहर निकल रहे थे। राणा लाखा के मुख पर भाव की रेखाएँ अंकित हो गयी, वह एकाएक बोल उठे तो फिर ऐसा ही होगा। मैं मारवाड़ का नारियल वापस नहीं करूँगा स्वयं मैं अपने लिए स्वीकार करूँगा। लेकिन एक बात याद रखना मारवाड़ की राजकुमारी से यदि मेरा कोई पुत्र होगा, तो वही तुम्हारे स्थान पर मेवाड़ राज्य का उत्तराधिकारी होगा। तुम्हें मेरा यह निर्णय स्वीकार है ? '

आकाश की ओर हाथ उठाकर युवराज चूण्डा ने कहा "भगवान एकलिंग देवा और पितरों की साक्षी देकर मैं चूण्डा वचन देता हूँ कि मारवाड़ की राजकुमारी से उत्पन्न महाराणाजी का पुत्र ही मेवाड़ का भावी राणा होगा, मैं नहीं।

सामन्तों ने एक स्वर में कहा, 'यह कैसे सम्भव है ? मेवाड़ की राजगद्दी का उत्तराधिकारी महाराणा का ज्येष्ठ पुत्र ही हो सकता है—मेवाड़ के राजकुल का विधान तो यही है। इसे कैसे बदला जा सकता है ? '

राणा लाखा का क्रोध अपनी चरमसीमा पर पहुँच गया था। कठोर स्वर में उन्होंने कहा, समस्त विधान मनुष्यों द्वारा ही बनाये गये हैं। हम पिता-पुत्र स्वेच्छा से इस नये विधान की रचना कर रहे हैं—संयुक्त रूप से इस विधान पर सहमत होकर। क्या कुंवर चूण्डाजू, क्या इसमें तुम्हें कोई आपत्ति है ? '

सामन्तों ने कहा। अति प्राचीन काल में अर्थात द्वापर युग के महाभारत काल में महाराजा शान्तनु के निषाद कन्या मत्स्यगन्धा से विवाह करने के समय युवराज भीष्म ने कुछ ऐसा ही वचन देकर अपने को

तीसरा परिच्छेद

मारवाड़ का प्रदेश राजस्थान का एक विस्तृत मरुभूमि का प्रदेश है, जहां बीच-बीच में उपजाऊ भूमि के खण्ड उभरे हुए हैं जहां कुओं में पानी है, जहां हरियाली और खेती होती है। रणमल के पुत्र जोधा ने बाद में यहीं जोधपुर नाम का नगर बसाया था। उसके पहले तो उस प्रदेश में अनेक ग्राम इधर-उधर बिखरे थे, भयानक संघर्षों और अभाव का जीवन वहां व्यतीत कर रहे थे।

कन्नौज में मुसलमानों के हाथ जयचन्द की पराजय के बाद राठौर क्षत्रियों के एक बचे-खुचे दल ने भागकर राजस्थान मरुप्रदेश की शरण ली थी और मारवाड़ प्रदेश राठौरों का प्रदेश बन गया था। मारवाड़ के राठौरों की राजधानी का नाम क्या था? इसका उल्लेख इतिहास में नहीं मिलता। कुछ उसे मण्डोवर कहते हैं, कुछ उसे मन्दौर कहते हैं, लेकिन वह राजधानी कोई बड़ा ग्राम ही था जहां राजसी वैभव का अभाव था और जहां के लोग घोर परिश्रम और संघर्षों का जीवन बिताते हुए फिर से नीव मजबूत करने में प्रयत्नशील थे। रणमल की पुत्री का नाम गुणवती था और वह रूपवती राजकुमारी थी। मेवाड़ के राणा लाखा की रानी के रूप में वह अपने को भाग्यशालिनी समझती थी। विवाह के दो वर्ष बाद ही गुणवती ने पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम मुकुलजी रखा गया।

गुणवती ने अपने विवाह के बाद राणा लाखा एकबारगी भोग विलास में डूब गये। इस तरह उसके बाद कुंवर चूण्डाजी के हाथ में मेवाड़ का शासन सूत्र आ गया था। मेवाड़ प्रदेश सुख सम्पन्नता का प्रदेश बन गया था। उधर दिल्ली के मुसलमान बादशाहों के आतंक के बाद एक जुट रहे थे, लेकिन मालवा और गुजरात के सुलतानों के बल पर आक्रमण करते जा रहे थे। हां जितना भाग उन्होंने अपने वश में कर लिया था वह बना का बना नहीं सलामत था। अधिक विस्तार रुक गया था।

बाद में बाद के लिए राजस्थान की भूमि पर दिल्ली के मुसलमान

सात्विक प्रवृत्तियोंवाला था। मेवाड़ आकर उसने राजवैभव और सम्पन्नता का एक नया रूप देखा। चूण्डा की कार्यकुशलता उसने देखी, और उसे लगा कि अगर वह चूण्डाजी के समान कर्मठ बने तो वह मारवाड़ के समस्त राठौरों को संगठित करके शक्तिशाली शासक बन सकता है। राव रणमल के मारवाड़ लौटने के एक सप्ताह बाद चूण्डा को अपना गुरु बनाकर वह भी लौट गया।

मेवाड़ के शासन एवं मेवाड़ की प्रजा के प्रति राणा लाखा का जो मोह था वह रानी गुणवती में सिमट गया था। बस दिखावे के लिए एक यन्त्र की भांति वह दरबार लगाते थे। लेकिन वह दरबार आमोद-प्रमोद का केन्द्र ही रहता था। समस्त राज्य व्यवस्था तो युवराज चूण्डा के हाथ में थी और चूण्डा ही दरबार में राणा लाखा के प्रतिनिधि के रूप में सामन्तों से परामर्श करता था। इस तरह पांच-छह वर्ष बीत गये।

उस दिन वसन्तोत्सव मनाया जा रहा था चित्तौड़ के दरबार में। केसर में रँगे पीत वस्त्र धारण किये हुए राणा लाखा सिंहासन पर आरूढ़ थे। नाच-रंग चल रहा था। उसी समय प्रतिहारी ने सूचना दी कि मुन्दर गया के पण्डों का एक दल राणा लाखा के पास फरियाद लेकर आया है। राणा लाखा को उस उत्सव में वह आघात पसन्द नहीं आया, उन्होंने प्रतिहारी से कहा "उन्हें अतिथिशाला में ठहरा दो। एक सप्ताह बाद जब वसन्तोत्सव समाप्त हो जाय तब मैं उनसे मिलने का समय दूंगा।"

कुंवर चूण्डा उस समय उस सभा में मौजूद थे। उन्होंने हाथ जोड़कर राणा लाखा से विनय की "महाराज, शरणागत की तत्काल बात सुनना ही उचित होगा। प्राय: तीन सौ तीन सौ कोस की कठिन यात्रा करके आये हैं। कोई बहुत बड़ी विपत्ति पड़ी होगी उनके ऊपर। आज्ञा हो तो मैं उनसे मिलकर उनकी बात सुन लूं।"

चूण्डा के इस कथन से राणा लाखा चौंक उठे, जैसे उनमें एकाएक फिर से सोयी हुई चेतना जाग पड़ी हो। कुछ देर तक वह अपलक युवराज चूण्डा को देखते रहे, फिर उनके मुख पर जैसे संकल्प से युक्त एक हल्की सी मुस्कान प्रस्फुटित हुई, "युवराज, तुम्हें धन्यवाद कि तुमने मुझे मोह निद्रा से सचेत करा दिया। मैं पिछले छह सात वर्षों से इस मोह निद्रा

इससे पहले कि राणा लाखा कोई उत्तर दें, युवराज चूण्डा बोल उठे 'आप लोग निश्चिन्त रहें। दूसरों पर आक्रमण करके दूसरों के भाग को छीनना हमारे धर्म में वर्जित साधन माना गया है। लेकिन अपनी और अपने धर्म की रक्षा करना हमारे धर्म में पुण्य कार्य है। तो, पितरों की भूमि गया को विधर्मी यवनों से मुक्त करने के लिए मैं चुने हुए सैनिकों के साथ चलूँगा। धर्म की रक्षा में क्षत्रिय कभी पीछे नहीं रहे। हम बार भी पीछे नहीं रहेंगे। आप यहाँ से निराश नहीं लौटेंगे।'

राणा लाखा का ध्यान इन पण्डों से हटकर वसन्तोत्सव मनानेवाले अपने दरबार में उपस्थित समुदाय की ओर गया। एक ओर से लेकर दूसरी ओर तक उनकी नजर घूमी—नर्तकियों का समूह, मदिरा के पात्र, विलासिता के समस्त उपकरण। और एक अयाचित ग्लानि से वह भर गये। फिर पण्डित गंगानाथ पर अपनी नजर जमाकर वह बोले, 'सुनी तुमने युवराज चूण्डा की बात! आज मुझे अनुभव हो रहा है कि इस पवित्र आर्यभूमि पर कुछ थोड़े से मुसलमान शासकों का आधिपत्य तथा हिन्दू धर्म के विनाश का कारण हम क्षत्रियों की विलासिताजनित कायरता है। मैं स्वयं अपने सम्बन्ध में सोच रहा हूँ। इस परिपक्व अवस्था में, जब मुझे माया मोह छोड़कर धर्म पर पूर्ण रूप से केन्द्रित हो जाना चाहिए था, मैं इस विलासिता के जीवन में डूब गया हूँ। आप लोग जैसे मुझे ज्ञान देने और मुझे सही मार्ग दिखाने आये हैं। तो युवराज चूण्डा नहीं, स्वयं मैं राणा लाखा अपनी सेना के साथ पितरों की भूमि गया की रक्षा करने चलूँगा। युवराज चूण्डा मेवाड़ को सुदृढ़ बनाने का काम करते रहेंगे, साथ ही समस्त राजस्थान को एकता के सूत्र में बाँधकर यवनों के शासन से आर्यभूमि को मुक्त करने का प्रयास भी करते रहेंगे।'

चूण्डा ने हाथ जोड़कर कहा, "महाराज! धर्म की रक्षा करने का भार हम युवा क्षत्रियों पर है।"

चूण्डा की बात अधूरी रह गयी, राणा लाखा ने दृढ़तापूर्वक कहा, "क्षत्रिय मृत्युपर्यन्त वृद्ध नहीं होता चूण्डा जू! मेरी मोह निद्रा टूट चुकी है। सैनिकों की तैयारी करने का आदेश दे दो। जीवन की अंतिम वेला में धर्म की रक्षा करने का पुण्य मुझे अर्जित कर लेने दो। तुम्हारे सामने

तो अभी लम्बा जीवन है।' और राणा लाखा उठ खडे हुए, "एक पक्ष बाद आज के दिन ही मेरी अध्यक्षता में मेवाड की सेना गया की ओर प्रस्थान करेगी—मेरा यह आदेश है। राणा लाखा की चेतना लौट आयी है—एकलिंग भगवान की जय।"

"एकलिंग भगवान की जय। राणा लाखा की जय।" सभा जय-जयकार के घोष में गूंज उठी।

राणा लाखा ने युवराज चूण्डा को आदेश दिया, "इन पण्डों के ठहरने की समुचित व्यवस्था की जाय और एक सप्ताह के अन्दर सैनिक एकत्र कर लिये जायें।' और राणा लाखा बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये दरबार से चले गये।

सभा विसर्जित हो गयी। सर झुकाये हुए समस्त दरबारी एवं अतिथि चले गये।

चित्तौड में गया के युद्ध की तैयारियां जोरों के साथ होने लगी। मेवाड के पांच हजार सैनिक चित्तौड में चार दिनों के अन्दर ही एकत्रित हो गये, धन का रसद का समस्त प्रबन्ध कर लिया गया। एक विचित्र उत्साह और दृढ़ता का वातावरण चित्तौड में व्याप्त था।

छठे दिन राणा लाखा ने अपना दरबार किया। समस्त राजवंश के सदस्य तथा मेवाड के सामन्तगण एकत्रित थे उस दरबार में। पुरोहित मन्त्रीगण और श्रेष्ठीगण सभी बुलाये गये। तिल रखने की जगह भी नहीं बची थी। सब लोगों के एकत्रित हो जाने पर राणा लाखा ने दरबार में प्रवेश किया। एकत्रित लोगों ने खडे होकर राणा लाखा की जयजयकार की। राणा के सिंहासन पर बैठने के बाद सब लोग अपने अपने स्थान पर बैठ गये। राणा लाखा ने आरम्भ किया 'मैं मेवाड का अधिपति सिसौदिया वंश का अग्रज, अपने पितरों की भूमि गया को यवनों के अत्याचारों से मुक्त करने के लिए युद्ध अभियान पर अपनी सेना के साथ गया जा रहा हूं। मुझे लगता है कि मुझे वहां वीरगति प्राप्त होगी। और अगर मैं गया को विधर्मियों से मुक्त कराके जीवित रहा तो मैं अब चित्तौड वापस नहीं लौटूंगा। सांसारिक सुख-सम्पन्नता को छोडकर मैं लम्बी तीर्थयात्रा पर निकल जाऊंगा।'

"एमा न कह महाराज ! एक स्वर म सब लोग यात उठे ।

"आप लोग शान्त रह, मन बहुत साच-विचार क साथ अपन निणय लिय ह। और आप सब लाग जानत ह कि मरा निणय अकाट्य और अडिग हाता ह । ता अब मर सामन मवाड की राजगद्दी का प्रश्न है। इस अवसर पर म युवराज चूण्डाजी का मेवाड नरेश के रूप म राज तिलक करूँगा । युवराज चण्डा आग आओ !"

चूण्डा अपन स्थान स आग नहा बढ़े, उलटे उन्हान राणा लाखा को हाथ जाडे राणाजी की जय हा ! लेकिन मेवाड की राजगद्दी के अधिकारी कुवर मुकुलजी ह राणाजी सात वष पहले इस दरबार म यह निणय द चुक ह ।

'कसा निणय ? मैंन उस समय आवेश म आकर कुछ कह दिया ता उसकी साथकता नहा । मैं अपना निणय बदल भी सकता हूँ।'

चूण्डा न दृढ़ता स भर विनम्र स्वर म कहा राणाजी के अधिकार और निणय क विरुद्ध कुछ कहन की धृष्टता मैं नही करूँगा लेकिन म चूण्डा जो एकलिंग भगवान और पितरा की साक्षी देकर अपना वचन द चुका ह कि मवाड का भावी शासक मैं नहीं हूँगा मारवाड की राजकुमारी से जन्मा पुत्र हागा ! और अपन स्थान स चलकर वह रानी गुणवती क पास पहुच जिसकी गाद म कुवर मुकुलजी बठे थे । मुकुलजी का गाद म लेकर चूण्डा न राणा लाखा क सम्मुख खड़ा कर दिया "महाराज ! अपने उत्तराधिकारी का राजतिलक स्वय अपने हाथ म करें ।

सारी सभा स्तब्ध रह गयी । चूण्डा क इस अपूव त्याग तथा धमनिष्ठा का दख लाग चकित हाकर दग रह थ माना उन्ह विश्वास ही न हो रहा हा ।

राणा लाखा न करुण स्वर म कहा "यह अभी अबोध बालक है। मवाड क शासन का भार यह कस सम्भाल सकगा ?

"राणा मुकुलजी की सवा म मैं जा ह ! चूण्डाजी बाल, 'राजकाज सुचारु रूप स चलता रहगा यह जिम्मेदारी पूरी तरह मरी ह आप इसकी लश मात्र चिन्ता न करें। राणा मुकुलजी क वय प्राप्त हान पर मैं इस मवाड़ राज्य स अलग हा जाऊँगा । राणा मुकुलजी मवाड क गौरव हाग।

महाराज, मुकलजी को राजतिलक करके अपने वचन की और मेरे वचन की रक्षा कीजिए।"

राणा लाखा की आँखों मे आँसू आ गये, "चूण्डा जू, तुम्हारे जैसा चरित्रवान, धर्मनिष्ठ, वीर, धीर और गम्भीर पुत्र पाकर मैं धन्य हू। तुम्हारे भाइयो के इलाके मै निर्धारित किये देता हू। मुकलजी को गद्दी पर बैठाकर और उसे तुम्हारे सरक्षण मे सौंपकर मैं निश्चिन्त और आश्वस्त हो गया हू। अब मै सकल्प और दृढता के साथ गया के युद्ध अभियान पर जा रहा हू। वहा से मैं अब मेवाड वापस नही लौटूगा। सेना को मेवाड वापस भेजकर मैं लम्बी तीर्थयात्रा पर निकल जाऊँगा—अगर जीवित रहा, नही तो धर्म के लिए वीरगति प्राप्त करके स्वर्ग की यात्रा करूँगा।' और आचार्य त्रिलोचन की ओर घूमकर उन्होने कहा, "आचार्य! अगले सप्ताह किसी शुभ मुहूर्त मे मुकुल जी का राजतिलक हो जाये। प्रात काल मुकुलजी का राजतिलक करके सन्ध्या के समय ससैन्य गया की यात्रा पर निकल पडूगा। और चूण्डा जू, तुम मेवाड के सर्वप्रथम सामन्त रहोगे। कौन सा इलाका तुम्हारे लिए तथा कौन सा तुम्हारे छोटे भाई रघुदेव के लिए निर्धारित किया जाये?"

'इलाका महाराज, रघुदेव के लिए निर्धारित कर दें। जहा तक मेरा प्रश्न है, मेरे भुजदण्डो मे बल है। मैं स्वय मेवाड से सुदूर भूमि को विजय करके अपने लिए इलाका प्राप्त कर लूगा।'

सारी सभा हर्ष ध्वनि कर उठी।

"जैसी तुम्हारी इच्छा! तुम समर्थ हो, धर्मवान हो। इतिहास मे तुम्हारा नाम अमर रहेगा। लेकिन मैं आदेश देता हूँ कि मेवाड के राजपत्रो पर मेवाड के राजचिह्नो के साथ तुम्हारा निजी राजचिह्न अकित होगा।'

यह कहकर राणा लाखा उठ खडे हुए।

एक सप्ताह के अन्दर ही गया के लिए युद्ध यात्रा की तयारियां पूरी हो गयीं।

मेवाड़ की पांच हजार राजपूतों की सेना—पैदल, घुड़सवार चित्तौड़ में एकत्रित हो गये। रसद, मेवे आदि न जाने कितना सामान ऊँटों पर लदा हुआ। और मुकुलजी के राज्याभिषेक एवं राणा लाखा के ससैन्य प्रस्थान की एक ही तिथि रखी गयी। मेवाड़ के समस्त सामंतगण आमन्त्रित थे मुकुलजी के राज्याभिषेक में भाग लेने के लिए। उन सामंतों में अनेक तो राणा लाखा के साथ युद्ध-यात्रा में जाने का आग्रह कर रहे थे। प्रातःकाल राज्याभिषेक का मुहूर्त था।

प्रातःकाल जब दरबार में सब सामन्तगण राज्याभिषेक के अवसर पर एकत्रित हुए, राणा लाखा ने युद्ध-यात्रा में सम्मिलित होने का आग्रह करनेवाले सामंतों को अपने साथ चलने का निषेध करते हुए कहा कि मुकुलजी अभी शिशु है और जब तक दिल्ली का शासन मुसलमान बादशाहों के हाथ में है तब तक राजस्थान की भूमि निरापद और सुरक्षित नहीं है। मेवाड़ राज्य और राणा मुकुलजी की रक्षा करने के लिए सामंतों का मेवाड़ में रहना ही उचित होगा।

सामंतों में एक तरह का विक्षोभ भी था कि मेवाड़ का राज्य चूण्डा जी को न मिलकर मुकुलजी को क्यों मिल रहा है। इसका उत्तर देते हुए स्वयं युवराज चूण्डाजी ने कहा, "इसमें मेवाड़ के महाराणा का कोई दोष नहीं है। मैंने अपने पिता के साथ मारवाड़ की राजकुमारी के विवाह के अवसर पर यह वचन दिया था कि मारवाड़ की राजकुमारी से जो सन्तान होगी, मेवाड़ के राज्य का अधिकारी वही होगा। महाराज तो मेवाड़ का अधिपति मुझे बनाना चाहते थे लेकिन मैंने महाराणा का अपने वचन की रक्षा करने का आग्रह करके स्वयं मेवाड़ नरेश का पद स्वीकार नहीं किया। मैंने प्राणपन से राणा मुकुलजी की सेवा करने का व्रत ले लिया है। आप लोग शान्त हो जायें।

राणा लाखा ने अपने अधिकार का प्रयोग करते हुए कनवाड़ा का

गया की ओर चल पडी । राणा लाखा और उनकी सेना को विदा करके युवराज चूण्डा अपने अंगरक्षकों के साथ चित्तौड की ओर लौट पडे ।

प्रातःकाल चूण्डाजी ने चित्तौड में प्रवेश किया, चित्तौड नगरी श्रीविहीन सी पडी थी । चित्तौड लौटकर प्रथम काम जो चूण्डा ने किया वह था राजमाता गुणवती को अपने वापस लौटने की सूचना देना । राजमाता गुणवती ने तत्काल चूण्डाजी को अपने महल में बुलाया । राजमाता गुणवती राणा मुकुलजी के साथ थी । चूण्डाजी ने बालक राणा मुकुलजी को हसते हुए औपचारिक अभिवादन किया और फिर गुणवती के चरण छुए ।

राजमाता गुणवती के साथ एक व्यक्ति और था—मँझोले कद का, स्थूलकाय अवस्था प्रायः पचास वर्ष की । यज्ञोपवीत धारण किए हुए मस्तक पर तिलक पीताम्बर ओढे हुए । रानी गुणवती ने कहा, "कुंवर जी यह आचार्य सुधाकर है । मन्दौर से आये है । वहां के राजपुरोहित आचार्य गुणाकर के ज्येष्ठ भाई है । काशी में आचार्य थे । पिताजी ने राणा मुकुल के राज्याभिषेक का समाचार प्राप्त करके अपने उपहारों के साथ इन्हें भेजा है । ये कल ही सायंकाल यहां पहुंचे है ।"

कुंवर चूण्डाजी ने सुधाकर को देखा, 'बडी जल्दी आप यहाँ पहुंच गये ! राणा मुकुलजी का राज्याभिषेक तो परसों प्रातःकाल हुआ है ।'

महारानी ने अपने पिताजी को राणाजी के राज्याभिषेक के निर्णय की सूचना एक सप्ताह पहले विशेष धावक द्वारा मन्दौर भिजवा दी थी । चार दिन पहले रावजी को सूचना मिली थी । इतने कम समय में उनका आना तो सम्भव नहीं था । तो, उन्होंने उपहारों के साथ मुझे भेज दिया आशीर्वाद देने ।

कुछ कमजोर आवाज में रानी गुणवती ने पूछा "कुंवरजू, मैंने कोई अनुचित काम तो नहीं कर डाला पिताजी को सूचना दिलाकर ? सूचना तो मैंने राणा जू के मेवाड से गया की ओर युद्ध यात्रा की दिलवायी थी । राज्याभिषेक का दिन भी मैंने करवा दिया था ।

चूण्डा मुस्कराये 'नहीं, आपने उचित ही किया । अति व्यस्तता में मुझे ध्यान ही नहीं रहा कि राव रणमल जी को मैं सूचना भिजवा देता ।'

वापी के लिए चल दूं। मेरे शिष्यगण वहां मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। तुम्हारे पिताजी जब यहां आयें तब उन्हें परिस्थिति समझा देना, मैं उन्हें वचन दे आया था।'

राजमाता ने उलझन के स्वर में कहा, 'इतनी जल्दी क्या है! आप पिताजी के आने तक मेरे अतिथि होकर यहां रहें।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी! हमारा परिवार तो मारवाड़ के राजपूत का सेवक है, राव्जी की आज्ञा ही हमारे लिए सर्वप्रथम है। लेकिन मुझे कुंवर चण्डा से भय लगता है। उनका व्यक्तित्व बड़ा सबल है।"

राजमाता गुणवती मुस्करायी, 'फूल-सा कोमल है कुंवर जू का मन! मेवाड़ की राजगद्दी उन्होंने अपनी इच्छा से राणाजी के आग्रह के खिलाफ मुकुलजी को सौंप दी है। कुंवर जू अपनी बात के धनी हैं। दुनिया के लिए वज्र की तरह कठोर हैं आप निश्चिन्त रहें उनसे किसी भी भले आदमी को डरना नहीं है। केवल राजकार्य में आप सम्मिलित न हों। अब आप जाइए— सन्ध्या समय के दरबार की व्यवस्था में मुझे भी कुछ न कुछ योगदान देना होगा।'

सन्ध्या के समय मेवाड़ के राणा मुकुलजी का प्रथम दरबार हुआ। कुंवर चण्डाजी ने केवल दो पहर विश्राम करके दिन में दरबार की व्यवस्था कर दी। चित्तौड़ में उपस्थित समस्त सामंतगण को एवं राज-कर्मचारियों को खबर करवा दी गयी। निर्धारित समय में प्रायः आधे घण्टा पहले से लोग एकत्रित होने लगे थे।

कुंवर चूण्डाजी ने पाँच वर्ष से कुछ ऊपर की आयुवाले महाराणा मकुलजी को गोद में बिठलाकर राजगद्दी पर अपना आसन ग्रहण किया। मेवाड़ राज्य की मन्त्री परिषद सिंहासन के बायीं ओर बैठा था। दाहिनी ओर सामन्तगण थे। आसन के पीछे परदे में राजमाता अपनी दासियों के साथ बैठी थी। दरबार का काम प्रारम्भ हुआ—आचार्य सिंहासन के मन्त्रोच्चार के साथ। फिर चारणों ने विरद-गान प्रारम्भ किया।

इस अपरिचित भीड़ को देखकर पाँच वर्ष का अबोध बालक मुकुलजी घबरा-सा गया। दस पाँच मिनट तो वह बड़ी हिम्मत करके सबकुछ देखता-सुनता रहा। इसके बाद वह चूण्डाजी की गोद से उतरकर पीछे

अपनी धाय और माता के पास जाने के लिए हाथ पैर पटकने लगा। चण्डा जी के रोकने पर उसने रोना आरम्भ कर दिया। अब स्थिति चूण्डाजी के हाथ से बाहर हो गयी। उन्होंने आचार्य त्रिलोचन की तरफ प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। आचार्य त्रिलोचन ने स्थिति पर कुछ सोचकर कहा, "मैं व्यवस्था देता हूं कि मुकुलजी की धाय राणाजी को गोद में लेकर सिंहासन पर बैठें, कुंवर चूण्डाजी राजसिंहासन की बगल में दक्षिण की ओर अपना सिंहासन ग्रहण करें।'

कुंवर चण्डा ने इस व्यवस्था को उचित न समझते हुए सुझाव दिया, "मैं समझता हूं कि धाय के स्थान पर स्वयं राजमाताजी का सिंहासन पर बैठना उचित होगा। और उन्होंने राजसिंहासन से उतरकर परदे के भीतर बैठी राजमाता गुणवती से निवेदन किया "माताजी मेरी और समस्त सामन्तों की विनय है कि आप परदा छोड़कर बाहर आयें और राणाजी को अपनी गोद में लेकर सिंहासन पर बैठें।'

कुछ सकुचित सी कुछ पुलकित सी राजमाता परदे से बाहर आयी और मुकुलजी को गोद में लेकर सिंहासन पर बैठ गयी। अपनी माता की गोद में बैठकर राणा मुकुलजी शान्त हो गये और कुंवर चूण्डाजी दाहिनी ओर बैठ गये।

दरबार औपचारिक ही था। करीब एक प्रहर तक चलता रहा। दरबार समाप्त होने पर जब सब लोग चले गये, तब गुणवती ने चूण्डाजी से एकान्त पाकर कहा, "कुंवर जी, तुम मनुष्य नहीं देवता हो। मेरे पुत्र के समस्त हित तुम्हारे हाथ में सुरक्षित हैं।

चण्डा ने गुणवती के चरण छुए 'आप मेरी माता हैं विमाता ही सही। राजकुल के विधान के अनुसार मेवाड़ के शासन की जिम्मेदारी तब तक आप पर होनी चाहिए थी जब तक राणा मुकुलजी वयस्क न हो जायें। लेकिन पिताजी की आज्ञा मुझे स्वीकार करनी पड़ी। एक वचन मैंने पिताजी को दिया था, वह मैंने पूरा किया। दूसरा वचन मैं आपको देता हूं—जब कभी भविष्य में आपको राणा मुकुलजी के प्रति मेरे वक्तव्य और दायित्व पर शंका हो, या आप मुझे इस पद के लिए अयोग्य समझें तब आपके आदेश पर मैं अपना दायित्व आप पर सौंप दूंगा। आप

नि सकोच अपनी इच्छा मुझ पर प्रकट कर दीजिएगा।"

राजमाता गुणवती कुछ देर तक अपलक दृष्टि से चण्डा को देखती रही और एकाएक वह चूण्डाजी के पैरो पर झुक गयी। भराय हुए गले म उसने कहा कुवरजी मैं बडी अभागी हू—बडी अभागी हूँ।" और जैसे अपने से ही डरकर वह तेजी से चली गयी। कुवर चूण्डा मौन भाव से कुछ देर तक वहाँ खडे रहे, फिर आकाश की ओर हाथ उठाकर उन्होने कहा भगवान तुम्हारी लीला विचित्र है।'

पांचवां परिच्छेद

भारतवर्ष का वह भूखण्ड जिसे राजस्थान कहते हैं—दो भागो म विभाजित किया जा सकता है। मारवाड और मेवाड। अरावली की पर्वत-मालाओ के उत्तरवाला भाग मुख्यत मरुप्रदेश है और यह भाग मारवाड कहलाता है। अरावली के दक्षिणवाला भाग छोटे-छोटे पर्वतो तथा जगलो से भरा हुआ है और यह भाग मेवाड है। राजस्थान के इर्द गिर्द कुछ उपजाऊ प्रदेश है घनी आबादी से युक्त लेकिन राजस्थान दुर्गम प्रदेश है। भारत म युद्धोपरान्त पराजित सेनाए भागकर राजस्थान म ही शरण लेती थीं, आक्रान्ताओ से बचने के लिए। यह क्रम भारत पर मुसलमानो के आक्रमण के बाद का ही है। कुछ इतिहासकारो का यही मत है।

उन दिनो मारवाड पर राठौर राजपूतो का आधिपत्य था। अरावली के दक्षिण का कुछ भाग उपजाऊ था, और बसा हुआ था। पश्चिमी भाग म तो भारत के प्राचीन निवासी भीलो का आधिपत्य था, जिनकी आय सभ्यता से सम्पर्क नगण्य-सा था। यह अरावली के दक्षिणवाला भाग मेवाड कहलाता था और इस भाग पर उन दिनो सिसौदिया वश के राजपूतो का आधिपत्य था।

जहाँ तक मारवाड प्रदेश का सम्बन्ध है उत्तर पश्चिमी प्रदेश पूरा का पूरा मरुप्रदेश था। पूर्वी भाग म अवश्य बीच-बीच म कुछ हरे भरे

भूखण्ड विद्यमान थे, जिनमें लोग बस गये थे। वैसे अधिकांश मारवाड प्रायः सूखा और झुलसा हुआ मरुप्रदेश था, जहाँ वर्षा और जल का अभाव था। और राजस्थान के राजपूतों में प्राकृतिक संकटों से लगातार जूझते रहने के कारण एक अजीब तरह की वीरता उभर आयी थी लेकिन उस वीरता के फलस्वरूप स्वाभिमान और हठ अधिक मुखर था। स्वाभिमान का स्थान दम्भ ने ले लिया था। हठ को पूरा करने के लिए साधना की पवित्रता और औचित्य का परित्याग-सा हो गया था।

हिन्दू धर्म के वैयक्तिक दृष्टिकोण के कारण इन राजपूतों में सामाजिक भावनाएँ कभी जागृत ही नहीं हो पायीं। सहयोग और सद्भावना कुलों और परिवारों में सिमट गये। और वैयक्तिक स्वार्थ एवं हठ के सामने तो कभी-कभी यह कुल और परिवार की मर्यादाएँ भी टूट गयीं।

राठौर और सिसौदिया वंशों की स्थापना कब हुई—यह ठीक तौर से नहीं कहा जा सकता। इतिहास तो स्वयं में काल्पनिक सत्य, अर्ध-सत्य और अतिशयोक्तियों के असत्य का एक बहुत बड़ा संग्रह है। पिता की पुत्र द्वारा हत्या, भाई की भाई द्वारा हत्या, अपने परिवारवालों की हत्या—यह शासन और अधिकार के नशे का इतिहास ही राजकुलों का इतिहास है। वैयक्तिक वीरता के साथ वैयक्तिक चरित्रहीनता—यह राजपूतों के शौर्य के नाम पर अमिट कलंक रहा है।

राव रणमल मारवाड के किस भाग के शासक थे, इसका उल्लेख इतिहास में नहीं मिलता। सम्पूर्ण मारवाड के तो वह शासक नहीं ही थे, क्योंकि समस्त मारवाड को अपने वंश में करके अपने नाम से जोधपुर जैसे शक्तिशाली राज्य की स्थापना का श्रेय राव रणमल के पुत्र जोधा को प्राप्त है। जोधा के आविर्भाव के पहले मारवाड राजस्थान के मरु-प्रदेश का नाम था, जहाँ बीच-बीच में हरित और उर्वरा भूमि के छोटे-छोटे अनेक भाग थे, जहाँ जलाशयों और कुओं में प्रचुरता के साथ जल मिलता था और युद्धों में पराजित राजपूतों के दल भागकर वहाँ बस गये थे। इन राजपूत सरदारों के साथ दास-दासियों के झुण्ड थे, पूजा-पाठ से जीविकोपार्जन करनेवाले ब्राह्मणों के परिवार थे, और इन सारे लोगों की विभिन्न आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए व्यापार करनेवाले वैश्य

भटकता रहा हूँ।"

रणमल ने विस्तार के साथ राणा लाखा की गया की युद्ध-यात्रा पर जाने का समाचार सुनाते हुए कहा "मुकुलजी मेवाड की गद्दी पर बैठ गया है। लेकिन मुकुलजी की अवस्था ही क्या है? राणा लाखा ने गुणवती के स्थान पर चूण्डाजी को मुकुलजी का अभिभावक नियुक्त किया है—मेवाड राज्य की परम्परा के विरुद्ध।

अपनी समस्त थकावट के बावजूद जोधा हँस पड़ा "गद्दी के स्वामी तो चूण्डाजी ही थे, उन्होंने मुकुलजी को गद्दी पर बठाकर महान त्याग किया है। फिर गुणवती स्त्री है, और स्त्री विवेकहीन और हठी होती है। चूण्डाजी के सम्बन्ध में जो कुछ भी जानकारी प्राप्त है उससे तो लगता है कि वह अपनी बात का धनी, वीर, साहसी और चरित्रवान है। केवल एक अवगुण उसमें है—वह महत्त्वाकांक्षी नहीं है।"

तीव्र दृष्टि से जोधा को देखते हुए रणमल ने कहा 'तुम समझते हो कि चूण्डाजी के हाथ मे मेरे नाती का हित सुरक्षित रहेगा?'

अपने पिता की प्रकृति और प्रवृत्ति का जितना ज्ञान जोधा को था, उतना शायद स्वयं उसके पिता को भी नहीं था। दो वर्ष पूर्व जब जोधा की माता का देहान्त हुआ था, रणमल अपनी चौबीस पच्चीस वर्ष की दासी अमिया के साथ खुनेग्राम रहने लगा था। और अमिया के पति की उसने हत्या करा दी थी। अमिया अनिन्द्य सुन्दरी थी और अमिया के साथ रणमल भोग विलास और अकर्मण्यता का जीवन व्यतीत करने लगा था।

जोधा बोला, "आपको मुकुलजी के तथा गुनो (गुणवती) के हितो की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। चूण्डाजी पर आप पूरा विश्वास कीजिए। आप मन लगाकर मन्दौर के शासन को सुदृढ करें। प्रजा की सुख सुविधाओं का ध्यान रखें। मारवाड में अपना एकछत्र राज्य हो जाने पर हम मेवाडवालों से नीचे नहीं रहेंगे।'

एक खीझ भरी मुस्कान के साथ रणमल बोले, 'मारवाड मारवाड! यह मरुप्रदेश कभी भी सम्पन्न और शक्तिशाली नहीं बन सकेगा। तुम प्रयत्न करके देख लो। जहा तक मुकुलजी का प्रश्न है, मैं एक बार मेवाड

जाकर वहां की स्थिति का अध्ययन करना चाहता हूं। फिर, मुकुलजी जन्म के बाद मैं गुणवती से मिला भी नहीं हूं।"

जैसी आपकी इच्छा ! मैं भी युद्ध व यात्राओं से थक गया कुछ काल तक मन्दोर मे रहकर मैं मण्डोर को संगठित करने का प्र करूंगा ! यह कहकर जोधा चला गया, कुछ खिन्न-सा !

तीन चार दिनों में ही रणमल ने चित्तौड़ जाने की व्यवस्था की। रणमल ने अपने साथ पांच मुहलग सरदार तथा पच्चीस रा सैनिक ले लिये थे। ऊंटों पर सवार होकर इस काफिले ने चित्तौड़ लिए प्रस्थान किया। राव रणमल के चलते समय जोधा ने उनसे ज ही मण्डोर वापस लौटने का आग्रह कर दिया अपने पिता की प्रवृ का ध्यान में रखकर।

राव रणमल और उसके साथी आधी रात के समय चित्तौ पहुंचे। गढ़ का फाटक बन्द था। फाटक के बाहर रात में आने वालों के पड़ाव की व्यवस्था थी, क्योंकि वह फाटक सूर्यास्त के सूर्योदय तक नहीं खुलता था। सूर्योदय के समय राव रणमल के आने की सूचना राजमाता गुणवती को भेजी। सूचना पाते ही गुण ने कुंवर चूण्डाजी को बुलाकर कहा 'कुंवर जी मेरे पिता मन्दो चित्तौड़ पधारे हैं और फाटक पर उनका पड़ाव पड़ा है। मैं सम हूं कि मेरे लिए फाटक पर स्वयं जाकर पिताजी का स्वागत करना उ होगा, ताकि वह राजसी सम्मान के साथ गढ़ में प्रवेश करें।

मेरा मत भी यही है जो आपका मत है। लेकिन राजमाता अकेले ही फाटक पर जाना उचित न होगा मैं भी आपके साथ रा की अगवानी के लिए चलता हूं।

गुणवती और चूण्डाजी गढ़ के फाटक पर पहुंचे। तब तक राव र के सब उतरकर चुके थे। गुणवती को अपने हृदय से लगाते हुए र ने उसे आशीर्वाद दिया। फिर वह चूण्डाजी की ओर घूमे कुं के साहस और त्याग की कहानियां मण्डोर तक पहुंच चुकी हैं। पि और राणा मुकुलजी के जन्मोत्सव पर कुंवर को निमन्त्रण न जाने अवसर भी नहीं मिला था। हां जोधा ने चूण्डाजी की अपनी गु

लिया था। जोधाजी मन्दौर के इर्द गिर्द मारवाड़ के राज्य की स्थापना करने में प्राणपन से व्यस्त हैं। नहीं तो वह भी मेरे साथ आते।

कुछ औपचारिक भाव से चण्डाजी ने उत्तर दिया, "जैतों पर विजय प्राप्त करके उस मन्दौर राज्य में सम्मिलित करने में उनकी सफलता का समाचार मैंने भी सुना है। वह योग्य और कुशल व्यक्ति है। जीवन में वह सफल होंगे।'

उत्साह में भरकर राव रणमल बोले, 'जोधाजी अगर मारवाड़ को संगठित कर लें तो दिल्ली के पश्चिम में मारवाड़ और मेवाड़ दो सशक्त राज्य हो जायेंगे, जिनका मुकाबला दिल्ली के मुसलमान बादशाह न कर सकेंगे।"

चूण्डाजी ने केवल इतना कहा दुर्भाग्यवश हम हिन्दुओं में, विशेष रूप से हम क्षत्रियों में, घोर व्यक्तिवाद है। कहीं एकता नहीं है। आप अभी लम्बी यात्रा से थके हुए हैं चलकर विश्राम कीजिए। आपसे विस्तार के साथ परामर्श करने का अवसर तो मिलता ही रहेगा। चित्तौड़ में कितने दिन निवास का कार्यक्रम है?'

"प्रायः एक मास, या अधिक से अधिक दो मास, फिर न जाने कब अपनी बेटी और नाती से मिलना हो।

उसी समय राजमाता गुणवती चण्डाजी की ओर घूमी पिताजी के रहने की व्यवस्था क्या होगी?'

चण्डाजी ने मारवाड़ से आये हुए काफिले को देखा, 'राणाजी के नाना तो राजमहल के बहिर्कक्ष में रहेंगे मारवाड़ के सरदारों के ठहरने की व्यवस्था उस बहिर्कक्ष के समीप ही स्थित अतिथि भवन में हो जायगी, और मारवाड़ के सैनिक मेवाड़ के सैनिक-शिविर में ठहरा दिये जायेंगे।

'मेरे सरदारों को राजभवन के बहिर्कक्ष में मुझसे मिलने में तथा रात में मेरे तक मेरे साथ ठहरने में कोई बाधा तो नहीं होगी?' रणमल ने पूछा।

'निश्चित नहीं, लेकिन राजकुल की मर्यादा और प्रतिष्ठा तो आप जानते ही हैं।" चण्डा का एक संक्षिप्त सा उत्तर था।

जाकर वहा की स्थिति का अध्ययन करना चाहता हू । फिर, मुकुलजी के जन्म के बाद मैं गुणवती से मिला भी नही हू ।"

'जैसी आपकी इच्छा ! मैं भी युद्ध व यात्राओं से थक गया हूँ । कुछ काल तक मन्दौर म रहकर मैं मन्दौर को संगठित करने का प्रयत्न करूगा ।' यह कहकर जोधा चला गया कुछ खिन्न-सा ।

तीन चार दिनो म ही रणमल ने चित्तौड यात्रा की व्यवस्था कर ली । रणमल न अपने साथ पाच मुहलगे सरदार तथा पच्चीस राठौर सैनिक ले लिये थ । ऊँटो पर सवार होकर इस काफिले ने चित्तौड के लिए प्रस्थान किया । राव रणमल के चलते समय जोधा ने उनसे जल्दी ही मन्दार वापस लौटने का आग्रह कर दिया अपने पिता की प्रवत्तियो को ध्यान म रखकर ।

राव रणमल और उसके साथी आधी रात के समय चित्तौड पहुचे । गढ का फाटक बन्द था । फाटक के बाहर रात म आनेवाले लोगो क पडाव की व्यवस्था थी क्योकि वह फाटक सूर्यास्त के बाद सूर्योदय तक नही खुलता था । सूर्योदय के समय राव रणमल ने अपने आने की सूचना राजमाता गुणवती को भेजी। सूचना पाते ही गुणवती न कुवर चूण्डाजी को बुलाकर कहा कुवर जी मेरे पिता मन्दार से चित्तौड पधारे है और फाटक पर उनका पडाव पडा है । मैं समझती हू कि मेरे लिए फाटक पर स्वय जाकर पिताजी का स्वागत करना उचित होगा ताकि वह राजसी सम्मान के साथ गढ मे प्रवेश करें ।'

मेरा मत भी यही है जो आपका मत है । लेकिन राजमाता का अकेले ही फाटक पर जाना उचित न होगा म भी आपके साथ रावजी की अगवानी के लिए चलता हू ।'

गुणवती और चण्डाजी गढ के फाटक पर पहुचे। तब तक राव रणमल के खेमे उखड चुके थ । गुणवती को अपने हृदय से लगाते हुए रणमल न उसे आशीर्वाद दिया । फिर वह चूण्डाजी की ओर घूमे 'कुवरजी के साहस और त्याग की कहानिया मन्दौर तक पहुच चुकी ह । पिछली बार राणा मुकुलजी के जन्मोत्सव पर कुवरजी को निकट से जानने का अवसर ही नहीं मिला था । हाँ जोधा ने कुँवरजी की अपना गुरु मान

लिया था। जोधाजी मन्दौर के इर्द-गिर्द मारवाड़ के राज्य की स्थापना करने में प्राणपन से व्यस्त हैं। नहीं तो वह भी मेरे साथ आते।

कुछ आपचारिक भाव से चण्डाजी ने उत्तर दिया "जती पर विजय प्राप्त करके उसे मन्दौर राज्य में सम्मिलित करने में उनकी सफलता का समाचार मैंने भी सुना है। वह योग्य और कुशल व्यक्ति है। जीवन में वह सफल होगा।'

उत्साह में भरकर राव रणमल बोले 'जोधाजी अगर मारवाड़ को संगठित कर लें तो दिल्ली के पश्चिम में मारवाड़ और मेवाड़ दो सशक्त राज्य हो जायेंगे, जिनका मुकाबला दिल्ली के मुसलमान बादशाह न कर सकेंगे।'

चूण्डाजी ने केवल इतना कहा, 'दुर्भाग्यवश हम हिन्दुओं में, विशेष रूप से हम क्षत्रियों में, घोर व्यक्तिवाद है। वही एकता नहीं है। आप अभी लम्बी यात्रा से थके हुए हैं, चलकर विश्राम कीजिए। आपसे विस्तार के साथ परामर्श करने का अवसर तो मिलता ही रहेगा। चित्तौड़ में कितने दिन निवास का कार्यक्रम है?'

"प्रायः एक मास या अधिक से अधिक दो मास, फिर न जाने कब अपनी बेटी और नाती से मिलना हो।'

उसी समय राजमाता गुणवती चण्डाजी की ओर घूमी, "पिताजी के रहने की व्यवस्था क्या होगी?'

चण्डाजी ने मारवाड़ से आये हुए व्यक्तियों को देखा, राणाजी के नाना तो राजमहल के बहिर्कक्ष में रहेंगे मारवाड़ के सरदारों के ठहरने की व्यवस्था उस बहिर्कक्ष के समीप ही स्थित अतिथि-भवन में हो जायगी, और मारवाड़ के सैनिक मेवाड़ के सैनिक-शिविर में ठहरा दिये जायेंगे।'

"मेरे सरदारों को राजभवन के बहिर्कक्ष में मुझसे मिलने में तथा रात में देर तक मेरे साथ ठहरने में कोई बाधा तो नहीं होगी?' रणमल ने पूछा।

निश्चित नहीं, लेकिन राजकुलों की मर्यादा और प्रतिष्ठा तो आप जानते ही हैं।" चण्डा का एक संक्षिप्त सा उत्तर था।

की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

जम्हाई लेते हुए रणमल ने कहा, "गोण्डा पर भरोसा नहीं किया जा सकता। आर्यावर्त के क्षत्रियों की सहायता अधिक श्रेयस्कर होगी।"

चूण्डा के माथे पर बल पड़ गये, "आर्यावर्त के क्षत्रिय नरेश! अगर वह एकता में बँध सकते तो भारतवर्ष में मुसलमानों का प्रवेश ही न हो पाता। हमारे चरित्रों में घुन लग गया है। धर्म, समाज और देश से कटकर ये क्षत्रिय वैयक्तिक स्वार्थ और मानापमान में डूब गये हैं। चलिए, आपके अमल में दखल हो रहा होगा।"

छठा परिच्छेद

राणा लाखा ने अपनी सेना के साथ गया जाने का संकल्प तो कर लिया था लेकिन एक बड़ी सेना के साथ चित्तौड़ से गया जाने में किन बाधाओं और विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा, इसकी कल्पना उन्होंने पूरी तौर से नहीं की थी। गया चित्तौड़ से लगभग साढ़े तीन सौ कोस की दूरी पर है। चित्तौड़ और गया के बीच यमुना नदी के उत्तरवाला प्रदेश मुसलमान बादशाहों के अधीन था। यमुना के दक्षिण में अनगिनती छोटे-छोटे राज्य थे जो स्वतन्त्र थे। यमुना के उत्तरवाला मार्ग अपनाना गलत होता क्योंकि राजस्थान से प्रस्थान करने के साथ ही युद्ध आरम्भ हो जाता।

यमुना नदी के दक्षिणवाला मार्ग अपनाना उचित समझा गया। लेकिन वह मार्ग बीहड़ और कठिन विन्ध्याचल पर्वतमालाओं के बीच से जाता था। रास्ते में बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड के असम्पन्न अनेक छोटे छोटे राज्य—अन्नाभाव, जलाभाव से ग्रस्त! लेकिन सबकुछ होते हुए भी यही मार्ग राणा लाखा और उनकी सेना के लिए निरापद और सुगम था।

मेवाड़ की सेना और राणा लाखा का हरेक क्षत्रिय राजा ने स्वागत

किया, उस सेना की रसद आदि म भी भरसक सहायता की लेकिन राणा लाखा को सैनिक सहायता देने मे सबो ने इनकार कर दिया। हरक राज्य को अपने पडोसी राजा से स्पधा थी, और इसलिए भय भी था। धम रक्षा स पहले अपनी रक्षा का भी प्रश्न आ जाता है। वसे धम-रक्षा के नाम पर व्यक्तिगत रूप से कुछ क्षत्रियो न राणा लाखा की सेना म भर्ती होकर अपना सहयोग अवश्य दिया। जब राणा लाखा की सेना काशी के दक्षिण तट पर पहुची, उसकी सख्या दस हजार स अधिक हो गयी थी।

मेवाड की सेना क काशी पहुच जाने का समाचार जब दिल्ली के बादशाह को मिला उसन तत्काल वहा स पटना के सूबेदार को आदेश दिया कि समस्त शाही सेना गया की ओर प्रस्थान करे। जौनपुर से और स्वय दिल्ली से और अधिक सेना भेजी जा रही है।

तीथ स्थान गया पर युद्ध के बादल उमड रहे थ। भय, आशका उत्साह, आशा और निराशा! पूरी तैयारी के साथ राणा लाखा न गया पर आक्रमण कर दिया। पटना और जौनपुर की मिश्रित सेना लगभग दस हजार थी, लेकिन उस सेना को जनता का सहयोग प्राप्त नही था। दिन भर युद्ध होता रहा और शाही सेना के पैर उखड गय। वह पटना और जौनपुर की ओर भाग खडी हुई। गया पर फिर स हिन्दुओ का अधिकार हो गया। राणा लाखा और उनके सेनानायको न यह आवश्यक नही समझा कि पराजित बादशाही सेना का पीछा करके उस नष्ट कर दिया जाये। उनका ध्यय तो गया को मुसलमानो स मुक्त कराना था। इस विजय के बाद कुछ समय के लिए सनिक आमोद प्रमोद म डूब गये। राणा लाखा ने गया म आने का ध्यय प्राप्त कर लिया था। वहा क पण्डो के हाथ मे गया का शासन सूत्र फिर स सौपकर तथा आस-पास स रक्षित करके प्राय पाच हजार सैनिको को गया की रक्षा का भार सौपकर राणा लाखा वद्यनाथ धाम एव जगन्नाथपुरी की तीथयात्रा का कायक्रम बनान लगे। मेवाड की सेना को मेवाड लौटने की तयारी करने का आदेश दे दिया गया। और एसा लगता था कि गया का वह अभियान सफल हुआ। लेकिन चार दिन बाद ही राणा लाखा को समाचार प्राप्त हुआ कि

दिल्ली से पच्चीस हजार शाही सेना गया के लिए रवाना हो गयी है, तथा जौनपुर और पटना के भागे हुए सैनिकों को एकत्रित करके और पुन सगठित करके प्राय चालीस हजार सना गया पर आक्रमण करने आ रही है।

गया क पण्डे तत्काल निकल पड । उत्तर और पूव स भूमिहारा आर यादवा की सेना को युद्ध करने के लिए आमन्त्रित किया गया। एक अच्छी सख्या म गया के दक्षिण से आदिवासिया की सना की भी भर्ती की गयी। मवाड की सेना की उपस्थिति मे हिन्दुआ म धम के नाम पर सगठित होने के उत्साहस्वरूप राणा लाखा की सना अब पाँच हजार से बढ़कर पचास हजार हो गयी।

गया के उस महत्त्वपूण युद्ध का वणन इतिहास मे नही मिलता। मध्ययुग म इतिहास लिखने की परम्परा तो मुसलमाना मे ही थी। हिन्दू धमावलम्बिया ने इतिहास की रचना पुराणा के रूप मे की है जहा कल्पना जनित अतिशयोक्तिया का प्रमुखता मिली है। और मुसलमान इतिहासकार गया के उस धार्मिक युद्ध पर मौन ही रह। वह युद्ध पश्चिमी एशिया म क्रूसेड नाम स बारहवी शती के बाद जो युद्ध लडे गये उनसे कम महत्त्वपूण नही था। हिन्दुआ म धम के नाम पर एक नयी भावना एक नया जोश! मवाड की अध्यक्षता म विधर्मिया का उन्मूलन करने का स्वप्न!

शाही सना न आक्रमण किया बिना राणा लाखा की शक्ति का अन्दाजा लगाए हुए, और युद्ध आरम्भ हुआ।

राणा लाखा हाथी पर सवार थ, आर उनके हाथी पर केसरिया ध्वज फहरा रहा था। राणा लाखा के साथ आयी हुई मेवाड की सना बीच म थी। दाहिनी ओर भूमिहारा की सना थी, बायी ओर यादवा की सना थी। क्षत्रिया की सेना के पीछे धनुष बाण स युक्त आदिवासिया की सेना थी। य भूमिहार यादव, आदिवासी—यह सब एक बार फिर मिलकर जन हिन्दू धम का एक नया रूप दन आये हो। लकिन इन लोगा म समता और एकता का भाव दिख ही नही रहा था।

वह युद्ध मूर्ति-पूजका और मूर्तिभजका के बीच युद्ध था। लकिन

ब्राह्मणों द्वारा स्थापित जाति-भेद में बँधा हुआ यह हिन्दू धर्म—सदियों से इस धर्म को माननेवाले हिन्दू छोटे-छोटे झुण्डों में विभाजित हो चुके थे। इस युद्ध में भी उस वर्णभेद के दर्शन हो रहे थे। अलग अलग वर्गों के लोगों की अलग-अलग सेनाएँ, एक-दूसरे से सहयोग का नितान्त अभाव!

पहले दिनवाला युद्ध अनिर्णीत रहा। शाही सेना की कुमुक आती जा रही थी, वह सँभलकर युद्ध कर रही थी। दूसरे दिनवाले युद्ध में राणा लाखा ने अपनी सेना का व्यूह बदला। इस बार यादवों की सेना बीच में थी। दाहिनी ओर भूमिहारों की सेना थी और बायीं ओर आदिवासियों की सेना थी। आदिवासियों की सेना के पीछे राणा लाखा की मेवाड़ी सेना थी। बीच-बीच में यादव सेना के पीछे बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड के क्षत्रियों की सेना थी, भूमिहारों की सेना के पीछे युद्धकला में पारंगत ब्राह्मणों की सेना थी।

शाही सेना ने आदिवासियों की सेना को हिन्दू सेना का सबसे कमजोर भाग समझकर पूरे वेग के साथ उस पर अपना मुख्य प्रहार किया।

आदिवासियों की सेना के पास केवल तीर-कमान थे, तलवारों तथा भालों के युद्ध से अपरिचित थे वे लोग। करीब आधा घण्टे तक तो आदिवासी बड़ी वीरता के साथ युद्ध करते रहे, इसके बाद जब तीर समाप्त होने लगे तो आदिवासियों की सेना के पैर उखड़ गये और वह तितर बितर होने लगी। तभी राणा लाखा ने अपनी मुख्य सेना के साथ आगे बढ़कर शाही सेना पर आक्रमण कर दिया। शाही सेना के लिए यह अप्रत्याशित आक्रमण बहुत महँगा पड़ा। वह पीछे हटने लगी। मेवाड़ की सेना का युद्धघोष हवा में लहरा रहा था। शाही सेना के इस पराभव से आदिवासियों की सेना में एक नया जोश जागा और आदिवासी फिर घूमकर शाही सेना पर जोश के साथ बाण-वर्षा करने लगे। शाही सेना के पैर उखड़ गये और वह भाग खड़ी हुई। इस बार राणा लाखा ने अपनी सेना को शाही सेना का पीछा करने का आदेश दे दिया।

इस बाण वर्षा में किसी अनाड़ी आदिवासी का निशाना चूक गया और उसका तीर हाथी पर सवार राणा लाखा की ग्रीवा में धँस गया,

और राणा लाखा का वृद्ध शरीर हाथी पर लुढक गया।

एकाएक काल में भरे हुए मेवाड़ के सैनिक शाही सेना का पीछा करना छोड़कर आदिवासियों की सेना पर टूट पड़े। देखते देखते आदिवासियों की सेना का सफाया हो गया। कुछ भूमिहार, यादव और क्षत्रिय सरदारों ने मेवाड़ के सैनिकों को घेरा और स्थिति यह आ गयी कि अब आपस में ही युद्ध हो जाय। लेकिन गया के पण्डितों के प्रयत्न से यह आपसी युद्ध रुक गया।

उस युद्ध में विजय तो हिन्दू सेना की हुई, शाही सेना के आधे से अधिक सैनिक मारे गये लेकिन मेवाड़ के भी आधे से अधिक सैनिक काम आ गये। दूसरे दिन समस्त सैनिकों की उपस्थिति में राणा लाखा का दाहसंस्कार हुआ।

धर्म की रक्षा करने में राणा लाखा का देहान्त हुआ, और वह भी पितरों की भूमि गया में। निश्चय ही उन्हें स्वर्ग मिलेगा। पण्डों ने यह व्यवस्था दे दी, और मेवाड़ के बचे-खुचे सैनिकों एवं सामन्तों को इससे सन्तोष था। लेकिन मेवाड़ के सैनिकों की जन क्षति का प्रभाव स्वयं मेवाड़ पर क्या प्रभाव पड़ेगा, इसका बोध उन्हें नहीं था। राणा लाखा की मृत्यु का समाचार हरकारा द्वारा मेवाड़ भिजवाया गया।

तेरह दिन तक राणा लाखा की मृत्यु का संस्कार गया में चलता रहा और चौदहवें दिन मेवाड़ के बचे-खुचे एक हजार सैनिकों और सरदारों ने मेवाड़ की यात्रा आरम्भ कर दी। इनमें अधिकांश घायल अपाहिज लोग थे। इनके साथ बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड के क्षत्रिय भी थे।

राणा लाखा की मृत्यु का समाचार एक पखवारे के बाद ही चित्तौड़ पहुंच पाया। और उस समाचार से शोक की एक लहर ने चित्तौड़-वासियों को ही नहीं, समस्त मेवाड़वासियों को ढक लिया। कुंवर चूण्डाजी ने राणा की मृत्यु की खबर राजमाता गुणवती को दी, और यह खबर पाकर गुणवती बेहोश हो गयी।

उसी दिन शाम के समय मेवाड़ के पुरोहितों, प्रमुख सामन्तों एवं मेवाड़ के राजकुल के व्यक्तियों की एक विशिष्ट सभा बुलायी गयी।

राणा लाखा सन्यास की दीक्षा लेकर मेवाड से चले थे, ऐसी हालत म हिंदू धम की परम्परा के अनुसार एक सासारिक प्राणी का अन्त उसी दिन हो गया था, जिस दिन वह चित्तौड से बाहर निकले थे। लेकिन राजपूता की परम्परा के अनुसार उनकी पत्नी को उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर सती होना चाहिए।

स्वय रानी गुणवती सती होने का आग्रह कर रही थी, भावना के वेग मे। कुछ पण्डितो और सामन्ता का समथन उन्ह प्राप्त था। कुवर चूण्डाजी बेतरह चिन्तित थे। राणा मुकुलजी की देखभाल राजमाता गुणवती तो ठीक तरह से कर सकती थी, उनके बाद किसी भी स्त्री, यानी स्वय अपनी पत्नी पर भी कवर चूण्डाजी का विश्वास नहीं था। रहा राणा मुकुलजी की धाय का प्रश्न, सो वह तो केवल धाय थी, राज कुल के क्षत्रियो से मुकाबला करने मे वह असमथ थी। सब लोगो की बातें सुनकर जैसे कुवर चूण्डाजी की चेतना जाग गयी उठकर उन्होने राजमाता गुणवती के चरण छूए, "माताजी, मेवाड के राजकुला की परम्परा के अनुसार आप विधवा हुई, और विधवा के सती होने की परम्परा भी राजकुला म है। लेकिन राजपूता की परम्परा मे राजमाता के सती होने का कोई विधान नही है और जब धम के विधान के अनु सार पिताजी ने सन्यास धारण कर लिया था, तब तो आपका सती होना धम के विधान के भी विरुद्ध है। आप राणा मुकुलजी की अभिभाविका है—मैं तो आपके प्रस्ताव का समथन किसी भी हालत म नहीं कर सकता।'

आचाय त्रिलोचन ने कुँवर चूण्डाजी के मत का समथन किया। उसी दिन से तरह दिना तक राणा लाखा की मत्यु पर समस्त मवाड मे शोक पव मनाने की घोषणा कर दी गयी। सन्यासी का पिण्डदान नही होना, यह स्वीकार कर लिया गया।

राणा लाखा की विजय एव उनकी मत्यु से राव रणमल पर कोई विशेष प्रतिक्रिया नही हुई। हाँ, मवाड मे जो कुछ हुआ, उसकी अच्छी प्रतिक्रिया रणमल पर नहीं हुई। गुणवती पर कुवर चूण्डाजी का अत्य धिक प्रभाव जमता जा रहा था, यह उनके हित म नहीं था। उनके

मन में मेवाड राज्य को अपने प्रभाव मे लेने की जो कामना थी, वह नष्ट होती जा रही थी।

इस शोक पव म राव रणमल की विलामिता और उनके आमोद-प्रमाद की जो प्रवत्ति थी, वह वैसी की वैसी कायम रही। उनका सारा कायक्रम राजभवन के बहिकक्ष मे न होकर उनके सामन्त बीजा की अतिथिशाला के कक्ष म चोरी छिपे चलता रहा। लेकिन रणमल की समस्त गतिविधियो का पता कुवर चूण्डाजी को उनके गुप्तचरा द्वारा मिलता रहा था। राव रणमल के प्रति चूण्डा के मन मे एक तरह की घणामिश्रित वितष्णा का भाव पैदा हो गया। इस बीच रणमल ने छिपे छिपे अपनी रखल गाली को चित्तौड बुलवा लिया था, जो बीजा के कक्ष म रहने लगी थी। चूण्डा के मन म यह भी हुआ कि वह राजमाता गुणवती से उनके पिता की हरकतें बता दें, लकिन वह यह करके गुणवती का जी नही दुखाना चाहते थे जो राणा लाखा की मृत्यु के समाचार से पागल सी हो गयी थी। सहृदयता और कल्याण की भावनाओ से युक्त कुवर चूण्डाजी अपन कतव्य म चूक गये थे।

शोक पव समाप्त हो गया। अब रणमल ने गुणवती से कहकर गाली रखल को राजभवन के बहिकक्ष मे अपनी निजी दासी के रूप म प्रविष्ट कर लिया। गुणवती का अपन पिता के चरित्र का कुछ परिचय था, इसलिए उ हान कोई आपत्ति नही की।

शोक पव समाप्त होन के एक सप्ताह के बाद एक दिन गुणवती ने चूण्डा को बुलाकर कहा "कुवरजी मै पुष्कर तीथ जाना चाहती हू, दिवगत राणाजी की अस्थिया को विसर्जित करने। मेरी अनुपस्थिति म राणाजी की देखभाल की समस्त जिम्मेदारी उनकी धाय मानवती पर रहेगी।'

जैसी राजमाता की मर्जी। वैसे में समझता हू कि अस्थि विसजन का काम दिवगत राणाजी के पुत्रो पर छोडा जाना चाहिए। राणा मुकुल जी अभी अबोध है, लेकिन म तो हू। रघुदव है।'

राजमाता गुणवती हठ पकड गयी "नही! मरे प्राचीन पापा का ही परिणाम है कि म इतने अल्प समय म विधवा हो गयी हू, तो कुवरजी,

मुझे ही यह पुण्यकार्य करना था। फिर धाय मानवती राणाजी के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर सकती है, उसके सम्बन्ध में मैं पूर्ण रूप से आश्वस्त हूं।"

चूण्डाजी मुस्कराये, "जानता हूं माताजी! मानवती रघुदेव की धाय रह चुकी है। मेवाड़ के राजवंश के प्रति उसकी निष्ठा असंदिग्ध है। लेकिन मानवती वृद्धा हो रही है, उसके पुत्र हैं, पौत्र है। जब तक राणाजी वयस्क नहीं हो जाते तब तक आपकी छत्रछाया उन पर रहनी उचित है।"

करुण व्यथा के स्वर में गुणवती बोली, "कुंवरजी, मानवती के लिए एकमात्र राणाजी हैं यह सर्वविदित है। मैं तो औपचारिक रूप से उनकी मां हूं। अब मैं राणाजी की देखभाल का भार आप पर और मानवती पर छोड़कर धर्म कर्म और तीर्थयात्रा में अपना जीवन अर्पित कर देना चाहती हूँ। आपके अनुग्रह पर मैं सती नहीं हुई, लेकिन राजपूतानी का अपने पति के प्रति जो धर्म है, उसे पूर्ण रूप से नहीं तो आंशिक रूप से निभाना चाहती हूं। आप मेरे आग्रह की रक्षा कीजिए कुंवरजी!" और गुणवती का गला भर आया।

चूण्डाजी की आंखों में आंसू आ गये। उन्होंने झुककर राजमाता के चरण छुए "जैसी आपकी मर्जी! आपकी तीर्थयात्रा का प्रबन्ध मैं किये देता हूं। लेकिन पुष्कर से आगे आप न जायें, मेरी यह विनय है और यथासम्भव शीघ्र से शीघ्र वहां से लौटने का प्रबन्ध करें।"

गुणवती खिल उठी, "मैं आपको वचन देती हूं कि तीर्थस्थान में केवल एक सप्ताह रहूँगी, यात्रा में जितना समय लग जाय वह अलग है। आचार्य त्रिलोचन से मेरे साथ चलने को कह दीजिए वह विधिवत समस्त कर्मकाण्ड की व्यवस्था कर देंगे।"

कुछ चिंतित स्वर में कुंवर चूण्डाजी बोले, "आचार्य त्रिलोचन इन दिनों कुछ अस्वस्थ है, आयु से भी तो पचहत्तर वर्ष के हो गये हैं।"

"काशी के आचार्य सुधाकर अभी तक पिताजी के साथ मेवाड़ में ही हैं उनसे अपने साथ चलने को कह देती हूं।" गुणवती बोली।

"हां, यह उचित होगा।" और चूण्डा राजमाता की तीर्थयात्रा की

व्यवस्था करन को चले गये ।

राजमाता ने आचाय सुधाकर को अपन साथ चलने का आदेश उसी समय दे दिया। आचाय सुधाकर ने गुणवती की तीथयात्रा की सूचना उसी समय राव रणमल को दे दी। रणमल कुछ देर तक मौन रह फिर वह सुधाकर से बोले "गुणवती कुछ समय तक चण्डाजी के प्रभाव से मुक्त रहेगी मारवाडवाला का इसस अच्छा अवसर नही प्राप्त होगा। और यह सूचना भी शुभ है कि गुणवती तुम्ह अपन साथ लिये जा रही ह। तुम्ह क्या करना है यह तुम समझ ही रह होग।

कुटिल मुस्कराहट के साथ आचाय सुधाकर ने कहा 'आपके कहन की आवश्यकता नही है। म काशी म शिक्षाप्राप्त ब्राह्मण हू नीतिशास्त्र म विशारद! चूण्डाजी मरा निरादर कर चुके ह।"

राजमाता गुणवती न अपने वचन का पालन किया, ठीक एक पक्ष के बाद वह पुष्कर तीथयात्रा स वापस आ गयी। लेकिन गुणवती अब पहचानी नही जाती थी उसने अपन सिर के बाल मुडवा दिय थे, वधव्य-प्रथा के अनुसार श्वेत वस्त्र धारण कर लिय थे। अपने समस्त आभूषण उसन दान कर दिय थे। हाथ म केवल सोने की दो-दो चूडियां थीं।

राजमाता का यह वेश देखकर चण्डा को आश्चय हुआ कुछ दुख भी हुआ। उसने केवल इतना कहा "यह क्या कर दिया माताजी! इतन कठोर व्रत और त्याग की आवश्यकता क्या थी!

स तुष्ट मुद्रा म मुस्कराते हुए गुणवती ने उत्तर दिया, 'कुवरजी, मेरी मत्यु तो उसी समय हो गयी थी जब तुम्हारे पिता की मृत्यु का समाचार मुझे मिला था। अब तो मैं केवल राणा मुकुलजी के लिए जीवित हू सुहाग तो जाता ही रहा।

राव रणमल भी उस समय आ गये थ अपनी बेटी का स्वागत करन। रणमल फूट फूटकर रोने लग हाय मेरी बेटी! यह भी दिन देखना बदा था मुझे! मैं तो मण्डोर जान की तयारी कर रहा था लेकिन अभी कुछ दिन और रुकना पडेगा यहाँ—एसा दिखता है। वर्षाऋतु के बाद ही जाना हो सकेगा तेरे दुख को देखकर कलेजा फटा जा रहा ह।

अपने पिता के इस ममता प्रदशन स गुणवती प्रभावित हुई, "आप

मेरे पिता ह, आपस इसी बात की आशा ह । मन्दौर लौटकर अभी कोनिएगा क्या ? जोधाजी तो वहा हैं ही । कुवर चण्डाजी मेवाड राज्य की व्यवस्था सँभाल रह है । अधिकाश समय इनका चित्ताड स बाहर ही बीतता है । राणाजी की शिक्षा दीक्षा की दखभाल का प्रबन्ध कुछ दिन आप कर दीजिए, फिर आप चले जाइएगा । मैं तब तक स्वय व्यवस्थित हो जाऊगी ।" और अपनी दासिया के साथ राजमाता गुण-वती अपन कक्ष म चली गयी ।

कुवर चूण्डाजी का जीवन कम आर निष्ठा का जीवन था मनन और चितन का जीवन नही था । मनोवैज्ञानिक गुत्थिया का उन्ह ज्ञान नहीं था । धम और भावना एक स्थान पर ऐसे आवश का रूप धारण कर लेत है जिसे पागलपन कहा जा सकता ह । लेकिन इस आवेश म स्थायित्व बहुत कम होता है और इस आवश की प्रतिक्रिया भी होती है । उस प्रतिक्रिया का रूप क्या होता है यह निश्चित रूप स नही बताया जा सकता । इस आवेश को पागलपन की सज्ञा भी दी जा सकती है और इस आवश का लाभ भी किन्ही लोगा द्वारा उठाया जा सकता है । रणमल सुस्पष्ट रूप स तो नही लेकिन एक लम्बी जिन्दगी के लम्बे अनुभव के चलत अपनी सुख-सुविधा और अपन आमाद प्रमाद और हिता के प्रति सवथा जागरूक था ।

गुणवती के पास से लौटकर रणमल न आचाय सुधाकर स एकान्त मे बातचीत की । रणमल ने पूछा, 'तुम्हारे रहते हुए गुणवती न यह सब-कुछ कर डाला तुमने रोका क्या नहीं ?"

"सरकार ! धम के कामा म मैंने बाधा देना उचित नही समझा । जो कुछ उन्हान किया ह वह सब अपनी अन्दरवाली भावना को जबर-दस्ती दबान के लिए किया है । लेकिन वह सब दबेगा नही—यह पुत्र के प्रति मोह, यह सत्ता के प्रति मोह, यह सब जल्दी ही जागेगा बहुत उग्र रूप मे जागेगा । और उसका लाभ सरकार मवाड में राठौरो की स्थापना के लिए सहज ही उठा सकेंगे । इस समय आपकी बटी में किसी के प्रति मोह नहीं है । न चूण्डाजी के प्रति मोह, न आपके प्रति माह । मात्र मुकुलना के प्रति मोह है । एक नये अध्याय का प्रारम्भ हो रहा है ।'

पता नहीं राव रणमल की समझ में आचार्य सुधाकर की बात आयी, या स्वयं आचार्य सुधाकर ही अपनी बात ठीक तौर से समझ रहे थे—लेकिन जो कुछ आचार्य सुधाकर ने कहा, वह एक बड़ा सत्य था।

सातवाँ परिच्छेद

धर्म की रक्षा करने के लिए राणा लाखा के साथ जानेवाले पाँच हजार सैनिकों एवं सामन्तों में से केवल एक हजार से कुछ अधिक लोग ही मेवाड़ वापस लौटे वह भी घायल थके हुए, टूटे हुए। उनके वापस लौटने पर फिर से मेवाड़ में शोक पर्व छा गया। न जाने कितनी स्त्रियाँ सती हो गयीं, न जाने कितनी वैधव्य का भार ढोने लगीं। अनगिनती बच्चे अनाथ हो गये।

राजपूतों का समस्त इतिहास विनाश और असामयिक मृत्यु का इतिहास है। मेवाड़ की जनशक्ति के इस विनाश पर युवराज चूण्डाजी के मन में एक तरह का विषाद भर गया। अनाथों विधवाओं के प्रति असीम करुणा सीसोदिया वंश का ह्रास—चूण्डाजी के आगे एक समस्या और आ खड़ी हुई।

लेकिन वहीं राव रणमल के मन में एक तरह के पुलक और सन्ताप की भावना भर गयी। रणमल राठौर वंश का था न! अनादिकाल से यह वंश परम्परा राजपूतों में अभिशाप के रूप में रही है और इसी वंश-परम्परा की छोटी छोटी विकृतियों ने राजपूतों की शौर्यवाली परम्परा को बुरी तरह ढक लिया। आपसी कलह और विग्रह हठधर्मी और झूठा अभिमान, दूसरों को किसी भी ढंग से नीचा दिखाने की प्रवृत्ति, और इन सबकी प्रतिक्रिया में विलासिता, छल कपट! कुछ यादें में कितनी और विधर्मी इस पारस्परिक कलह और विग्रह का लाभ उठाकर समस्त देश के शासक बन बैठे।

कन्नौज के राठौर राजा जयचन्द के गोरी के हाथ में पराजित होने के बाद राठौरों ने भागकर राजस्थान के मरुप्रदेश मारवाड़ में शरण ली।

जनहीन मा पडा हुग्रा था मारवाड का वह प्रदश । और वहाँ भागकर बसनवाले राठौरो को अपनी स्थापना के लिए मनुष्यो के साथ नही, स्वय प्रकृति के साथ तीन सा वर्षों तक सघष करना पडा था। और, इस सघष के बावजूद, वह क्षेत्र मरुप्रदेश की भयानक असुविधाओ के कारण हमेशा अभावग्रस्त पडा रहा।

स्वय म आध्यात्मिक हात हुए भी व्यक्तिवाद समाजविरोधी न सही, समाज को शिथिल करनेवाला तत्त्व ह। व्यक्ति परिवार, कुल, जाति, इन सबके ऊपर ह मानव समाज। लेकिन यह सब वैयक्तिक चेतना के साथ साथ सामाजिक चेतना पर आधारित है। वैसे सबकुछ सिमटकर अन्ततोगत्वा वयक्तिक चेतना म ही निहित हा जाता है। मनुष्य म अपना स्वाथ एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है। अपने म ऊपर उसका परिवार आता ह, परिवार फैलकर वश और कुल बन जाता है। इन सबकी चेतना अन्य व्यक्तियो, परिवारो एव वशो और कुलो का सामना करने के लिए ही होती है। इनसे उठकर जाति धम, फिर उनस उठकर प्रदश और दश। यह सब इकाइयाँ बनती है दूसरी इकाइयो का मुकाबला करने के लिए। एक सम्पूण इकाई की परिकल्पना असम्भव है।

बौद्धिक मानव के विकास का अब तक यह क्रम रहा है। लेकिन राजपूतो के इतिहास म कुल और वश मे ऊपर उठकर क्षेत्रीय एव भौगोलिक परिवेश तक फैलने की परिकल्पना नही मिलती। हा, जाति और धम तक फैलने के उदाहरण जहाँ-तहा अवश्य मिलेंग।

राव रणमल की सामाजिक चेतना केवल वश-परम्परा तक ही विक-सित हुई थी, और मवाड की भूमि पर सीसौदियो के उन्मूलन तथा राठौरो की स्थापना पर आकर रुक गयी थी। राणा मुकुलजी उनके दौहित्र होते हुए भी सीसौदिया वश के थे। हिन्दू धम इस भेदभाव मे कुछ अजीब ढग स सकुचित है। इस धारणा के पीछे रणमल का वह विकृत रूप था जिसम लेशमात्र आध्यात्मिकता नही थी, अगर कुछ था तो व्यक्तिवाद की भौतिक शक्ति, प्रभाव तथा सुख-सुविधा की विकृति।

राव रणमल के ज्यष्ठ पुत्र जोधा के तीन पुत्र थे, इनम सबसे बडा था सिहा। सिहा की अवस्था प्राय आठ दस वष थी। राव रणमल की

पारिवारिक ममता सिंहा पर थी। वह चाहते थे कि मेवाड का सम्पन्न और शक्तिशाली राज्य सिंहा के हाथ म आ जाये। दौहित्र दूसरे कुल का होता है, पौत्र अपने कुल का होता है। राव रणमल आये तो थे कुछ समय के लिए मारवाड के कठोर जीवन से हटकर एक सम्पन्न भूमि तथा अनुकूल जलवायु म रहकर विलासितामय समय बिताने, लेकिन आठ दस मास तक चित्तौड म रहने के बाद उनके अन्दर अपने दौहित्र के स्थान पर पौत्र को मेवाड की गद्दी पर बिठाकर मेवाड म राठौरो की स्थापना की भावना जाग उठी थी।

राव रणमल की सन्ताना म जहा जोधा मे ईमानदारी और आत्म-निर्भरता के गुण प्रमुख थ—उसम बुद्धिमानी थी, वहा गुणवती म बुद्धिहीनता की सीमा तक पहुचनेवाला भोलापन था। उसम भावना का आवेश और आवेग था। गुणवती को अपने पिता की विलासिता का पता तो था लेकिन अपने पिता की कलुष प्रवृत्ति की वह कल्पना ही नहीं कर सकती थी।

पश्चिम म मेवाड क शासन से विद्रोह करनेवाले भीलो एव अहेरियो का दमन करने तथा अरावली पर्वत से और अधिक मात्रा म खनिज प्राप्त करने के क्रम म चूण्डा का अधिकाश समय चित्तौड से बाहर ही बीतता था। रणमल ने राणा मुकुलजी की देखभाल का भार उठा लिया था। लेकिन उन्होने मेवाड की जनशक्ति क क्षय का अनुभव करके तथा चूण्डाजी की अनुपस्थिति से लाभ उठाने के क्रम म मारवाड के प्राय दस सामन्तो को अपने परिवारो तथा चुने हुए सैनिको सहित मेवाड म आकर बसने का निमन्त्रण आचार्य सुधाकर द्वारा भेज दिया।

क्वार का महीना था चित्तौड म विजयदशमी का उत्सव मनाया जा रहा था। इस उत्सव के उपलक्ष्य म कुवर चूण्डाजी चित्तौड म ही थ। अष्टमी का दिन था भवानी दुर्गा का पूजन हो गया था। राणा मुकुलजी पूजन करने के बाद रनिवास म चले गये थ, और राव रणमल अपने सामन्तो के साथ आमोद प्रमोद म लग गये थ। कुवर चूण्डाजी दूसरे दिन राणा मुकुलजी की सवारी के प्रबन्ध मे थे। मेवाड के सामन्तो

के आगमन का ताता लगा हुआ था। सूर्यास्त हो रहा था। चित्तौडगढ का फाटक बन्द होने मे प्राय आध घण्टा बाकी रह गया था कि फाटक के मुख्य प्रहरी ने चित्तौड के फाटक पर मारवाड के पाच सामन्तो और उनके परिवारो तथा उनके साथ पचास सशस्त्र सैनिको के आने की सूचना कुवर चूण्डाजी को दी। चूण्डाजी तत्काल फाटक पर पहुचे क्योकि उन्होंने तो मारवाड के सामन्तो तथा उनके परिवारो और अनुयायियो को आमन्त्रित नही किया था। उनके साथ मेवाड के प्राय एक सौ सैनिक थे। उन्होने पूछा, "आप लोगो ने अपने परिवार तथा सैनिको के साथ मेवाड आने का कष्ट कैसे उठाया ?"

एक सरदार ने उत्तर दिया, 'हमे राव रणमल ने चित्तौड आकर यहा बसने का निमन्त्रण दिया है। उनकी आज्ञा से ही हम लोग आये हैं।'

चूण्डा की भौंहें तन गयी। उन्होने कहा, "राव रणमल मेवाड मे हम लोगो के मेहमान है, उन्हे आदेश अथवा आज्ञा देने का कोई अधिकार नही। मेवाड सीसोदिया राजपूतो का प्रदेश है, राणा मुकुलजी यहा के अधिपति है मैं राणा का अभिभावक हू। राणा मुकुलजी की तरफ से मैं आप लोगो को आज्ञा देता हू कि आप लोग तत्काल यहा से मारवाड की ओर रवाना होकर पाच कोस की दूरी पर अपना पडाव डालें और तीन दिन के अन्दर ही मेवाड की सीमा से बाहर हो जायें। राजाज्ञा की उपेक्षा करने का परिणाम तो आप लोगो को मालूम होगा ही।'

मारवाड के सामन्तो ने सौ से अधिक सशस्त्र सैनिक अपने सामने देखे, उन्होने आपस मे विचार विमर्श किया फिर दूसरे सरदार ने कहा 'आप रणमल को हम लोगो के यहा आने की सूचना तो दिलवा दीजिए।"

'इसकी कोई आवश्यकता नही। यह व्यवस्था सीसोदिया कुल की है, राव रणमल इस व्यवस्था के भागी नही है। अभी सन्ध्या हुई है, दो घण्टो मे आप लोग पाच कोस की यात्रा कर लेंगे।' चूण्डा ने सुदृढ भाव से कहा, "मेवाड के सैनिक आपके पडाव की व्यवस्था कर देंगे। और वह अपने सैनिको को फाटक पर छोडकर गढ के अन्दर चले गये।

राव रणमल उस समय अपने सामन्तो के साथ आमोद प्रमोद मे

व्यस्त थे, उन्हे इस सबका पता ही नही चल पाया।

दूसरे दिन राजदरबार मे चूण्डाजी ने राणा मुकुलजी का अपने हाथो स तिलक किया, इसके बाद समस्त सामन्तो ने राणा मुकुलजी को भेंटें दी। राव रणमल उस दरबार मे उपस्थित थे और वह उत्सव उनकी आत्मा मे गड रहा था। असीम भक्ति और आस्था थी सामन्तो मे चूण्डाजी के प्रति। दरबार के अन्त म चूण्डाजी न गया के अभियान म मृत सनिको के परिवारो का एक एक सहस्र रौप्य मुद्राएँ दी गयी। समस्त दरबार म एक हर्ष-ध्वनि गूज उठी। राजमाता का मस्तक गव से ऊँचा हो गया। सीसौदिया मे एक नया उत्साह, एक नयी उमग और असीम स्वामिभक्ति थी अपने राणा के प्रति।

आचाय सुधाकर का मेवाड से गय हुए तीन माह स अधिक हो गय, लेकिन राव रणमल को मारवाड की गतिविधिया का कोई समाचार नही मिला। राणा लाखा की मृत्यु एव गया म मेवाड की सन्य शक्ति के ह्रास के फलस्वरूप पश्चिम म भीलो और अहेरिया के जो विद्रोह उठ खड हुए कुवर चूण्डाजी उनके दमन का कायक्रम बना रह थ। राव रणमल का हृदय जस डूबता जा रहा था गुणवती पर चूण्डा के व्यक्तित्व का पूरा प्रभाव था।

दीपावली पव आ रहा था। राव रणमल ने सामन्त बीजा से कहा, 'बीजा, सुधाकर मर गया वहा जाकर जरा मन्दोर जाकर खबर तो ले, वहा सब ठीक स है न ?'

"कोई अनिष्ट की बात ता नही है नही तो सरकार के पास सूचना जरूर आती। लकिन आपकी आज्ञा है तो मैं दीवाली के बाद द्वितीया क दिन मारवाड की यात्रा पर निकल जाऊँगा, इस बीच तैयारी भी कर लू।'

लकिन बीजा का मन्दौर जाने के लिए यात्रा की तैयारी नही करनी पडी, दीपावली के तीन दिन पहले, यानी द्वादशी के दिन आचाय सुधाकर ही चित्तौड पहुच गय।

नित्य की भाँति सन्ध्या के समय राव रणमल का दरबार लगा। आचाय सुधाकर उस दरबार म उपस्थित हुए। रणमल न तनिक बिगड-

कर कहा, "मैने तुम्हे जिन सरदारो को यहाँ ले आने को कहा था, वे अभी तक नही आये। तीन मास से अधिक हो गया, और तुमने मुझे कोई सूचना भी नही दी!"

हाथ जोडकर सुधाकर ने कहा, "वे सब विजयादशमी के दो दिन पहले अपने परिवारो तथा सैनिको के साथ चित्तौड आये थे, लेकिन उन सबो को कुवर चूण्डा ने उसी समय चित्तौड से वापस भेज दिया। यही नही, एक सौ सैनिको की देखभाल मे उन्होने उन सबको मेवाड की सीमा से बाहर करा दिया। वे सब बडे अपमानित और विक्षुब्ध है। कुवर चूण्डा ने उनके यहाँ आने की सूचना भी सरकार को देने से इनकार कर दिया।"

राव रणमल ने आश्चर्य के साथ कहा 'वे आये और उल्टे पैर वापस भी चले गये! और मुझे इस सबकी खबर ही नही मिली! मै गुणवती से चूण्डा के दुस्साहस की शिकायत करूँगा।" फिर कुछ सोचकर बोले, "नही, गुणवती से कुछ कहना सुनना गलत होगा, वह पूरी तौर से चूण्डा के प्रभाव मे है। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, सीसौदिया वश के लोग शक्तिशाली हो रहे है।'

सरदार बीजा तेजी से सोच रहा था, उसने कहा, 'अभी सीसौदिया की शक्ति बढने मे समय लगेगा। आप शात भाव से राणा मुकुलजी को हिला लीजिए, वह अबोध बच्चा है। आप धीरे-धीरे कुशलतापूर्वक चूण्डा के विरुद्ध अपनी बेटी के कान भरते रहिए, वह आखिर स्त्री ही है, और स्त्री मे बुद्धि का अभाव होता है।'

राव रणमल ने यह प्रसग बन्द किया और फिर से मदिरा के दौर चलने लगे।

राव रणमल की लिप्सा बढती जा रही थी। एक दिन अवसर पाकर रणमल ने अपनी बेटी से कहा "मुझे आये हुए प्राय सात आठ महीने हो गये लेकिन राणा मुकुलजी से मुझे इतने ही समय मे अत्यधिक मोह हो गया है। चूण्डाजी का अधिकाश समय चित्तौड के बाहर बीतता है राणाजी की देखभाल पूरी तौर से मेरे ऊपर आ पडी है। कब तक मैं यहा चित्तौड मे पडा रहूँ? सिहासन का मोह भी मुझे है।'

गुणवती के अन्दर धमवाला आवेग धीरे-धीरे कम होता जा रहा था, और अपने पुत्र के प्रति ममता उसमें बढ़ती जा रही थी। विराग का स्थान अनुराग ने ग्रहण कर लिया था। उसने कुछ सोचकर कहा, "साल दो साल अभी आप यहा और रह तो अच्छा होगा। आप सिंहा को भी यहीं बुला लीजिए। राणाजी को अपना एक हमजोली भी मिल जायगा। जोधाजी को देखे हुए मुझे काफी वर्ष हो गये हैं उन्हें भी एक सप्ताह के लिए यहा बुला लीजिए।

"इसमें एक बाधा है।" रणमल ने उत्तर दिया, "कुवर चण्डाजी को जोधाजी का या सिंहाजी का चित्तौड़ आना पसन्द आयगा या नहीं तुम उनसे पूछ देखो। वह मेवाड़ के राणा तो नहीं हैं लेकिन मेवाड़ पर शासन उनका ही है।

जहा तक मेरी जानकारी है, आपसे तो कभी उन्होंने कुछ कहा नहीं।

बड़ी भावपन के साथ राव रणमल ने उत्तर दिया, मुझसे कोई उन्होंने कुछ नहीं कहा, मैं बूढ़ा आदमी—मुझे वह अस्तित्वविहीन समझते हैं। लेकिन जोधाजी और सिंहाजी को यहा बुलाने के लिए उनकी सहमति ले लो। इसमें उन्हें कोई आपत्ति तो न होगी।

मेरे पिता और भाई के मामले में चण्डाजी को हस्तक्षेप करने का क्या अधिकार है?" तमककर गुणवती ने कहा।

कुवर चूण्डाजी राणा लाखा के बाद सीसोदिया कुल के शिरोमणि हैं, राणा मुकुलजी तो नाममात्र के राणा हैं।

अपने ओठों पर उँगली रखते हुए गुणवती बोली, "ऐसा मत कहिए। दिवगत राणाजी तो कुवर का तिलक करना चाहते थे कुवरजी ने ही राणाजी को उनके वचनों की याद दिलाकर मुकुलजी का तिलक करवाया। कुवरजी के विरुद्ध कुछ सोचना पाप है।"

कुछ रुककर गुणवती बोली, "मैं सोचती हूँ कि आप अभी जोधाजी और सिंहाजी को मत बुलाइए। मुझे अपने भाई को देखे जहाँ छः वर्ष हो गये, वहा साल दो साल और सही। कुवर चूण्डाजी जी पर मैं अविश्वास नहीं कर सकती। इस पाप के लिए मेरा मन तैयार नहीं है।"

से लेकर उत्तर पूव तक एक बडा भू भाग फैला है, जिसमे अगम्य जगल और पथरीले व अनुपजाऊ भूभाग है। यह आदिवासी भीलो का क्षेत्र कहलाता है। यह भूभाग मेवाड का ही भाग है। इसी भाग से मिला हुआ अरावली का वह क्षेत्र है जहा प्रचुर मात्रा म खनिज पदार्थ मिलते हैं। अरावली की खानो पर कब्जा करने के लिए पश्चिम से सशस्त्र गुजरो के छोटे छोटे दलो के प्रवेश की खबरें कुवर चूण्डाजी को मिल रही थी। यह भीलो का प्रदेश नाममात्र के लिए ही मेवाड का भाग था। यह एक तरह से स्वतन्त्र था। गया मे सीसौदिया सनिको की मत्यु के बाद तो यह प्रदेश बिल्कुल ही व्यवस्थाहीन हो गया था। इस प्रदेश के आदिवासी भील आय सभ्यता स एकदम कटे हुए—कठिन जीवन और भोजन के लिए शिकार पर अवलम्बित। दूर दूर तक निजन भूखण्ड, वन्य पशुओ से भरे हुए। गुजर सनिको का एकमात्र उद्देश्य अरावली की चादी और ताबे की खानो पर कब्जा ही हो सकता था। और कुँवर चूण्डा को पता था कि मेवाड की सम्पन्नता और समद्धि के लिए चाँदी और ताँबे की आवश्यकता है। मेवाड के राजकोष मे जो चादी के सिक्के थे, उनका एक बडा भाग कुवर चूण्डाजी ने मेवाड के मृत सनिक परिवारो को स्वय राजकीय सहायता के रूप म वितरित कर दिया था। फलस्वरूप रिक्त राजकोष को भरने के लिए अरावली की खानो से चादी निकालने का कायक्रम तेज कर दिया गया था। इन गुजरो के प्रवेश ने मेवाड राज्य के लिए नयी समस्या खडी कर दी।

कुवर चूण्डा ने प्राय एक सौ विश्वस्त सामन्तो तथा सनिको को इस प्रदेश मे प्रवेश करनेवाले गुजरो को निकाल बाहर करने के अभियान म चलने की तयारी का आदेश दिया। कार्तिकी पूर्णिमा के दिन प्रात काल स्नानपूजन करने के बाद चूण्डा राजमाता गुणवती के समक्ष उपस्थित हुए। राजमाता का अभिवादन करके चूण्डा ने कहा 'भीलो के प्रदेश म गुजरो के प्रवेश के समाचार आ रहे है। म एक सौ सीसौदिया सनिको के साथ, मेवाड और गुजरप्रदेश की सीमा की ओर प्रस्थान कर रहा हू। पचास सनिको को सीमा पर तनात करके, जिसस कि अधिक गुजर सनिक प्रवेश न कर सकें, मैं अन्य पचास सनिको के साथ उत्तर पूव की ओर बढूगा,

यहाँ जो गुजर सनिक पहुच गय है उह निर्मूल करत हुए। इसम मुझ शायद एक महीना या इसस अधिक लग जायेगा।'

कुछ चिंतित हाकर गुणवती ने पूछा, 'फिर चित्तौड की व्यवस्था का क्या होगा ?'

"आप समथ है समस्त सामतगण एव अधिकारी आपक आज्ञा का पालन करेंग। फिर मैंन कैलवाडा से रघुदेव को बुला लिया है आपकी सहायता करने के लिए। जब तक मैं वापस नही लौटता रघुदेव यहा रहेगा।

राजमाता गुणवती ने कहा रघुदेव को बुलान की आवश्यकता तो नही थी। मर पिताजी है ही। वह मन्दौर जाना चाहत थ, मर आग्रह पर कुछ दिना क लिए और रुक गय है।

इस बार चूण्डा को आश्चय हुआ, राव रणमल मन्दौर जाना चाहत थे ? उन्हें यहाँ रोकन म नायद आपसे कुछ भूल हो गयी है। और जैस चूण्डा को तत्काल यह भान हुआ कि राव रणमल क सम्ब ध म यह बात कहकर उनस ही कुछ गलती हुई वह बोल राव रणमल क यहाँ रहत राणा मुकुलजी का कोई अहित नही होगा। मैं रघुदव स कह दता हूँ कि वह कुछ दिना तक यहाँ रहकर कैलवाडा लौट जाय। फिर स्वय राजमाता तो है यहाँ। इस बार चूण्डा ने मुस्कराते हुए कहा, राजमाता को जब भी आवश्यकता महसूस हा रघुदव को सन्देश भिजवा दें और मेरी अनुपस्थिति म मवाड की व्यवस्था स्वय राजमाता अपन हाथ म ल लें।

गुणवती भी मुस्करायी, भरसक प्रयत्न करूँगी कुवरजी। लेकिन जल्दी ही लौटन का प्रयत्न कीजिएगा।'

कुवर चूण्डा ने गुणवती क चरण छुए और उसी दिन सौ सनिक सामता को साथ लकर उत्तर पश्चिम की यात्रा पर निकल पड। चलन के पहले चूण्डा न रघुदव स कहा 'एक सप्ताह चित्तौड म रहकर और यहाँ की व्यवस्था दखकर तुम कलवाडा चल जाना। मैंन गढपति और सनानायक को आदेश द दिया है कि राठौरा पर कडी नजर रखी जाय, और बाहर स आनेवाल राठौरा को चित्तौड म प्रवेश न करन दिया

जाय। तुम सप्ताह मे दो एक दिन के लिए चित्तौड आकर राजमाता और राणा की खोज खबर ले लिया करना।'

दूसरे दिन प्रातःकाल राव रणमल को खबर मिली कि पिछली सन्ध्या के समय चूण्डा एक मास के अभियान पर भीलो के प्रदेश की ओर चले गये है। यह खबर पाते ही रणमल ने सरदार बीजा और आचार्य सुधाकर को बुला भेजा।

वह सन्ध्या चित्तौडवासियो के लिए एक घुटन और उदासी की सन्ध्या थी। चूण्डा के प्रस्थान का समाचार हरेक चित्तौड-निवासी को मिल गया था। लेकिन उस शाम को राव रणमल के निजी दरबार मे चहलपहल थी, उल्लास और उत्सव का वातावरण था।

सब लोगो के एकत्रित हो जाने के बाद मदिरा के दौर चलने लगे। एक दौर समाप्त होने के बाद रणमल ने सुधाकर से पूछा "कुवर चूण्डा जी की यात्रा किस मुहूर्त मे हुई ?

सुधाकर ने पचाग के पृष्ठ उलटे फिर गणित का सहारा लेकर वह बोला "महाराज इस मुहूर्त को एक तरह से तत्काल अशुभ नही कहा जा सकता लेकिन चूण्डाजी के जीवन मे कुछ परिवर्तन का द्योतक है जो उनके लिए अहितकर सिद्ध होगा।

इसी समय सरदार बीजा ने सुझाव दिया "महाराज, आप राजमाता से फिर कहिए कि वह जोधाजी को उनके परिवारवालो के साथ आमंत्रित करें। जोधाजी के साथ सात आठ राठौर सामन्त चित्तौड मे प्रवेश पा सकते है।

रणमल कुछ देर तक सोचते रहे, फिर उन्होने आचार्य सुधाकर की ओर देखा 'सुना सुधाकर तुमने बीजा का मत ? तुम्हारा क्या मत है ? अभी कुछ दिन पहले गुणवती जोधाजी को यहा निमन्त्रित करने से इन्कार कर चुकी है।

आचार्य सुधाकर बोले चूण्डाजी के जाने के बाद फिर न आपका यह प्रस्ताव राजमाता मे राठौरो के प्रति सशय और शका की पुष्टि कर सकता है। मैं समझता हूँ कि महाराज का यह प्रस्ताव राठौरो के लिए अहितकर होगा।

दरबार के अन्य सामन्तों ने आचार्य सुधाकर के मत में सहमति प्रकट की।

सुधाकर ने बात आगे बढ़ायी, "कुंवर चूण्डाजी बुद्धिमान राजनीतिज्ञ हैं। चित्तौड़ में अपनी अनुपस्थिति के दौरान गढ़ की व्यवस्था उन्होंने अपने छोटे भाई रघुदेव को सौंप दी है। रघुदेव बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति के पराक्रमी और चरित्रवान व्यक्ति हैं। साथ ही राजमाता का रघुदेव पर पूरा विश्वास भी है।

कुछ क्रुद्ध और पराजित स्वर में रणमल बोले, 'वह हरामजादी पूरी तरह से सीसोदिया वंश में समा गयी है। राठौड़ों पर उसे किंचित विश्वास नहीं।"

बात वहीं की वहीं समाप्त हो गयी। फिर मदिरा के दौर चलने लगे।

जिस आशा और उत्साह के साथ उस दरबार का आरम्भ हुआ था वह नष्ट हो गया। धीरे-धीरे विषाद और निराशा की भावना छाने लगी और दरबार जल्दी ही समाप्त कर दिया गया।

आचार्य सुधाकर मदिरा से दूर ही रहते थे। वह सन्ध्या-काल भांग का बड़ा गोला चढ़ाते थे और भंग की तरंग में उनकी बुद्धि और प्रतिभा जाग जाती थी। उस समय उनकी भांग गमक रही थी। एकान्त पाकर उन्होंने रणमल से हाथ जोड़कर कहा "महाराज, अगर आप बुरा न मानें तो एक बात कहूं, रानी अमिया आपके आने से कभी उदास रहने लगी है। महाराज की कुशलक्षेम जानने के लिए भी वह बहुत चिन्तित रहती है। अनुचित न समझें तो महाराज अपनी सेवा के लिए रानी अमिया को यहां बुला लें।'

अमिया का नाम सुनते ही महाराज भड़क उठे, फुफकार के स्वर में बोले 'वह हरामजादी गोली भी गुणवती का ही पक्ष लेगी। एकदम बुढ़िया दिखने लगी है। उसे देखकर ही मुझे उबकायी आने लगती है।'

सुधाकर ने रणमल को समझाया, "लेकिन वह महाराज की और राठौड़ वंश की बड़ी हितू है। जोधाजी पर उसकी असीम ममता है। रानी अमिया से आपको बड़ी सहायता मिलेगी। राजमाता गुणवती उन्हें

अपनी माता की तरह मानती हैं।

राव रणमल को एक नयी प्रकाश की किरण दिखायी दी, "ठीक कहते हो। गुणवती की मति फेरने के लिए अमिया का सहारा लेना ही उचित होगा। तुम एक दो दिन में मन्दौर जाकर जल्दी से जल्दी अमिया को अपने साथ ले आओ। यह बात मुझे पहले सूझी ही नहीं थी।"

नियति का क्रम चल रहा था, एक अजीब अनजाने ढंग से। मेवाड़ प्रदेश के उत्तर में अरावली पर्वतमालाओं को पार करने के बाद मेवाड़ का प्रदेश आरम्भ होता है जो अधिकांश में मरुप्रदेश है। अरावली के दक्षिण में गहन जंगलोंवाला प्रदेश है अगम्य वन्य पशुओं से भरा हुआ, जहां छोटे-छोटे दलों में आदिवासी बिखरे हुए हैं। यह आदिवासी अधिकांश में भील हैं, आर्यों की सभ्यता से नितान्त दूर।

तीन दिन की यात्रा के बाद कुंवर चूण्डा ने भीलों के प्रदेश में प्रवेश किया। एक विचित्र सा सन्नाटेवाला प्रदेश। दुर्गम जंगल ही चारों ओर फैले हुए थे दूर दूर तक मानव निवास का कोई चिह्न नहीं था। कहीं आगे बढ़ने के लिए पगडण्डी तक नहीं थी। जैसे मानव वहां तक आते आते सहम गया हो। पशुओं से भरा हुआ वह समस्त अंचल भय की एक चुनौती थी। कुंवर चूण्डा ने एक स्थान पर खड़े होकर उस अगम्य जंगल पर नजर डाली। एकाएक उनकी दृष्टि एक बनैले पर पड़ी। कुंवर चूण्डा ने अपना बर्छा संभाला और घोड़े को उसकी ओर मोड़ दिया। एक संघर्ष सा आरम्भ हुआ मानव के साहस और प्रकृति की कठिनाइयों में। बनैला घुसा जा रहा था जंगल में अपनी रक्षा करने मनुष्य उसका पीछा कर रहा था उसका शिकार करने। बनैले के पीछे कुंवर चूण्डा द्रुत गति से प्रायः दो कोस तक पीछा करते रहे। उन्हें सामने एक छोटी सी नदी दिखी। बनैला तो तेजी के साथ नदी पार कर गया, लेकिन घोड़ा कुछ ठिठका। चूण्डा की पहुंच से बनैला थोड़ा आगे बढ़ गया था। नदी की दूसरी ओर जंगल कुछ हल्का था। लेकिन यह दौड़ अधिक नहीं चली। कुंवर चूण्डा ने देखा कि दूर कहीं से एक तीर आकर बनैले के शरीर में

धँस गया है।

इतनी तेजी के साथ यह घटना घटी थी कि कुवर चूण्डा को स्थिति का बोध तब हुआ जब बनैला मुडकर घोडे पर प्रहार करने के लिए पाँच छ हाथ की दूरी पर आ गया था। चण्डा ने बनले पर बर्छे का भरपूर प्रहार किया जिसस बनैला लडखडा गया, और उसी समय दूसरा तीर बनैले के शरीर म धँसा। ब नैला जमीन पर गिर पडा, निष्प्राण हाकर। घोडे पर बैठे-बैठे उनकी आँखें जगल म उस व्यक्ति को खोजने के लिए घमी। दूर एक टील स एक भीलनी हाथ म कमान लिय हुए नीच उतर रही थी। भीलनी कमर तक वस्त्र पहने हुए बलिष्ठ युवती थी। ताम्र वण, साचें म ढला हुआ-सा शरीर मुख पर निर्भीकता स भरा हुआ सलोनापन। कुवर चूण्डा मुग्ध भाव से उस युवती को देख रह थे। चूण्डा के पास आते हुए उसन अपनी भीलो की भाषा म पूछा, "तुम कौन हो ? यह बनैला मेरा शिकार है।"

'तुम्हारा भी है और मेरा भी है। चण्डा मुस्कराय "मैं दो कोस से इस बनैले का पीछा कर रहा हू। और मरा यह मेरे बर्छे स है।' टूटी फूटी भीलो की भाषा म चूण्डा ने कहा।

"लेकिन तुम हो कौन ?" युवती ने फिर पूछा, "जानते नहीं आगे-वाला वन बाघो स भरा हुआ है ?'

"मेरे साथ मेरे सैनिक है मैं मेवाड के राणा मुकुलजी का बडा भाई हूँ।"

'कुवर चूण्डाजी ! तुम्ही ने मेवाड का राजपद छोड दिया था ?" और उस भीलनी ने भूमि पर अपना मस्तक टिकाकर कुवर चूण्डा को प्रणाम किया।

इस बार चूण्डा ने प्रश्न किया "लेकिन तुम ? इस निजन वन म अकेली कैसे ?" वह अपने घोडे से उतरकर जमीन पर खडे हो गये थे और अपना बर्छा बनले के शरीर से निकाल लिया था।

"मैं आखेट के लिए निकली थी। उत्तर पूव म दो कोस पर राँधा गाव मे रहती हूँ। वहा हम भीलो की छोटी सी बस्ती है। करीब दस-बारह घर हैं। मेरे पिता उनके सरदार है, कम्मल उनका नाम है। अर

बाप र, इतने आदमी दूर घोडों पर दिख रहे हैं!" और वह पीछे लौटने को घूमी।

'डरो मत, तुम्हारा कोई अहित नहीं होगा, ये मेरे सैनिक हैं। मैं इस अंचल का निरीक्षण करने के लिए आया हूं। तुम अपने गांव तक हम लोगों को रास्ता दिखा दो। वहां हम इस बनैले को तुम्हारे घर में उतार देंगे और आगे बढ़ जायेंगे।'

भील युवती खिलखिलाकर हँस पडी 'विचित्र संयोग है इधर रास्ता छूटते हुए आनेवाले दलों का तांता बँध गया है।"

चूण्डा के मस्तक पर बल पड गये। 'क्या कहा? इधर और भी सैनिकों के दल आये थे?

युवती ने उत्तर दिया, अभी चार दिन हुए सैनिकों का एक दल गांव के चार आदमियों को अपने साथ ले गया है। इस बार मेरे पिता की बारी थी। कल परसों तक ये लोग भी लौट आयेंगे।

सैनिक अब चूण्डा के पास आ गये थे। चूण्डा ने अपने सैनिकों से कहा राह भिल गयी है हम जंगलों को पार करके भीलों के प्रदेश में आ गये हैं। इस बनैले को घोडे पर लाद लो। यह भीलनी हमें अपने गांव तक रास्ता दिखा देगी। बनैले को इसके घर पर छोडकर तथा गांववालों से पूछकर हम अपना आगे का कार्यक्रम बनायेंगे।

युवती मुस्करायी लगता है इन दलों का पीछा करने आये हो महाराज। वे लोग पश्चिम से आधा और मिट्टी के टीलों को पार करके आये थे और उनसे बचते बचते बडी बुरी हालत में यहां पहुंचे थे। कुछ लोगों को सिंह खा भी गये। सब लोग पूरब की तरफ गये हैं। रास्ते में छोटे-छोटे नगर हैं। इधर उधर पथरीले टीले हैं। सूखी धरती। तुम तो लगता है दक्षिण से आ रहे हो। घना वन—घनघोर अँधेरा। वहां से तो राह पगडण्डी भी नहीं है। यह बनैला भाग्य से ही मिल गया महाराज को। चलो, मैं तुम लोगों को अपने साथ लिये चलती हूँ। लेकिन पुरुष तो अधिक नहीं हैं। कोई बात नहीं, मैं तुम्हें रास्ता दिखाने को चलूंगी। तुम मुझे बडे अच्छे लगते हो महाराज!'

चूण्डा ने उस स्थान पर फिर से एक नजर डाली, तुम कहना हो

कि पश्चिम म बाघा और सिंहा का प्रदेश है—यह प्रदेश कहा तक है ?

'बहुत दूर तक महाराज, गिरिपवत तक फला है—सुना है उसके पार गुजरा का प्रदेश है।' और फिर वह आगे बढती हुई बोली, मेरा नाम अँचती है अँचली। याद रहेगा न !'

गधा गाँव पहुचत-पहुचते सूर्यास्त हो गया था। वहा पहुचकर गाव स कुछ हटकर चूण्डा के सैनिका ने पडाव डाल दिया, बनैले का अँचली के घर पहुचाकर।

नवाँ परिच्छेद

अठारहवे दिन अमिया को साथ लेकर आचाय सुधाकर मन्दोर स चित्तौड वापस आ गय। जिस समय राजमाता गुणवती को अमिया के आने की सूचना मिली वह ममतायुक्त पुलक के साथ दौडती हुई स्वय महल के फाटक पर अमिया का स्वागत करन का आयी—उनके अनजाने ही जैसे उनका बचपन कुछ क्षणा के लिए अनायास लौट आया हो। पाय आठ वप के बाद वह अमिया स मिली थी। अमिया के वक्ष पर अपना सिर टिकाकर फूट फूटकर रोने लगी।

इन आठ वर्षो म क्या का-क्या हो गया था। गुणवती मेवाड की महारानी बनी, गुणवती माता बनी, गुणवती विधवा बनी और गुण वती राजमाता बनी। यह सब आठ वर्षों की अवधि म। बाल्यकाल की स्मृतिया हरी हो गयी। गुणवती के आग्रह पर अमिया को रनिवास म ही कक्ष दिया गया। और अमिया के राजमहल म रहने मे राव रणमल का एक प्रकार का सन्ताप ही हुआ। उनके तथा अमिया के आग्रह पर यह व्यवस्था अवश्य हो गयी कि शाम स आधी रात के समय तक अपनी इच्छानुसार अमिया राव रणमल के साथ उनके व्यक्तिकक्ष मे रह सकती है। उसन एक सप्ताह के अन्दर ही राव रणमल, सरदार बीका एव आचाय सुधाकर से मेवाड की सारी स्थिति समझ ली।

गुणवती का यह पता ही नहीं चल पाया कि वह धीरे धीरे अपने पिता के जाल मे फँसती जा रही है। राजनीतिक षडयन्त्रों का शिकंजा कसता जा रहा था और यह राजनीति जहा भी हो, इसका रूप बडा विकृत होता है। इस राजनीति मे न कोई पिता है, न कोई पुत्र-पुत्री, और न भाई-भतीजा। यहा तक कि पति पत्नी को भी एक दूसरे पर विश्वास नहीं रहता। जो कुछ है वह अपने स्वार्थों की विकृति है।

राजवशो का इतिहास ही विकृतियो का, षडयन्त्रो का, क्रूरताओ का हत्याओं का इतिहास है। सत्ता की लोलुपता राजनीति का मुख्य अवयव होती है।

गुणवती ने मेवाड मे जो कुछ देखा था वह कुवर चूण्डाजी के अन्दर वाली उदात्त भावनाओं का रूप था और अपने अनजान वह इस उदात्तता की इतनी अधिक अभ्यस्त हो गयी थी कि उसे अपने पिता की विकृतियो पर विश्वास ही नहीं होता था। अपने पिता के घर मे वह अबोध और अनजान थी। अपने पिता तथा पिता के परिवारवालो की विकृतियो की ओर कभी उसका ध्यान नहीं गया। बचपन के भोलेपन मे वह डूबी और खोयी रही। भावना के क्षेत्र मे पली वह वाह्यिक उदात्तता और विकृति का रूप ही नहीं देख या समझ पायी थी। जो कुछ उसे प्राप्त हुआ था वह बडे स्वाभाविक ढग मे मिला था, जो कुछ उससे छिन गया था वह भी स्वाभाविक ढग मे ही उसने खोया था। कभी कभी उसका हँसने को जी होता था तब वह अपनी दासियो और पुत्र के साथ हँस लेती थी। लेकिन जब कभी उसका रोने का जी होता था तब वह अकेली पड जाती थी। उसे यह पता था कि मेवाड मे वह सबसे अधिक समर्थ सत्ता है, और समर्थ राजमाता को किसी के आगे रोना शोभा नहीं देता। धीरे धीरे वह रोना ही भूल गयी थी। लेकिन अमिया के आ जाने से उसकी रोने की प्रवृत्ति कभी कभी लौट आती थी।

अमिया गाती थी। राजस्थान मे गोली वह दासी होती थी जो सेवा करने के साथ राजाओ एव राजकुमारो या शक्तिशाली सामन्तो की विलासिता की प्रवृत्ति को तुष्ट करती थी और इसलिए गोली का स्थान

साधारण दासी से ऊँचा होता था। गोली कभी कभी रानियों तक से होड़ लेने लगती थी। यही नहीं, गोली महल के अन्दर राजनीतिक षड्यन्त्रों का अनिवार्य अंग बन गयी थी। अमिया का जीवन भी इन राजनीतिक षड्यन्त्रों में बीता था, लेकिन रणमल के विधुर हो जाने के बाद रणमल के बच्चों के प्रति उसकी ममता केन्द्रित हो जाने के कारण उसमें एक तरह का भावनात्मक पक्ष भी विकसित हो गया था।

अमिया के चित्तौड़ आने के एक सप्ताह बाद भीलों के प्रदेश से समाचार आया कि कुंवर चूण्डा ने भीलों के प्रदेश से गुजरों को निकाल दिया है और उन्होंने भीलों की एक छोटी सी सेना भी बना ली है। भीलों के उस प्रदेश की व्यवस्था करने में उन्हें वहाँ करीब पन्द्रह पखवारा और लगेगा। राजपत्रक सीधे राजमाता गुणवती के पास आये थे। अमिया ने पूछा, "कोई बड़ा शुभ समाचार है बेटी सरकार!"

मुस्कराते हुए गुणवती ने कहा, "मेवाड़ की स्थिति के और अधिक सुदृढ़ होने का समाचार है। गया में मेवाड़ की सेना का जो विनाश एवं ह्रास हुआ था उसकी पूर्ति करने में कुंवर चण्डा ने सफलता प्राप्त कर ली है।"

अमिया न जाने कितनी बार गुणवती से कुंवर चूण्डा का गुणगान सुन चुकी थी। उसने अब मौका देखा, "यह तो बड़ा शुभ समाचार है। कुंवरजी का इलाका कहाँ है और उनका परिवार कहाँ है?"

"महल के उत्तरवाले भाग में कुंवरजी सपरिवार रहते हैं। लेकिन कुंवरजी के जाने के तीन चार दिन बाद कुंवरजी की पत्नी और बच्चे कुंवरजी के छोटे भाई कुंवर रघुदेव के यहाँ कैलवाड़ा में कुछ दिनों के लिए चले गये हैं। रही उनके इलाके की बात, तो कुंवरजी ने दिवंगत राणाजी से अलग अपना निजी इलाका लेने से इनकार कर दिया था।

अमिया ने एक ठण्डी सांस लेकर एक छोटा-सा 'हूं' कहा और चुप हो गयी, लेकिन उसकी मुद्रा में कुछ परिवर्तन आ गया था जैसे उसके मुख पर बादल घिर आये हों।

गुणवती अमिया की यह मुखमुद्रा देखकर चौकन्नी हो गयी। उसने

पूछा 'क्या क्या बात है ? एकाएक इतनी गम्भीर क्या हो गयी ?"

"बचपन का भोलापन नही गया है बड़ी सरकार ! कुवरजी के बेटे-बेटी है न ?

"कह तो चुकी हू कि है ।' गुणवती बोली ।

"अपने सौतेले भाई का मोह किसी को अपने बेटो के मोह से अधिक हो सकता है, ऐसा तो न मैंने कही देखा है, न सुना है ।" कुटिल भाव से अमिया बोली ।

कुछ कडे स्वर मे गुणवती बोली 'मैं समझी नही, साफ साफ क्या नही कहती ?

कवर चूण्डाजी ने अपने लिए कोई इलाका नही लिया । अपने लिए न सही अपने बेटो के लिए तो उन्हे इलाका लेना ही चाहिए था । कुवर चूण्डाजी समर्थ है भीलो के प्रदेश पर उन्होने कब्जा भी कर लिया है । वह उस प्रदेश पर अपना स्वतत्र राज्य स्थापित कर सकते हैं, यह भी वह नही कर रहे है । मुझे तो यह सब बडा विचित्र लगता है । आदमी की मति का कोई ठिकाना नही ।'

गुणवती तडप उठी "चुप रहो । कुवर चूण्डाजी आदमी नहा है देवता है । जाओ यहा से । मैं कुवरजी के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं सुनना चाहती ।

पराजित सी सर झुकाये हुए अमिया चली गयी ।

लेकिन अमिया गुणवती के अन्दर एक तूफान-सा उठाकर चली गयी । अमिया के जाने के बाद गुणवती बहुत देर तक सोचती रही । उसने कई बार विभिन्न लोगो से सुना था, पता भी था कि आदमी की मति का कोइ ठिकाना नही । चूण्डाजी मे व्यक्तिगत रूप से स्वार्थ नहीं हो सकता है, निस्पृहता हो सकती है लेकिन अपने पुत्रो के प्रति ममता भी तो प्रश्न आ जाता है । पुत्र के प्रति ममता का रूप वह माता होने के नाते अच्छी तरह जानती थी कुवर चूण्डाजी सीसोदिया के सिरमौर बन गये । मेवाड राज्य के समस्त सामन्त, समस्त राजकर्मचारी मेवाड राज्य की समस्त प्रजा एक तरह से चूण्डा की भक्त बन गयी थी । यहाँ तक कि वह स्वय भी चण्डाजी की भक्त थी । राणा मुकुलजी का अपना कोई अस्तित्व

चण्डा और उनके सौ सनिक भीलनी अँचली के साथ राजा ग्राम पहुचे।
वह और उनके सैनिक बेतरह थके हुए थे। जहाँ उन्होने पडाव डाला था,
उस अचल का वे सन्ध्या के समय धुधलके मे निरीक्षण नही कर सके थे।

सुबह के समय अचली कुछ भीलनिया और एक दो भीलो को साथ
लेकर कुवर चूण्डा के पडाव म पहुची। उस समय चण्डाजी गाँव के पास
से बहनेवाली छोटी सी नदी म स्नान करके पूजन कर रहे थे। अचली
ने उसी नदी के किनारे चूण्डाजी के पडाव की व्यवस्था कर दी थी।
पूजा करके चूण्डा उठे और अचली तथा उसकी सहेलिया के आने का
समाचार पाकर स्वय अँचली से मिलने निकले। चण्डा के आते ही अँचली
ने भूमि पर मस्तक नवाकर चूण्डा का अभिनन्दन किया, "मैं सेवा म
उपस्थित हु महाराज, आज्ञा करें।

चण्डा ने मुस्कराते हुए कोमल भाव से कहा, "हम लोग दो एक दिन
यहाँ रुककर विश्राम करना चाहते है। तुम्हारे बापू कब तक लौटेंगे यहाँ ?

आज साय तक या कल भोर तक।

चूण्डा भूमि पर बैठ गये। उन्होने अँचली को भूमि पर बैठने का
सकेत किया और कहा, 'तुमने कल बताया था कि यहा पश्चिम म सिहो
का वन है। यहाँ से कितनी दूर होगा वह वन ?

यहाँ से चार पाच कोस के बाद यह पठार समाप्त हो जाता है।
उधर पठार के नीचे फिर घने और अगम्य वन, और वहाँ से सिहो का
राज्य आरम्भ होता है। मानुस को वहाँ जाने का साहस नहीं होता।
जो वहाँ गया फिर वापस नही लौटा। सिह उसे फाडकर खा गये।

चूण्डाजी कुछ देर तक सोचते रहे। फिर बोले, अगर मैं पचास
सैनिको का पडाव दो चार माह के लिए यहाँ डाल दू तो तुम्हारे लोगो
को कोई असुविधा तो नही होगी ?

अँचली मुस्करायी, "महाराज तो स्वामी है, सुविधा असुविधा का
ज्ञान तो मुझे नहीं है महाराज! बापू से मिलकर उनसे बात कर लें।
बस हम लोगो की यह अतिम बस्ती है—शिकार तो खूब मिलता है
लेकिन ऊबड-खाबड प्रदेश है। असुविधा आपके लोगो को हो सकती
है। और वह अकारण ही खिलखिलाकर हस पडी।

ने पूरब की ओर प्रस्थान किया।

दसवाँ परिच्छेद

सामन्त कम्मल के तत्त्वावधान में राधा को वसाने तथा उस क्षेत्र को विकसित करने का काम चूण्डा के पूर्व दिशा की ओर प्रस्थान करने के बाद तेजी के साथ चलने लगा। अँचली और चम्मन ने पूरब से भील परिवारों को भेजना आरम्भ कर दिया। पचास मेवाड़ी सैनिकों तथा भीलों ने मिलकर कच्चे घर और झोपड़ियाँ का खड़ा करने का काम उठा लिया था। अरावली से पत्थरों को काटकर एक छोटे किले का निर्माण भी आरम्भ हो गया सामन्त कम्मल के निवास के लिए।

उधर कुंवर चूण्डा राधा से बारह-तेरह कोस पर गिराठ ग्राम में अँचली और चम्मन को छोड़कर अपने सैनिकों के साथ आगे बढ़ गये। चूण्डा ने आगे बढ़ने से पहले अँचली से कहा "हम लोग इसी मार्ग से राधा होते हुए चित्तौड़ वापस होंगे। महीना डेढ़ महीना तक लग जायगा लौटने में। सामन्त कम्मल से कह देना कि चित्तौड़ पहुँचकर मैं धन की व्यवस्था कर दूंगा।

चांदी और तांबे की खानों के पास तक कुछ थोड़े से ही गुजर सैनिक पहुंच पाये थे। लेकिन उनमें से कुछ तो चूण्डाजी के सैनिकों के हाथों मारे गये और कुछ मारवाड़ की ओर भाग गये। प्राय पन्द्रह बीस गुजर सैनिक बच थे और उन्होंने कुंवर चूण्डाजी की सेवा स्वीकार कर ली।

राधा होते हुए चूण्डाजी अपने सैनिकों के साथ चित्तौड़ वापस आये। प्राय डेढ़ माह लग गया था चूण्डा को चित्तौड़ लौटने में।

चूण्डाजी के चित्तौड़ वापस आते ही सारा सीसोदिया में एक हर्ष और उल्लास की लहर दौड़ गयी। फागुन मास समाप्त हो चुका था। वायुमण्डल में एक तरह का उल्लास था, मस्ती थी। बड़ा भव्य स्वागत हुआ चित्तौड़ में चूण्डाजी का।

चित्तौड़ पहुंचकर चूण्डाजी ने तत्काल अपने वापस आने की सूचना

राजमाता गुणवती को भेजी। गुणवती स्वय राणा मुकुनजी को लेकर चूण्डाजी से मिलने आयी। कुछ देर तक राजमाता गुणवती को अपने भीला के प्रदेश व अभियान का विवरण सुनाकर चूण्डाजी वहा से अपने निवास की ओर चले गये।

पर्दे के पीछे बैठी अमिया दासी की बात सुन रही थी। चूण्डा के चले जाने के बाद कुछ देर रुककर वह गुणवती के सम्मुख प्रकट हुई। बडे भोलेपन के साथ उसने पूछा, "कुवर चूण्डाजी आये थे क्या ?"

'हा," गुणवती बोली, "मेवाड को निरापद करके वह लौट आये।'

'बडा भव्य स्वागत हुआ है चित्तौड म उनका। मैं भगवान भूतनाथ के मदिर स आरती और पूजन करके लौट रही थी, तभी उनके दर्शन हुए थे। बडे तेजस्वी और वीर पुरुष दिखे वह।"

गुणवती अपने उल्लास को न दबा सकी। गर्व से तनकर अपनी बात उसने आगे बढायी "भीला के प्रदेश म पश्चिम की ओर जो सिहो का वन है वह गुजर प्रदेश तक फैला है। उस वन से मिला हुआ भीलो का अतिम गाव है राश्रा। राश्रा के भीलो का सरदार कम्मल है। तो राश्रा म बडी मोर्चाबन्दी करके तथा सरदार कम्मल को मेवाड के सामन्त के रूप म तिलक करके वापस आये है कुवर चण्डाजी। वहा स पूरब तक फैले हुए भीलो के प्रदेश को सगठित करके मेवाड राज्य की शक्ति बढा रहे है।'

यह तो बडा शुभ समाचार है, मेवाड का एक शक्तिशाली इलाका बन जायगा वह प्रदेश। बडा लम्बा चौडा प्रदेश है वह—मन्दौर के माग मे मिलता है। सुना है मेवाड के शासन म सिर्फ मार्ग के आसपास का ही क्षेत्र है बाकी क्षेत्र मेवाड के अधिकार स बाहर है। तो कुवरजी उस प्रदेश के इलाकेदार बनेंगे या स्वतन्त्र रूप स उसके शासक बनेगे ?"

अमिया के इस प्रश्न ने गुणवती को चक्कर म डाल दिया, कुछ सोचकर वह बोली, "यह तो मैंने पूछा ही नही, इस प्रश्न के पूछने का अवसर ही नही था। लेकिन तुम्हारा यह प्रश्न क्या ?"

अमिया ने बहुत धीमे स्वर मे, जैसे वह कोई रहस्य की बात बता रही हो, कहा, 'बडी सरकार, कुवरजी का जैसा भव्य स्वागत हुआ है चित्तौड म, उससे तो मैं अवाक रह गयी। हरेक के मुह म चूण्डाजी का

गुणगान हो रहा था। जैसे राणा मुकुलजी को कोई जानता ही न हो! एकछत्र अधिकार है कुंवरजी का मेवाड़ पर, लेकिन लेकिन "अमिया कहते कहते रुक गयी।

"लेकिन क्या, जरा मैं भी तो सुनू! निस्संकोच अपनी बात कहो!" गुणवती बोली।

"सोच रही हूं मेवाड़ के सामंत वे रूप में कम्मल के तिलक करने का अधिकार मेवाड़ के राणाजी का है कुंवर चण्डाजी का नहीं। लेकिन सत्ता के मोह में बहक जाना ही मनुष्य की कमजोरी होती है। इसमें मैं कुंवरजी का दोष नहीं देती।

राजमाता गुणवती ने अमिया की बात सुनी फिर उसी धीमे स्वर में उसने कहा ठीक कह रही हो अमिया। कुंवरजी तो ऐसा लगता है, लेकिन देखना का मतिभ्रम हो सकता है। अवसर पाकर मैं कुंवरजी से बात करूंगी। उनके मन में किसी तरह का छल कपट नहीं है, अभी स्थिति संभाली जा सकती है।

मन्दार में अमिया के आने की खबर चण्डाजी को दूसरे दिन मिली। अमिया के साथ और कोई सरदार या सैनिक नहीं आया था। इस खबर के साथ ही चण्डाजी ने अमिया गोली के सम्बन्ध में पूरी जानकारी तत्काल प्राप्त कर ली थी। स्पष्ट ही अमिया का आना उनको अच्छा नहीं लगा। इतना ही नहीं तब रणमल की उपस्थिति ही उन्हें अच्छी नहीं लग रही थी। लेकिन रणमल गुणवती के पिता थे। वृद्ध आदमी नाते रिश्ते में बड़े हुए, रणमल से चूण्डा को कोई भय नहीं था। लेकिन अमिया उनके लिए अनजानी थी।

चित्तौड़ की व्यवस्था फिर पूर्ववत् चलने लगी। राणा मुकुलजी के सिंहासन की बगल में कुंवर चूण्डाजी का आसन था, और वही मेवाड़ का शासन चलाते थे। पिछले दो ढाई महीने से चूण्डा की अनुपस्थिति में राजमाता गुणवती मेवाड़ का शासन चला रही थी और अपनी सहायता के लिए उसने अपने पिता रणमल को अपने सलाहकार के रूप में रख लेना आरम्भ कर दिया था। चूण्डा के आने के बाद भी राव रणमल दरबार में बैठने लगे और अपनी आदत के अनुसार सलाह भी

देन लग जिम चूण्डाजी ग्रनगुनी वर देत थे। रणमल वा मवाड के मामल म यह ग्रान्तरिक हस्तक्षेप उह ग्रच्छा नही लगता था। एक दिन चूण्डा न एकान्त पाकर गुणवती स कहा, "राजमाताजी, राव रणमलजी ग्रापक पिता ह ग्रार राणा मुकुलजी के नाना हैं। लकिन वह राठोर ह सीसो-दिया का हित राठोरा का हित नहीं हो सकता।'

ग्राश्चय म राजमाता गुणवती न कहा, 'इसका मतलब मैं नहीं समझ पायी कुवरजी।'

शान्त भाव म चूण्डा न उत्तर दिया, 'राव रणमल का दरबार म बैठना ग्रौर मरे काय म हस्तक्षप करना मुझे ग्रच्छा नहीं लगता। दरबार म उनका बैठना मैं सह सकता हूँ। लकिन वह ग्रापक पिता ह। ग्रगर ग्राप स्वय उह दरबार म न बठन का सकत कर दें तो ज्यादा उचित होगा।

ग्रविश्वास ग्रौर ग्रनिश्चय की जो एक चिनगारी ग्रमिया द्वारा सुलगा दी गयी थी वह धीरे धीरे सुलगकर ग्रग्नि का रूप धारण कर रही थी। गुणवती मौन भाव म कुछ दर तक चूण्डाजी को देखती रही, फिर उसक स्वर म ग्रधिकार ग्रौर सघप की कठोरता ग्रा गयी। उसन कहा मेरे पिता की सलाह ग्रापको उचित नही लगती लकिन पिछल दो ढाई महीने ग्राप यहाँ नही थ, ग्रौर व्यवस्था मेरे हाथ म थी, म उनकी सलाह लेती रही ग्रार उनकी सलाह म मुझे तो कोइ ग्रनौचित्य नहीं लगा।'

राजमाता से इस उत्तर की ग्रपक्षा नहीं थी चण्डाजी को। वह चौंक उठे। राणा मुकुलजी का गद्दी पर बठे एक वप स कुछ ग्रधिक बीता था ग्रौर वह एक वप तजी क साथ एक क बाद एक घटित होनवाली घटनाग्रो का वप था। उन्होंन धीरे स हूँ कहा ग्रौर कुछ रुककर वह बोले, 'क्या उचित ह ग्रौर क्या ग्रनुचित है, यह निणय तो ग्रापके हाथ म है क्योंकि ग्राप राणा मुकुलजी की माता है। स्वर्गीय पिताजी मुझ पर कुछ उत्तरदायित्व सौंप गय थ, मैं तो मात्र उन्हीं उत्तरदायित्वों को निभा रहा हूँ। ग्रापको स्मरण होगा कि म ग्रापको वचन द चुका हूँ, जब कभी ग्रापको राणाजी के प्रति मेरे दायित्व ग्रौर कतव्य के सम्बन्ध म शका हो तो ग्राप मुझे सकेत भर कर दें, मैं ग्रपना दायित्व ग्रापको सौंप

दगा।'

गुणवती ने हिचकिचाते हुए कहा, "राजा की तो अभी कोई बात उठायी नहीं है मन, मैं आपको देवता समझती रही हूं अब भी समझती हूं, लेकिन लेकिन '

'आप अपनी बात स्पष्ट रूप से निस्संकोच कहें, निर्णय तो लेने ही होंगे। चूण्डा का स्वर भी कुछ प्रखर हो गया था।

'निर्णय तो लेने ही होंगे' गुणवती ने चूण्डा की बात दोहरायी, 'अच्छा कुंवरजी, आपने भीलों के प्रदेश से लौटकर मुझसे कहा था कि राजा ने एक भील सरदार—क्या नाम है उसका '

कम्मल। चूण्डाजी ने कहा।

'हां कम्मल। कम्मल को मेवाड़ के सरदार के रूप में आपने तिलक किया है। तो मैं पूछना चाहती हूं कि मेवाड़ के सामन्त के रूप में किसी व्यक्ति का तिलक करना क्या आपका अधिकार है? या वह अधिकार केवल राणाजी का है?

'अधिकार तो केवल राणाजी का है। इसमें जल्दी करने में शायद मुझसे कुछ भूल हुई है।' कमजोर स्वर में चूण्डा ने कहा।

गुणवती मुस्करायी, लेकिन चूण्डा ने अनुभव किया कि उस मुस्कान में कुछ व्यंग्य और विद्रूप निहित है। गुणवती ने कहा, जल्दी जल्दी में भूल हो जाना तो मानव की कमजोरी होती है। मैं आपका दोष नहीं दे रही क्योंकि यह प्रश्न मैंने नहीं उठाया था। लेकिन कुंवरजी, मैं समझती हूं कि आप अपने लिए कोई दूसरा रास्ता ले लें। आपका परिवार है, आपके बच्चे हैं अपने लिए न सही तो अपने बच्चों के लिए। और मैं तो आपको यहां तक सलाह दूंगी कि आप भीलों के प्रदेश में अपना एक स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लें आप समर्थ हैं।

कुछ क्षण तक चूण्डा मौन रहे फिर उन्होंने दृढ़ता से कहा 'एक बार आपके पिताजी ने भी मुझे यह सलाह दी थी कि मैं अपने लिए कहीं पर स्वतंत्र राज्य की स्थापना कर लूं। उन्होंने मारवाड़ के राठौर सेनिकों की सहायता का भी आश्वासन दिया था। लेकिन मैंने उनका वह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। मेवाड़ के उत्तराधिकारी भाई का प्रश्न

अनौपचारिक दृष्टि से भले ही स्वतत्र हो, लेकिन मेवाड का राजकुल उस मेवाड राज्य के अतगत ही मानता और समझता आ रहा है। राठौरो का अरावली पवत क दक्षिण मे प्रवेश करना मेवाड के सीसौदिया राजपूता के लिए निरापद नही रहेगा। और आज आप भी मुझे यह सलाह द रही है, आपके मन मे शायद मेरे प्रति अविश्वास जाग उठा है।'

"नही-नही ऐसी कोई बात नही है।" गुणवती कमजोर स्वर मे बोली, "आप जसा उचित समझें वैसा करें मुझे आपके प्रति किसी प्रकार की शका नही है।

लेकिन चूण्डा के अदरवाला हठ जाग उठा था "राजमाताजी, मुझम सत्ता के प्रति मोह के स्थान पर एक प्रकार की विरक्ति रही है यह आप अच्छी तरह जानती है। लेकिन शायद आप ठीक कहती है कि मेरा परिवार है, मेरा वश है। अपन वशजा के प्रति भी मरा कुछ उत्तर-दायित्व है। तो मैं भीलो के प्रदेश को अपना दताका स्वीकार करता हू। वह प्रदश साधनहीन है, उस प्रदेश को विकसित करने मे मुझे घोर परिश्रम करना पडगा। उसे विकसित करना और उसे साधनसम्पन बनाना मेरे और मरे वशजा के हाथ की बात है। राजपूता का एक ही बल है, तलवार का बल और असीम साहस और धय! जिस प्रदेश को मैं जीतूगा या अपने वश मे करूगा वह अपन बाहुबल से राठौरा की सहायता मे नही।' और वह उठकर चलन लगा। फिर वह रुका, "राजमाताजी! एक पखवारे मे मै चित्तौड से विदा लन की व्यवस्था कर लूगा। आप अपनी ओर से इस विषय पर मौन ही रहियेगा। जैसे आपका मेरे इस निणय का पता ही नही है, यह निणय स्वय मैंने लिया है। मेर इस निणय की सूचना अपन पिताजी को भी न दें। मेरी दूसरी विनय यह है कि आप राठौरा से सतक और सावधान रह। सीसौदिया और राठौरा के हित न कभी एक रह है, न कभी एक रहगे। और वह वहा स चला गया।

दूसरे दिन दरबार मे कुवर चूण्डाजी ने घोषणा की कि आज से ग्यारहवें दिन एक विशिष्ट दरबार होगा, और उसमे मेवाड राज्य के सुदूर

भागों के सामन्तों को भी अनिवार्य रूप से आमन्त्रित किया गया। इस विशेष दरबार का क्या प्रयोजन हो सकता था, सिवा राजमाता गुणवती के और किसी को इसका आभास नहीं था। निश्चित तिथि पर एक बड़े सामियाने के नीचे वह दरबार लगा। समस्त सामन्तों राजकर्मचारियों, श्रेष्ठियों एवं पण्डितों के एकत्रित होने के बाद कुंवर चूण्डाजी राणा मुकुल जी और गुणवती के साथ दरबार में आये। सिंहासन पर राजमाता और राणाजी को बिठाकर चूण्डाजी ने कहा "उपस्थित सरदारो, पण्डितो और श्रेष्ठियो, एक रूप में कुछ अधिक समय हुआ जब स्वर्गीय राणाजी ने गया के अभियान में जाने के पहले राणा मुकुलजी का तिलक किया था। उस समय उन्होंने मुझसे अपना प्लाका स्वयं निर्धारित करके ले लेने का आग्रह किया था। उस समय मैंने कहा था कि समय आने पर अपना प्लाका मैं स्वयं निर्धारित करके ले लूंगा। समय आ गया है। राजमाता अब इतनी अनुभवी और योग्य हो गयी हैं कि वह राणाजी के हित में मेरे स्थान पर स्वयं मेवाड़ की शासन व्यवस्था संभाल लें। इस बीच मैंने मेवाड़ के उत्तर में सीमा के प्रदेश के एक ग्राम राधा को विकसित करके राधा के इलाके की व्यवस्था कर ली है। उस इलाके को साधन सम्पन्न बनाने तथा उसे और अधिक विकसित करने के लिए मैं अपने अनुयायियों को लेकर अपने तथा उनके परिवारों के साथ वहाँ बसने जा रहा हूँ। आज के पांचवें दिन मैं और मेरे अनुयायीगण यहाँ से प्रस्थान करेंगे। आप लोगों से विनय है कि आप राणा मुकुलजी तथा राजमाता गुणवती की निष्ठा और लगन के साथ सेवा करें तथा उनके आदेशों का पालन करें।

इस घोषणा से दरबार में उपस्थित सब लोग स्तब्ध से रह गये।

कुछ सरदारों ने उठकर कहा, "कुंवरजी चित्तौड़ में रहकर ही आप राधा का विकास और विस्तार करें। हम सब सीसोदिया वंश के सिरमौर को सदा से हैं हम सब आपकी सेवा और सहायता के लिए तत्पर हैं।"

कुंवर चूण्डा ने दृढ़ता भरे स्वर में कहा "सीसोदियों के सिरमौर राणा मुकुलजी हैं मैं नहीं हूँ। मैं आपको यह याद दिलाना चाहता हूँ कि जो

ग्यारहवां परिच्छेद

चित्तौड़ मे चूण्डाजी के जाने के बाद दूसरे ही दिन राजमाता गुणवती और राव रणमल ने मेवाड़ की भावी व्यवस्था पर विचार किया। इस विचार विमर्श मे राव रणमल ने अपने विश्वासपात्र सामन्त बीजा तथा आचार्य सुधाकर को बुला लिया था। अमिया भी राजमाता के आग्रह पर आ गयी थी। इस परामर्श-गोष्ठी मे एक तरह का हर्ष और उल्लास का वातावरण था। राव रणमल ने हंसते हुए कहा, 'राणा मुकुलजी को अब किसी प्रकार का भय नहीं, न उनके हितों को कोई खतरा है। लेकिन मुझे आश्चर्य इस बात पर हो रहा है कि इतना सब कुछ इतना आसानी से इतने सहज भाव से हो कैसे गया ?'

राजमाता ने बड़े सहज भाव से उत्तर दिया, "चूण्डाजी ने मुझे वचन दिया था कि जब कभी उन पर से मेरा विश्वास जाता रहे तो मैं उन्हें सचेत कर दूं। भीलों को पराजित कर विजय करके जब वह वापस लौटे तो मैंने उनसे केवल इतना कहा था कि राधा नामक नये प्रदेश की उन्होंने स्थापना की है तो उसे वह अपना इलाका बना लें, और अगर चाहे तो उसे अपना स्वतन्त्र इलाका भी बना लें।

मैंने भी कुछ महीने पहले उन्हें यह सलाह दी थी कि वह अपने लिए एक स्वतन्त्र राज्य की स्थापना कर लें। मैंने तो यहां तक कहा था कि इस काम के लिए सीसोदिया सैनिकों के साथ राठौर सैनिकों का भी सहयोग देने को मैं प्रस्तुत हूं। लेकिन मेरा प्रस्ताव उन्होंने स्वीकार ही नहीं किया।

अमिया बोल उठी स्वीकार कैसे करते—उनकी आंखें मेवाड़ राज्य पर लगी हुई थीं न!

रणमल ने अमिया को डांटा तू क्या बात कहती है? चूण्डाजी बड़े ही सात्विक और धार्मिक प्रवृत्ति के हैं, उन पर किसी तरह का आरोप लगाना पाप होगा।

अमिया ने तमककर कहा, 'मनुष्य के मन में कितना पाप भरा है, कोई नहीं जानता! मुझे तो मूर्खा सा मैंने स्पष्ट शब्दों में कह दिया।

राजमाता गुणवती ने ठण्डी सांस भरकर कहा, "कुंवरजी के मन में क्या है, शायद वह स्वयं नहीं जानते ! वैसे मैं अब भी यह अनुभव करती हूं कि कुंवरजी के हाथों राणाजी का और मेवाड़ राज्य का कोई अनिष्ट और अहित नहीं होता।"

थोड़ी देर तक एक मौन छाया रहा, जिसे सरदार बीजा ने तोड़ा, "कुंवरजी के जाने के बाद चित्तौड़ नगर में एक तरह का विक्षोभ फैल गया है। आज प्रातः मुझे यह समाचार मिला है कि गढ़ की रक्षा करने के लिए जो अहेरिया सैनिक नियुक्त हैं, वे सब कुंवरजी के पास चले जाने की सोच रहे हैं। मुझे तो भय है कि चित्तौड़ और मेवाड़ की जनसंख्या में निरन्तर कमी होते रहने से राज्य की शक्ति भी क्षय होती जायगी। इस क्षय को रोकने का प्रयत्न करना होगा।

राजमाता गुणवती चिन्तित सी कह उठी, "यह तो बुरा होगा !" और फिर विवश भाव से उन्होंने अपने पिता पर दृष्टि डाली।

सुधाकर मुस्कराये, "लेकिन अभी कोई चिन्ता की बात नहीं दिखती। जहां तक अहेरिया का प्रश्न है, वे चले जायें तो चले जायें। जैसलमेर के भट्टी राजपूत वहां से परेशान हो गये हैं वे कहीं अन्यत्र बसना चाहते हैं। अभी जब मैं मन्दौर गया था तब भट्टियों का एक सरदार मुझसे मिला था, उसने मेवाड़ में आकर बसने की इच्छा प्रकट की थी। लेकिन कुंवर चण्डाजी के भय और हठ के कारण मैंने उनसे यह बात नहीं कही।

कुछ थके स्वर में गुणवती बोली, "यह सब तो बाद की बात है, अभी तो राणाजी को स्वतन्त्र रूप से मेवाड़ तथा चित्तौड़ में स्थापित करने का प्रश्न है। कुंवरजी की छत्रछाया चली गयी जब तक वह यहां थे मैं निश्चिन्त थी।'

कुछ सोचकर राव रणमल बोले, "मैं समझता हूं कि राणाजी का विधिवत एक बड़ा दरबार बुलाया जाय एक सप्ताह के अन्दर ही। चित्तौड़ में बाहर से जो सामन्तगण चूण्डाजी के निमन्त्रण पर आये थे, वे अभी यहीं मौजूद हैं। तो उन्हें तुम यहां रोक लो बेटी ! दरबार लगने से पूर्व राणाजी की सवारी धूम धाम से निकाली जाय, और उस सवारी के साथ सभी सामन्त, राजकर्मचारी, राजपरिवार के सदस्य तथा चित्तौड़

की समस्त सेना हो। नागरिकों पर तथा सवारी के जुलूस में भाग लेने वालों पर उस सवारी का बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ेगा। सुबह सवारी निकले तथा संध्या के समय दरबार हो।" और उसके बाद आचार्य सुधाकर से उन्होंने कहा "इस आयोजन के लिए शुभ मुहूर्त निकालो।"

आचार्य सुधाकर ने हिसाब लगाया, फिर बोले, "आज के चौथे दिन बड़ा शुभ और मंगलमय मुहूर्त है।"

प्रायः एक घण्टे तक यह परामर्श चलता रहा।

चार दिन बाद राणाजी की सवारी प्रातः आठ बजे निकली। चित्तौड़ की समस्त सड़कें अच्छी तरह सजायी गयी थीं। स्थान-स्थान पर मेवाड़ की राजपताकाएँ फहरा रही थीं। सबसे आगे तुरही द्वारा मजीरे बजानेवालों तथा मेवाड़ की विरदावली का बखान करनेवाले चारणों का मण्डल था। उनके पीछे नर्तकियों का समूह था, जो आरती के थालों के साथ राणा मुकुलजी की आरती उतार रही थीं। इन नर्तकियों के पीछे राजछत्र धारण किये राणा मुकुलजी हाथी पर सवार चल रहे थे। और राणा मुकुलजी को गोद में लिये हुए राजमाता गुणवती थीं। राजमाता गुणवती के हाथी के पीछे एक और हाथी पर मेवाड़ का राजपरिवार था।

मेवाड़ के राजपरिवार के पीछे पीछे मेवाड़ के इलाकेदार, सामन्तगण तथा अन्य लोग अपने अपने पदों के अनुसार घोड़ों पर सवार थे। उनके पीछे राज्य मन्त्री एवं विशिष्ट कर्मचारीगण थे। राजकर्मचारियों के पीछे मेवाड़ के चित्तौड़गढ़ में उपस्थित समस्त सैनिकों के दल थे।

मेवाड़ के इस भव्य जुलूस के पीछे रणमल का हाथी था जिस पर राठौरों की पताका फहरा रही थी और उनके हाथी के पीछे रणमल के साथ आये हुए कुछ सरदार अपने ऊँटों पर सवार चल रहे थे।

यह जुलूस मेवाड़ के राजभवन से निकलकर चित्तौड़ के बाजारों से होता हुआ चित्तौड़गढ़ के फाटक तक गया। गढ़ के फाटक पर राणा मुकुलजी के हाथों पताका फहरायी गयी। और तब यह जुलूस नगर के दूसरे भागों तथा मार्गों से होता हुआ राजभवन वापस आया।

राणा मुकुलजी के इस भव्य जुलूस को देखने के लिए मेवाड़ की

समस्त जनता उमड़ पड़ी थी। अदम्य उत्साह था नागों में, राणाजी के प्रति अनन्य भक्ति की भावना जाग उठी थी। प्राय तीन घण्टे बाद इस जुलूस का विसर्जन हुआ। जुलूस के विसर्जन के बाद फाटक पर ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा दी गयी, भिखारियों को भोजन कराया गया।

मुहूर्त के अनुसार सन्ध्या समय चार बजे दरबार लगा। प्रचलित प्रथा के अनुसार सामन्तों एवं राजकर्मचारियों ने अपना अपना आसन ग्रहण किया। राजमाता गुणवती राणा मुकुलजी को गोद में लेकर पूर्ववत सिंहासन पर बैठीं। राजसिंहासन के पीछे रणमल का सिंहासन था। दाहिने राजसिंहासन के दायीं ओर के जिस आसन पर बैठकर कुंवर चूण्डा जी सरदार की शासन-व्यवस्था करते थे वह रिक्त था।

सब लोगों के आसन ग्रहण कर लेने के बाद राजमाता गुणवती ने दरबारियों को सम्बोधित करते हुए कहा, 'कुंवरजी के राज्य छोड़ जाने के बाद मेवाड़ की व्यवस्था अपनी योग्यता तथा क्षमता के साथ चलाने का भार मुझ पर आ पड़ा है। तो विवश होकर कुंवर चूण्डाजी का स्थान मुझे ही ग्रहण करना पड़ेगा। राणा मुकुलजी अकेले ही राज-सिंहासन पर बैठेंगे। भगवान एकलिंग उन्हें बल प्रदान करें।' और राजमाता गुणवती राणा मुकुलजी को राजसिंहासन पर अकेले ही छोड़कर चूण्डाजी के रिक्त आसन पर बैठ गयीं। राणा मुकुलजी की धाय मानवती राजसिंहासन के पीछे राणा मुकुलजी की देखभाल करने के लिए खड़ी हो गयी।

कुंवर चूण्डाजी के जाने के बाद मेवाड़ के राज-काज की व्यवस्था में कुछ महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होने अनिवार्य थे। राज्य के सामन्तों तथा मन्त्रि-परिषद के सदस्यों ने अपने अपने सुझाव रखे, और उन पर विचार विमर्श आरम्भ हुआ। इस विचार विमर्श में काफी समय लगा, और उस समय छः साल वय का बालक मुकुलजी बेहद थक चुका था। उसे नींद आने लगी थी। धाय मानवती राजसिंहासन पर बैठ नहीं सकती थी और खड़े-खड़े वह मुकुलजी को सँभालने में असमर्थ थी। राव रणमल बड़े कौतूहल से यह सब देख रहे थे।

एकाएक नींद का एक गहरा झोंका मुकुलजी पर आया। मानवती

बड़ी मुश्किल से मुकुलजी को सँभाल सकी। सभा की कार्यवाही कुछ समय के लिए रुक गयी। राव रणमल अपने आसन से उठ खड़े हुए। उनके उठते ही सब लोगों का ध्यान उनकी तरफ आकर्षित हुआ। राव रणमल ने मुस्कराते हुए कहा, "राणा मुकुलजी अभी अबोध शिशु हैं। बिना किसी के सहारे वह राजसिंहासन पर नहीं बैठ सकते। मेरी बेटी राजमाताजी को मेवाड़ की व्यवस्था चलाने के लिए अलग आसन पर बैठना पड़ रहा है। राणाजी को राजसिंहासन पर सँभालना उतना ही महत्त्वपूर्ण कार्य है जितना कि राज्य की शासन-व्यवस्था को सँभालना। अपने दौहित्र राणाजी का राजसिंहासन पर सँभालने का भार मैं अपने ऊपर लेता हूँ।' और अपनी सफेद दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए उन्होंने अपनी बात इस तरह समाप्त की, "इस बूढ़े नाना का भी तो अपने नाती के प्रति कुछ कर्त्तव्य है।" इतना कहकर राणा मुकुलजी को अपनी गोद में लेकर वह राजसिंहासन पर बैठ गये।

इतने भोलेपन के साथ यह बात कही गयी थी तथा इतनी तेजी के साथ राव रणमल सिंहासन पर बैठ गये थे कि किसी को कुछ सोचने समझने का अवसर ही नहीं मिला। एक हर्षध्वनि हुई और फिर विचार विमर्श पूर्ववत् चलने लगा।

दरबार समाप्त हुआ। सब लोग दूसरे-तीसरे दिन चित्तौड़ से चले गये।

लेकिन अब मेवाड़ की राज्य-व्यवस्था धीरे-धीरे बदलने लगी। मेवाड़ के शासन का रूप भी बदलने लगा, इस खूबी के साथ कि किसी को इस परिवर्तन का पता तक नहीं चला। हर मामले में अनुभवहीन राजमाता गुणवती अपने पिता की सलाह लेने लगीं। और रणमल बड़े तटस्थ भाव से गुणवती को अपनी सलाह देने लगे। राव रणमल बड़ी कुशलतापूर्वक मेवाड़ और विशेष रूप से चित्तौड़ की जनता एवं सामन्तों का विश्वास प्राप्त करते जा रहे थे। हर तरफ परिवर्तन हो रहे थे और इस परिवर्तन के क्रम में चित्तौड़ और मन्दोर के बीचवाला मार्ग खुल गया था। इस मार्ग के खुलने के दुष्परिणामों की कल्पना करने की योग्यता किसी में नहीं थी।

मन्दौर और चित्तौड़ के बीचवाला मार्ग खुल जाने के फलस्वरूप मारवाड़ के छोटे छोटे सरदारों के दल मेवाड़ आने आरम्भ हो गये। ये दल सपरिवार आ रहे थे, अपनी चल सम्पत्ति को ऊंटों पर लादे हुए। कुंवर चूण्डा के साथ जो सैनिक एवं सामन्त सपरिवार मेवाड़ से राज्य चले गये थे, उनके घर द्वार खाली और उजाड़ पड़े थे। प्रायः दो सौ सैनिकों और सामन्तों के चित्तौड़ से राज्य चले जाने के बाद राज मिस्त्री, बढ़ई लुहार तथा छोटे छोटे व्यापारियों का दल भी चित्तौड़ से राज्य चला गया था। उन्हें राज्य एवं उसके निकटवर्ती क्षेत्रों के विकास में हाथ बँटाना था। उनके अभाव की पूर्ति के लिए रणमल ने अपने अनुयायियों द्वारा मारवाड़ से दस्तकारों और व्यापारियों को भी आमन्त्रित कर लिया।

ऐसा दिखता था कि सीसौदिया और राठौरों का भेदभाव जाता रहा है। चूण्डा के जाने के बाद चित्तौड़ में एक तरह की जो रिक्तता आ गयी थी उसकी पूर्ति होने लगी। चित्तौड़ में धीरे धीरे उल्लास तथा उत्सव, राग तथा रंग का वातावरण दिखने लगा। राणा लाखा के गया-अभियान में जो जनसंख्या का ह्रास हुआ था, वह घाव भी भरने लगा था। पिछले डेढ़ दो वर्षों में मेवाड़ में जो उदासी की भावना व्याप्त हो चली थी, वह अब दूर हो गयी। सुख और शान्ति की एक लहर सी आ गयी थी मेवाड़ के शासन में। और इस सबसे राजमाता गुणवती अतिशय प्रसन्न थी। राव रणमल राणा लाखा से सात आठ साल ही छोटे थे। इस तरह राणा लाखा और राव रणमल की अवस्था में कोई विशेष अन्तर नहीं था, और लोगों को ऐसा लगता था कि राव रणमल के चित्तौड़ में आने से राणा लाखा के अभाव की पूर्ति हो गयी है। कार्य समाप्त होने पर दरबार में राजमाता और राणा मुकुलजी के जाने के बाद हँसी मजाक, भांग और मदिरा का दौर आरम्भ होता तो आधी रात तक चलता रहता। इस चहल पहल और राग रंग में सीसौदिया और राठौर सामन्त समान रूप से भाग लेते थे।

लेकिन ऊपर से सबकुछ ठीक होते हुए भी मेवाड़ की व्यवस्था में जो महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होते जा रहे थे उनके पीछे किसमें कौन-सी भावना काम कर रही है—इसका किसी को पता नहीं था। पूर्वनियोजित ढंग से

रणमल और अमिया न जो कुछ चाहा वह हो चुका था, लेकिन मनुष्य क मन की अनजानी तहों म कौन कौन से कलुप छिपे है, इसका ज्ञान कभी कभी अकलुप व्यक्तियो को भी नही हो पाता ।

जहा एक ओर चित्तौड नगर की श्री शोभा और सम्पन्नता तजी के साथ बढ़ रही थी वही नगर म अपराधो की वृद्धि तजी के साथ हो रही थी। बाहर स दिन दहाड सशस्त्र लुटरो के समूह घुस आत थ और नागरिको को लूटकर ले जात थे। जौहरियो और सम्पन्न व्यापारियो को अपनी सुरक्षा की अलग व्यवस्था करनी पडती थी।

चित्तौड की नित्य बिगडती हालत से जितनी चिन्ता चित्तौड क नागरिको को थी उसस भी अधिक चिन्ता राजमाता गुणवती को थी। गढ के अधिकाश अहेरिया रक्षक गजा चले गये थे। राजमाता गुणवती न रणमल स परामर्श किया। रणमल न सलाह दी बेटी, उस दिन सुआकर न कहा था कि जसलमर के भट्टी राजपूत यहा आकर बसने को उत्सुक है। य भट्टी अहेरियो स अधिक नमकहलाल और वीर है मुझे मालूम है। चित्तौडगढ की और नगर की रक्षा करन म व समर्थ होग।

विवशता के भाव स गुणवती बोली यही करना होगा, चित्तौड की रक्षा करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। मैंन मन आज्ञा द दी है कि चित्तौडगढ का फाटक बन्द रह, जिसस लुटरो के दल प्रवेश न करने पायें। जाच पडताल क बाद ही चित्तौड म किसी का प्रवेश सम्भव है।

रणमल न उसी दिन आचार्य सुआकर को अपन साथ ही भट्टियो को लान क लिए रवाना कर दिया।

बारहवां परिच्छेद

मानवता के उ मुक्त वातावरण म अनादिकाल स अपना जीवन व्यतीत करनेवाल भीलो के लिए आज सम्यताओ ने कृषिप्रधान और परिश्रम स युक्त ग्रामीण अथवा नागरिक जीवन को जिस हम मानव विकास का

अँचली अपने अनजाने ही चूण्डा से प्रेम करने लग गयी थी।

इक्कीस बाईस वर्ष की युवती, फूटता हुआ यौवन, उमड़ती हुई यौवन की उमंग, सुगठित शरीर। अँचली अपने पिता की अकेली संतान थी। भीलों के अनुसार कुछ लम्बी-सी, लेकिन वैसे मझोले कद और गहरे ताम्र वर्ण की। उसका शरीर ही लचीला तथा गठा हुआ नहीं था, उसका चेहरा भी गठा हुआ था। दूर दूर के न जाने कितने भील युवक उससे विवाह करने के लिए उत्सुक थे। लेकिन अँचली में विवाह के प्रति किसी तरह का उत्साह ही नहीं था। शिकार के अलावा उसे नाचने गाने का शौक था। दिन हँसी खुशी और उल्लास में बीत जाता था। अँचली को अभी तक अपने मन का मीत नहीं मिला था।

उस दिन जब उसने कुँवर चूण्डा को प्रथम बार देखा तथा उसे चूण्डा का परिचय मिला तो उसे ऐसा लगा कि उसके मन का मीत सहसा मिल गया था। चूण्डा से मिलकर उसके मन में एक तरह की गुदगुदी सी जाग उठी थी।

शरीर की गुदगुदी और मन की गुदगुदी में एक तरह का अंतर हो सकता है। शरीर की गुदगुदी जल्दी मिट जाती है वह भौतिक होती है, लेकिन मन की गुदगुदी भावनात्मक होने के कारण कभी कभी चिरस्थायी हो जाती है।

राधा में बसे हुए भीलों और मेवाड़ से आये हुए राजपूतों के साथ वहाँ एक मिलीजुली बस्ती बनानेवाले चूण्डा की परिकल्पना को साकार करने के प्रयास में योगदान करने के लिए उसने अपने पिता को पूर्ण राजी कर लिया था। उसका एकमात्र कारण था अँचली के व्यक्तित्व में एक तरह की मानसी शक्ति—निश्छल, निर्दोष और पवित्र।

अँचली में प्रकृति की कठोरता के साथ साथ कला का सौन्दर्य भी था। शिकार और कठोर जीवन के साथ-साथ अँचली में नृत्य और संगीत का पागलपन सा था। वह शक्ति की साकार प्रतिमा थी। उसने जैसे रूप के साथ-साथ वह शुभ्रवसना वीणावादिनी सरस्वती भी थी।

अँचली के लिए चूण्डा मन के मीत के रूप में ही नहीं जीवन के आराध्यदेवता के रूप में आ गये थे। विश्वास समर्पण और आराधना

—इन्हीं भावनाओं पर मानव समाज की स्थापना है। और समाज की स्थापना का मूल अवयव है नारी। अनादिकाल से नारी का समस्त जीवन समर्पण का जीवन रहा है। बचपन में पिता, युवावस्था में पति और वृद्धावस्था में पुत्र—स्त्री हरेक अवस्था में सहारा ढूँढती रही है। लेकिन जितना सहारा वह लेती है उससे कहीं अधिक सहारा वह देती है, समर्पण के रूप में।

चित्तौड़ से अन्तिम विदा लेकर चण्डाजी जब अपने चुने हुए अनुयायियों के साथ राजा पहुँचे, शाम ढल चुकी थी और अँधेरा घिरने लगा था। भीलों की आबादी अपनी झोपड़ियों में सिमट आयी थी और वे लोग नटवर मान की तैयारी कर रहे थे।

उस बिखरी हुई आबादी वाले ग्राम में आहट ही सुरक्षा का मूल साधन थी। उन भीलों की वन्य पशुओं से सतर्कता और सुरक्षा का मूल साधन है पैरों की आहट।

चित्तौड़ से राजा पहुँचने में सबसे पहले भीलों की बस्ती पड़ती है, फिर पूर्व की ओर राजा होकर बहनेवाली नदी के तट पर भीलों की बस्ती से प्रायः एक कोस की दूरी पर उन बीस राजपूतों की बस्ती थी, जिन्हें चण्डाजी पिछले अभियान में वहाँ छोड़ गये थे। इस बस्ती में अभी चहलपहल थी, वहाँ प्रकाश का समुचित प्रबन्ध था। लोग वहाँ हँस-गा रहे थे, भील जैसे उस आवाज के अभ्यस्त हो गये हों—उस ओर किसी का ध्यान तक नहीं जाता था।

एकाएक अँचली चौंककर उठ बैठी। उसने कम्मल से कहा, "बापू, लगता है बहुत सारे लोग आ रहे हैं दक्षिण से।"

दिन भर का थका हुआ कम्मल, उस नींद सता रही थी। लेटे-लेटे उसने कहा, "चुपचाप सो जा, लोग तो आते ही रहते हैं। यह राजा क्या बस रहा है, जान आफत में आ गयी है सारी सुख शान्ति समाप्त हो गयी है।"

अँचली लेटी नहीं, दक्षिण से आती उस आहट पर जैसे उसके चिपक गये हों। इन बातों में अँचली की शायद एक नैसर्गिक थी। लेकिन के स्थान पर वह उठकर खड़ी हो गयी, और

आनार म बनी सामन्त कम्मल की भापडी के मुख्य द्वार पर जाकर खडी हो गयी। प्राय पद्रह बीस मिनट तक वह खडी-खडी चित्तौड से राधा आनवाली पगडण्डी की ओर आखें गडाये रही। और फिर वह दक्षिण की ओर तीर की भाति भागी। प्राय चार पाच सौ गज तक वह भागती रही जब उसन स्पष्ट देखा कि घोडे पर सवार चण्डाजी चले आ रहे ह और उनके पीछे पीछे बहुत स लोग घोडो पर सवार हैं। चण्डाजी के घोडे के आगे भूमि पर उसने मस्तक नवा दिया। चण्डाजी अपने घोडे से उतर पडे उन्होंने अँचली के मस्तक पर हाथ रखकर उसे उठा लिया।

अँचली के सारे शरीर म पुलक की एक लहर दौड पडी, हर्ष स भीगे हुए स्वर म उसने कहा, तुम महाराज ! सो गात तुम ! मेरे मन ने मुझे धोखा नहीं दिया बापू के मना करने पर भी म दौडी आयी हूँ। चलो।

चण्डाजी ने अपने साथवाले भृत्य को सकेत किया उसने उनके घोडे की लगाम अपने हाथ म ले ली। चण्डाजी अँचली के साथ पैदल ही गाव की ओर बढे। उन्होंने कहा, 'मेरे साथ करीब एक सौ आदमी हैं।

अरे बाप रे इतने सारे आदमी !" फिर मुस्कराते हुए उसने कहा कोई बात नहीं महाराज ! आपके मनिरा ने पूरब म और नदी के उत्तर म भूमि समतल कर दी है। बडी आसानी म पडाव पड जायगा।"

अँचली की मुस्कराहट मानो चूण्डा म प्रतिबिम्बित हो उठी उनके गम्भीर और आच्छादित मुख पर भी एक हल्की सी मुस्कराहट आयी, "पडाव नहीं पडेगा ये सब लोग यहा बसने आये हैं इनके मकान बनेंगे। महीना पद्रह दिन म इनके परिवार भी यहाँ आ जायेंगे। और म भी, म भी यहा हमेशा के लिए बसने आया हूँ।

अचली जैसे विभोर हो गयी 'मेरे भैरू मालिक ! सच ! महाराज यही देख दयना यही मेरे पास आ गये हैं ! ' और फिर मेरे मुख सहसा गम्भीर हो गयी। वह चण्डा के पीछे-पीछे मुग्धभाव स चलने लगी।

मेंगली के जाने के बाद कम्मल कुछ देर तक अँचली की प्रतीक्षा

करता रहा, फिर वह भी झोपड़ी के बाहर निकलकर खड़ा हो गया। वहीं वह अँचली के लौटने की प्रतीक्षा करने लगा। कम्मल को देखते ही अँचली दौड़ पड़ी, "बापू, महाराज आये हैं अपनी फौज के साथ, और महाराज यहीं बसेंगे—हमेशा हमेशा के लिए! अहा हा!" और अँचली की हँसी का बांध जैसे टूट गया हो।

कम्मल ने भूमि पर मस्तक नवाकर चूण्डा का अभिवादन किया। इस बीच अँचली दौड़कर कुछ भील स्त्री पुरुषों को बुला लायी थी। उनके हाथों में मशालें थी नगाड़े थे तुरहियां थी। कम्मल से चूण्डा ने सारी स्थिति बता दी थी। गाजे बाजे के साथ चूण्डा तथा उनके साथियों का जुलूस, कम्मल तथा उन भीलों के दल के साथ पूरब की ओर बढ़ा, जहां राजपूतों की बस्ती थी। प्राय एक कोस चलने के बाद यह जुलूस वहां पहुंचा। मशालों की रोशनी देखकर तथा बाजों की आवाज सुनकर वहां के लोग अपने शस्त्र अस्त्रों को लिए बाहर आ गये। चूण्डाजी को देखते ही उन्होंने हर्षध्वनि की और तत्काल ही वहाँ की फैली हुई समतल भूमि पर खेमे तथा कनातें लगने लगी। कुंवर चूण्डाजी के लिए आसन लगा दिया गया।

एक ओर खेमे तथा कनातें लग रही थी दूसरी ओर अँचली और उसके साथियों का नृत्य चल रहा था। आधी रात तक यह सब चलता रहा, फिर भीलों का दल अपनी बस्ती की ओर लौट पड़ा और थके हुए चूण्डा के साथी भी सो गये।

सुबह हुई चूण्डा स्नान तथा पूजन करके अपने खेमे के बाहर निकले। अधिकांश लोग अभी भी सो रहे थे। चूण्डाजी कम्मल से रात्रि की व्यवस्था पर परामर्श करने के लिए भीलों की बस्ती की ओर जाना चाहते थे। खेमे से बाहर निकलते ही उन्होंने देखा कि अँचली सामने भूमि पर बैठी है। आश्चर्य से चूण्डा ने पूछा 'तुम इतने सबेरे इतनी दूर आ पहुंची ?"

चूण्डा के सामने मस्तक नवाकर अँचली खड़ी हो गयी। उसने मुग्ध भाव से चूण्डा को देखा, फिर जैसे प्रथम बार उसे अनुभव हुआ कि उसके अन्दर एक तरह की ऐसी भावना उदय हुई है जिसे वह ठीक

तीर भ समझ नहीं पा रही है। उसके मुख का रंग कुछ लाल हो गया, आँखें नीची करके वह बोली 'महाराज के दर्शन करने आयी हूँ। मेरे बड़े भाग कि आज मुझे राम देवता के दर्शन होंगे।" और उस अनायास ही यह अनुभव हुआ कि उसने वह सब कह डाला है, जो उसे न कहना चाहिए था। घबराकर उसने अपनी बात बदली, 'महाराज आ गये, यह अच्छा हुआ। बापू कुछ संकट में हैं। हम भीलों के बड़े दल है नदिया स्नान म आने से अधिक चले गये। महाराज की सेवा में हमारे थोड़े से ही लोग मिलेंगे। लेकिन महाराज के साथ तो टेर सारे लोग आये हैं। अब जो हम लोगों के दल आयेंगे वे महाराज के प्रताप से भाग न सकेंगे यहीं बस जायेंगे। यहाँ तो हम जितने लोग हैं वे महाराज की सेवा में हैं।

कितनी भोली कितनी ममतामयी थी वह युवती जो चूण्डाजी के सामने खड़ी थी। और चूण्डाजी को अनुभव हुआ कि वह अनिंद्य सुन्दरी भी है। उन्होंने कहा तुम्हारे बापू से मिलने के लिए ही मैं निकला हूँ। वह यहाँ के सामन्त हैं यानी मालिक।" चूण्डा मुस्कराये, और तुम यहाँ की राजकुमारी हो—राजकुमारी अँचली।'

राजकुमारी नहीं महाराज की सेविका अँचली हूँ। अँचली बोली और घूम पड़ी बापू अभी घर पर ही हैं। रात में घर गये थे। अब आ गये होंगे। महाराज चलें।'

जिस समय चूण्डा कम्मल के यहाँ पहुँचे उन्होंने देखा कि दस-बारह भीलों का एक दल राधा छोड़ने के लिए तत्पर है और कम्मल उन्हें राधा छोड़ने से रोक रहा है। उनका पारस्परिक विवाद कुछ तेजी पकड़ता जा रहा था कि तभी कुँवर चूण्डाजी ने प्रवेश किया, और उन्हें देखते ही सब सहसा चुप हो गये। सभी ने चूण्डा का अभिवादन किया। चूण्डा ने कम्मल से पूछा क्या बात है?

कुछ बुझे हुए स्वर में कम्मल ने कहा, ये लोग राधा छोड़कर जाना चाहते हैं। कल शाम जब से महाराज के सैनिक आ गये हैं और इन्हें पता चला कि सब यहीं राधा में रहेंगे, तब से ये लोग यहाँ से उखड़ रहे हैं।

चूण्डा ने उन भीलो की ओर देखा "क्या, तुम लोग क्या जाना चाहते हो ?"

उन भीलो के मुखिया ने उत्तर दिया "महाराज, हम लोगो का अपना अलग जीवन है, जो आप लोगो के जीवन से मेल नही खाता। हम जगल के वासी है, नगर-ग्राम से हम दूर रहना चाहते है।

चूण्डा ने प्रश्नसूचक दृष्टि से कम्मल को देखा। कम्मल ने उत्तर दिया "महाराज, ये ठीक कहते है। राध्रा मे हमारे आदमी आते है और कुछ दिन ठहरकर चले जाते है।"

'और तुम ?" चूण्डा के मत्थे पर बल पड गये थे।

कुछ कमजोर स्वर मे कम्मल बोला, 'महाराज मैं भी तो इन्ही लोगो मे हू। अँचली के कारण महाराज को वचन देकर मैं बँध गया हूँ और मेरे सब लोग भी मेरे कारण बँध गये है लेकिन इन दूर से आनेवालो पर मेरा वश नही चलता है।"

चूण्डा कुछ देर तक सोचते रहे, फिर उन्होने उन भीलो से कहा 'तुम लोग अभी मत जाओ, मैं इस समस्या का कोई निदान निकालूगा। निश्चित रहो—राध्रा का यह भाग तुम्हारा है तुम्हारा ही रहेगा। हम लोग अलग कोई बस्ती बसायेंगे।'

भीलो ने चूण्डा की जय जयकार की और सन्तुष्ट भाव से अपनी-अपनी झोपडियो मे चले गये।

उन भीलो के चले जाने के बाद चूण्डा ने चिन्तित भाव से कम्मल से पूछा, "यह तो एक नयी समस्या पैदा हो गयी, मैंने इस पर सोचा ही नही था। मै तो चित्तौड छोडकर राध्रा आया था, राध्रा को बसाने और स्वय यहा बसने।"

कम्मल के पास चूण्डा की बात का कोई उत्तर नही था। उत्तर अचली ने दिया, महाराज चिन्ता न करें। पूरब उत्तर मे फैला हुआ जो पठार है, वही आप अपनी बस्ती बसायें। राध्रा से चार कोस पर पडेगा वह—राध्रा से दूर भी और नगीच भी। बीच मे नदी पडती है। तो हमारी बस्ती घने जगल मे और आपका ग्राम खुले मैदान मे ! महा-राज वह जगह खुद देख लें, बापू के साथ मैं भी चलती हू। आपके गाव

के बसने में हम सब और आप लोगों की सहायता करेंगे।"

चूण्डाजी ने भारी मन से अँचली का सुझाव मान तो लिया, लेकिन उन्हें यह अनुभव हो रहा था कि उनके लिए नवीन संघर्षों के एक नये जीवन का सूत्रपात हो गया है।

नदी के उत्तर-पूर्ववाले क्षेत्र का निरीक्षण करके जब अँचली और कम्मन के साथ चूण्डाजी अपने शिविर में पहुँचे तो वह बेतरह थक गये थे। दोपहर ढल चुकी थी और उनके मुख पर का काला धुँधलापन घटने की बजाय कुछ अधिक बढ़ गया था। चूण्डा को उनके शिविर के द्वार पर छोड़कर जब अँचली चलने लगी तब उसने चूण्डा से कहा, "महाराज उदास न हों! मैं अँचली, प्राणपण से महाराज की सेवा में हूँ—महाराज तो मेरे देवता हैं। बापू के लिए मैं बेटी नहीं, बेटा हूँ।' और वह उन्मुक्त भाव से हँस पड़ी।

और चूण्डा को लगा जैसे उनके अन्दरवाले अवसाद का सहसा लोप हो गया है। उनके मुख पर इस बार उल्लास का भाव चमक उठा। मुस्कराते हुए उन्होंने कहा, "मैं तो देवता नहीं हूँ, लेकिन तुम देवी अवश्य हो। तुम्हारा नाम अँचली नहीं, वनदेवी है।

तेरहवाँ परिच्छेद

मन्दोर में एक लम्बे काल तक राव रणमल की अनुपस्थिति के फलस्वरूप मन्दौर की समस्त शासन-व्यवस्था का भार उनके ज्येष्ठ पुत्र जोधा पर आ पड़ा था। जोधा की अवस्था उन दिनों प्रायः पतीस वर्ष की थी जो किसी हद तक महत्त्वाकांक्षा की सीमा में आ गयी थी। अपने बाहुबल तथा अपनी बुद्धि पर उसे अडिग विश्वास था। जोधा यथार्थवादी था। अपने पिता के जीवित रहते हुए ही उसने मन्दौर पर अपना शासन स्थापित कर लिया था। उसने कुँवर जोधा की पदवी छोड़कर राव जोधाजी की पदवी अपना ली थी। इसमें राव रणमल की असहमति के स्थान पर एक तरह की गौण सहमति थी राव रणमल की आँखें तो मेवाड़ के

जोधा को छोड़कर वह अपनी भाभी गुमना से मिली, और फिर उसने अपने भतीजा—सिंहा कुम्भा और धना को प्यार किया। इसके बाद बाजा गाजा के साथ वह जुलूस राजमहल वापस आ गया। चित्तौड़ गढ़ का फाटक बन्द हो गया। जोधा के अनुचर भिन्न कोठरियों में ठहरा दिये गये। जोधा को राव रणमल तथा उनके अनुचरों ने सँभाल लिया और जोधा का परिवार गुणवती के साथ अन्दर रनिवास में चला गया।

दूसरे दिन चित्तौड़ नगर में सुबह ही यह खबर फैल गयी कि इस बार रक्षाबन्धन के पर्व पर राजमाता के भाई राव जोधाजी मण्डोर से चित्तौड़ आये हैं अपनी बहन से राखी बँधवाने। दशमी से पूर्णिमा तक का काल समस्त नगर में उत्सव पर्व का काल घोषित कर दिया गया। चारों ओर राग रंग, सगीत नृत्य का दौर। दूसरे दिन अपराह्न के समय जब राव जोधाजी चित्तौड़ नगर देखने निकले तो चित्तौड़ के वैभव से उनकी आँखें विस्फारित हो गयीं। रणमल ने अपने सामन्त बीजा को जोधाजी के साथ भेज दिया था जो चित्तौड़ के कोने कोने से परिचित हो चुका था। चित्तौड़ गढ़ के फाटक को देखकर जोधा आश्चर्य से बोल उठा, 'अभेद्य गढ़ है यह!' और एकाएक उनकी नजर गढ़ के रक्षक भट्टी सनिकों पर पड़ी। उन्होंने बीजा से पूछा, 'ये लोग तो जैसलमेर के भट्टी स्थित हैं, यहाँ कैसे आये?'

बीजा मुस्कराया, उसने हाथ जोड़कर कहा, 'जो औरों के लिए अभेद्य और दुर्गम गढ़ है वही राठौरों के लिए सुगम बना दिया गया है इन भट्टियों की नियुक्ति द्वारा। यहाँ के रक्षक अहेरियों के कुँवर चूण्डा जी के साथ जाने के बाद जैसलमेर से इन भट्टियों को यहाँ के रक्षक के रूप में ले आया हूँ।' और बीजा ने विस्तार के साथ बीत हुए कई महीनों में चित्तौड़ में जो कुछ भी घटित हुआ था, उसका वर्णन कर डाला।

सब कुछ सुनकर जोधा को ऐसा लगा कि कुछ गलत हो रहा है। उसके मन में किसी तरह का उत्साह तथा उल्लास नहीं था। उसने केवल इतना कहा, 'रावजी बड़ा लम्बा खेल खेल रहे हैं, इसका परिणाम क्या होगा यह कहना कठिन है।'

रक्षाबन्धन का त्योहार आया, गुणवती ने अपन भाई का राखी बाधी। जोधा इस अवसर के लिए विविध रत्न एव वस्त्र ले आया था। उसने अपनी बहन को उपहार दिय। भाद्र कृष्ण पक्ष की चतुर्थी के दिन यानी चार दिन बाद ही राव जाधाजी का मन्दौर जाने का कायक्रम था। तृतीया के दिन सन्ध्या के समय एकान्त म राव जोधा और राव रणमल म एकान्त म बातचीत हुई। जाधा न रणमल को सूचना दी "मारवाड का प्राय तीन-चाथाई भाग मैने जीत लिया है। आप अब कब तक मवाड मे रहिएगा? मारवाड का एक बड एव शक्तिशाली राज्य क रूप म सुसगठित करन के लिए मुझे आपकी महायता की आवश्यकता ह।'

राव रणमल ने कुटिल मुस्कराहट के साथ कहा, 'तुम अब मर स्थान पर मन्दौर के राव हा ही गय हो जोधाजी! तुमने मारवाड का जीता है, ता तुम उसे अकेल ही विकसित और सुगठित करो। मुझे ता मवाड की राज्य व्यवस्था सँभालनी है। मैं यही रहूगा।'

"हम लोगा को मेवाड से क्या लेना देना?" जोधा न पूछा।

"तुम्ह हा या न हो, लेकिन मेवाड की शक्ति क बिना मारवाड सशक्त और सुसम्पन्न नहीं बन सकेगा, मैं इतना जानता हू। दिल्ली के मुसलमान बादशाहा की सल्तनत से मिला हुआ मारवाड का प्रदश। मारवाड और मवाड की सम्मिलित शक्ति ही दिल्ली क यवन बादशाहा का मुकाबला करगी। सब जानते है कि मारवाड साधनहीन मरुभूमि का इलाका है जबकि मवाड हराभरा और उवरक भूखण्ड है—चादी तावा आदि भू-खनिजा म युक्त। मैं तो मेवाड छोडकर मारवाड जान की बात साच ही नही मकता।" और फिर कुछ रुककर रणमल ने कहा, "मेरा मन बिना सिहा के यहा नहीं लगता, फिर मन्दौर के सघषमय जीवन म उसकी उचित शिक्षा दीक्षा का नही पायगा। मैं ता चाहता हू कि म सिहा को यहाँ अपने लू यहा उसकी शिक्षा दीक्षा का भी प्रबन्ध हो जायगा। मुकुलजी दोना भाई है। सिहा और मुकुलजी का बहल जायगा।

जोधा ने एक पैनी और भय भरी दृष्टि अपने पिता पर डाली। अपने पिता की प्रवृत्ति और प्रकृति से वह भलीभाँति परिचित था। कुछ देर तक वह चुपचाप तेजी के साथ सोचता रहा फिर उसने कहा, "जैसी आपकी मर्जी, लेकिन अगर सिंहा को गुणवती अपनी मर्जी से रोके तभी उचित होगा। और आप जो कुछ भी करियेगा बड़ी सावधानी से करियेगा।"

"यह मुझ पर छोड़ दो। सिंहा के यहाँ रुकने का प्रस्ताव भी गुणवती ही रखेगी तुम्हारे सम्मुख, तुम यह प्रस्ताव स्वीकृत कर लेना।

मेवाड़ से अपने परिवार के साथ विदा लेने के लिए जब जोधा रनिवास में पहुँचा तो गुणवती ने कहा 'पिताजी का मन यहाँ सिंहा के बिना नहीं लगता तो मैं चाहती हूँ कि सिंहा कुछ दिनों के लिए यहीं रुक जाय। मेरी विनय है कि इस बार दशहरे में समय निकाल कर आप अवश्य आयें और दशहरे के दरबार में राणा मुकुलजी के नाना और मामा उनका तिलक अपने हाथों से करें। तब तक सिंहा यहीं रहेगा। सिंहा को मैं तभी वापस भेजूँगी जब आप स्वयं उसे यहाँ लेने आयेंगे।' और गुणवती अपनी वाक्चातुरी पर स्वयं हँस पड़ी, बिना यह जाने कि भयानक कुचक्र में वह स्वयं फँसती जा रही है।

राव जोधा के साथ आनेवाले सामन्तों एवं सैनिकों में से आधे सिंहा के अनुचर के रूप में चित्तौड़ में ही रुक गये थे। इसका पता गुणवती को एक सप्ताह बाद लगा जब रघुदेव ने एकान्त में गुणवती से कहा 'राजमाताजी क्या मन्दोर से जोधाजी के साथ आनेवाले प्रायः पचास सामन्तों एवं सैनिकों को चित्तौड़ तथा मेवाड़ के अन्य भागों में बसने का आदेश आपने दिया है ?

आश्चर्य के साथ गुणवती बोली मैंने तो ऐसा कोई आदेश नहीं दिया है। न पिताजी ने इस सम्बन्ध में मुझसे कोई बात की है। क्या बात है ?"

'चित्तौड़ में तेजी के साथ बसनेवाले राठौर सामन्तों एवं सैनिकों की उपस्थिति से सीसोदिया सरदारों में एक तरह का विक्षोभ उत्पन्न हो गया है। यहाँ से जाते समय चूण्डाजी मुझसे कह गये थे कि मेवाड़

तथा चित्तौड़ में राठौरों के बढ़ते हुए प्रभाव पर कड़ी नजर रखना। सीसौदिया और राठौरों के हित एक नहीं हैं—यह तो आप भी जानती हैं।"

राजमाता गुणवती कुछ अजीब उलझन में पड़ गयी। भावावेश में आकर गुणवती ने अपने भतीजे सिंहा को कुछ काल तक चित्तौड़ में रहने की अनुमति अवश्य दे दी थी, लेकिन जोधा के जाने के बाद मेवाड़ के दरबार में रणमल की गोद में मुकुलजी के साथ सिंहाजी की यदाकदा उपस्थिति उन्हें अखर रही थी। कुछ देर सोचने के बाद गुणवती ने कहा, "सीसौदिया सरदारों को शान्त रखो, मैं इस सम्बन्ध में पिताजी से बात कर लूंगी।"

अब तो सिंहा के आने के बाद रणमल का अधिकांश समय सिंहा के लाड़-प्यार में बीतने लगा। रघुदेव से बात करने के दूसरे ही दिन गुणवती ने अपने पिता से कहलाया—"कुछ आवश्यक विषय पर राजमाता आपसे बात करना चाहती है। आप उनसे मिल लें।"

गुणवती का यह सन्देश रणमल को अच्छा नहीं लगा। अब तक वे चित्तौड़ में काफी शक्तिशाली और प्रभावशाली बन चुके थे। फिर उस समय वह सिंहा को खिलाने में तल्लीन थे। सिंहा को साथ में लेकर वह गुणवती के कक्ष में पहुंचे। राव रणमल के साथ सिंहा को देखकर गुणवती को अच्छा नहीं लगा। उसने महल के अन्दर से अमिया को बुलाकर कहा, कुंवरजी को राणाजी के कक्ष में पहुँचा दो। दोनों कुछ देर तक आपस में खेलेंगे। तब तक मैं पिताजी के साथ कुछ परामर्श कर लूं।

अमिया के साथ सिंहा के जाने के बाद गुणवती ने बात आरम्भ की, 'पिताजी जहां तक मुझे पता चला है, चित्तौड़गढ़ की व्यवस्था सुचारु रूप से चल रही है और मेवाड़ की जनसंख्या में जो कमी हुई थी वह पूरी ही नहीं हो चुकी है वरन पहले से भी अधिक बढ़ रही है।'

सहमति में अपना सिर हिलाते हुए रणमल ने उत्तर दिया, "भगवान एकलिंग की कृपा है। चित्तौड़ अब पूर्ण रूप से निरापद हो गया है। समस्त मेवाड़ राज्य में सुख शान्ति का वातावरण है।"

गुणवती कुछ चुप रहकर बोली, "पिताजी, क्या यह सच है कि जाधाजी के जाने के बाद आपने मन्दौर के पचास सामन्ता और सैनिको को मेवाड़ और चित्तौड़ में रोक लिया है ?"

तब रणमल के मस्थे पर बल पड़ गये लेकिन बड़े प्रयत्न के साथ उन्होंने अपना स्वर संयत रखते हुए उत्तर दिया क्या, इस समय यह प्रश्न क्यों ? क्या किसी ने इसकी शिकायत की है ?"

'शिकायत तो नहीं की है, लेकिन मैंने दास दासियों से यह चर्चा सुनी है।

रणमल ने कृत्रिम मुस्कान के साथ कहा मैंने उन्हें नहीं रोका है, वे स्वयं रुक गये हैं। सिहा मन्दौर का युवराज है, युवराज के साथ हमेशा उसके सामन्त और सैनिक रहते हैं। इस परम्परा को तुम जानती हो, क्या इस पर तुम्हें कोई आपत्ति है ?

गुणवती के स्वर में अब अधिकार की भावना आ गयी थी "लेकिन सिहाजी तो हमेशा यहाँ रहने नहीं आये हैं फिर इन सैनिकों और सामन्तों के परिवार यहाँ रहने क्यों आ रहे हैं ? चित्तौड़ में यथेष्ट संख्या में राठौर सैनिक और उनके परिवार बस गये हैं इससे सीसोदिया सामन्तों में विक्षोभ की भावना भर रही है।

तो यह चर्चा दास दासियों की नहीं है तुमसे किसी ने शिकायत की है। इस शिकायत के पीछे कुछ गुप्त राजनीतिक षडयन्त्र लगता है।" रणमल का स्वर भी अब कुछ प्रखर हो गया मुझे पता है कि राणा मुकुलजी के प्राणों को खतरा है। जब मैं चित्तौड़ आया था तभी मुझे इसका आभास हो गया था। मेवाड़ के सीसोदिया सरदार कभी भी राणा मुकुलजी को अपने मन से मेवाड़ के शासक के रूप में नहीं स्वीकार कर सके। उनकी वफादारी हमेशा कुंवर चूण्डाजी के प्रति रही है। तभी तो इतने सामन्त और सैनिक चूण्डाजी के साथ उस निर्जन प्रदेश राधा में जाकर बस गये हैं। मेरी सलाह मानो तो तुम इन सीसोदिया सरदारों से सावधान रहो।

गुणवती चक्कर में पड़ गयी। जो कुछ रणमल ने कहा था वह उसे तर्कहीन नहीं लगा। स्वर से अधिकार की भावना लुप्त हो गयी, आँखें

झुकाकर उसने कहा, "मेरी समझ म नही आ रहा है यह सब ! लेकिन चूण्डाजी पर अविश्वास करन का मन नही करता ।"

रणमल को अनायास ही सुअवसर मिल गया था । उनकी आखें चमक उठीं वडी आत्मीयता के साथ उन्होंने गुणवती के सर पर हाथ फेरकर कहा, "चण्डाजी तो दवता ह मैं उनके विरुद्ध कुछ नही कहता । लेकिन ये सीसौदिया वश के लोग राणा मुकुलजी के हितू नही ह । राणा मुकुलजी की माता राठौर वश की ह न ! तो राणा मुकुलजी की रक्षा करने के लिए मैं अपने राठौर सनिकों के साथ यहा आ गया हू । अपने नाना राव रणमल की देखरेख म राणा मुकुलजी निरापद हैं ।"

अपने पिता की बात सुनकर गुणवती गदगद हो गयी, उसकी आखो म आसू आ गये 'जैसी आपकी मर्जी । राणाजी तो आप पर पूर्ण रूप म निर्भर है । इधर इन दिनो मेरी तबीयत भी कुछ ठीक नही रहती है ।"

राव रणमल ने उठते हुए कहा "अधिक परिश्रम न करो बेटी । मेवाड और चित्तौड के शासन और उसकी व्यवस्था म अपने को घुला देने से कोई लाभ नहीं—इस व्यवस्था का भार तुम मुझ पर छोड दो । नारी अबाध, कोमल और असीम करुणामयी होती है । शासन का भार तो पुरुष के कठोर और बलिष्ठ कधों पर होना चाहिए । म आज ही वद्यराज रूपा से तुम्हारे उपचार पर परामर्श करूगा । पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर ही तुम राजकाज सँभालना ।

अपने कक्ष म पहुचकर रणमल ने मेवाड के राजवैद्य रूपा को बुलाया । राजवैद्य रूपा के आने पर उन्हें बडे आदर के साथ उन्होंने बिठाया 'वद्यराज, राजमाता की परीक्षा कर लीजिए । उनकी तबीयत ठीक नही रहती ।

'मैंने कल ही उनकी परीक्षा की थी, उनका स्वास्थ्य तो ठीक है ।

रणमल ने कहा, "मुझे ऐसा लगता है कि उन्हें कुछ विश्राम की आवश्यकता है । राजकाज स्त्रियों के वश की बात नही, और इधर कुछ महीनों से उन्हें अधिक मानसिक तनाव का सामना करना पडा है । मेरी बात तो वह सुनती ही नही, आप उन्हें सलाह दीजिए कि कुछ

रत्नू ने जब ही वह पद समाप्त किया, रूपा उसके सामने प्रकट हुए। उन्होंने आगे बढ़कर रत्नू से कहा—"बड़ा सुन्दर गाते हो! तो, काशी में ज्योतिषशास्त्र के स्थान पर तुमने...।'

रत्नू ने मुस्कराते हुए रूपा की बात पूरी की, 'संगीतकला का अध्ययन किया है, नृत्यकला सीखी है। महाप्रभु चैतन्य की भक्तिरसवाली कीर्तनमण्डली में मेरा अग्रगण्य स्थान हो गया है।"

तो फिर तुम चित्तौड़ वापस क्यों आये ?

वहाँ धन का अभाव है—त्याग और विराग के पथ में विवाहित और बाल-बच्चेवालों की गति नहीं है।

बात रत्नू ने तथ्य की कही थी, वैद्यराज के अन्दरवाला कलाकार सांसारिकता की प्रखर आँच में सूख गया, "ठीक कहते हो। फिर नाचने-गाने से कुल की मर्यादा भी नष्ट होती है। ब्राह्मण का धर्म है शास्त्रों में पारंगत होना, और शास्त्र के नाम पर तुम कोरे हो।'

अविचलित भाव से रत्नू ने उत्तर दिया, 'शास्त्र के नाम पर मैंने धर्मशास्त्र की शिक्षा पायी है। काशीप्रवास के अवसर पर मैं बंगभूमि गया। वहाँ महाप्रभु चैतन्य, महाकवि जयदेव, महाकवि चण्डीदास ने वैष्णवमत का जो रूप प्रस्तुत किया वही मानवमुक्ति का एक रूप बन सकेगा। महाप्रभु चैतन्य ने भगवान कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा को नया गौरव प्रदान किया है। मैं मथुरा जाकर बसना चाहता था, लेकिन वहाँ इतने अधिक बंगाली भर गये हैं कि अब वहाँ मेरी गति ही नहीं। हारकर मैं आपकी शरण में आया हूँ।'

वैद्यराज कुछ देर तक सोचते रहे एकाएक उनके मन में एक विचार आया 'आज भाद्र कृष्णपक्ष की षष्ठी है, परसों कृष्ण जन्माष्टमी है। क्या तुम रनिवास में जन्माष्टमी के दिन छोटा-सा उत्सव कर सकते हो ?

"क्या नहीं, अवसर मिल जाय तो मैं सब कुछ कर सकता हूँ।'

रूपा वैद्यराज बोले, अच्छी बात है। रात के समय मैं तुम्हें बताऊँगा।" और वह चुपचाप अपने कक्ष में चले गये।

अपराह्न के समय राजवैद्य रूपा राजमाता की सेवा में उपस्थित

हुए। उन्होंने राजमाता की नाडी की परीक्षा की। फिर वह बोले, 'राजमाता जी को किसी प्रकार का कोई रोग नहीं है। केवल थोड़ी सी मानसिक चिंता और शारीरिक थकान है। इस मानसिक चिंता और थकान का एकमात्र उपचार है भगवत भजन। तो इस गम्भीर राजकाज के साथ यदि कुछ भगवत भजन की व्यवस्था हो जाय तो बड़ा शुभ हो।"

राजवैद्य रूपा की बात से गुणवती को कुछ सार दिखा। वह बोली, "मैं अब नियमित रूप से भगवान का पूजन करूँगी लेकिन पूजा पाठ में अधिक समय तो नहीं लगता ?"

राजवैद्य रूपा ने कहा "यह तो समय निकालने और लगाने की बात है, परसों भगवान कृष्ण का जन्मोत्सव है। तो इस बार श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाये, नृत्य और संगीत के साथ भगवान कृष्ण के जन्मदिन अष्टमी से लेकर उनकी छठी के दिन तक तो यह उत्सव चलेगा ही उसके बाद आप थोड़ा बहुत राजकाज देखने लगिएगा।"

गुणवती की दासियों ने एक स्वर से रूपा वैद्य के इस प्रस्ताव का उल्लास के साथ समर्थन किया। और दूसरे दिन से ही कृष्ण जन्मोत्सव का कार्यक्रम राजभवन के अन्तःपुर में बन गया।

धर्म जीवन का अनिवार्य अंग है, या धर्म नशा है, या फिर धर्म एक मनोवैज्ञानिक रोग है—इस पर विद्वानों में गहरे मतभेद हैं। विभिन्न मतों का अध्ययन करने के बाद केवल एक निर्णय पर पहुंचा जा सकता है—नशा स्वयं में एक मनोवैज्ञानिक रोग है। और यह नशा जीवन का एक अनिवार्य भाग भी समझा जा सकता है जो दैवी विपत्तियों से मनुष्य को त्राण दे सकता है। इस नशे की कहीं-न-कहीं कोई तो अवधि होनी ही है। पूरा भादों का महीना उत्सवों में बीता विशेष रूप से नृत्य व संगीत और नृत्यकला के प्रदर्शनों में। और उन उत्सवों के कलापक्ष में गुणवती इतनी तल्लीन हो गयी थी कि उसने इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया कि मेवाड़ का शासन-तन्त्र किस तरह चल रहा है, किन परिस्थितियों में चल रहा है। गुणवती यह भी भूल गयी थी कि जोधा ने

विजयादशमी के दिन मेवाड़ आकर राणा मुकुलजी का तिलक अपने हाथों करने का वचन दिया था।

भादों की अनन्त चतुर्दशी के बाद कुँवर का पितृपक्ष आता है, और अनन्त चतुर्दशी के बाद सहसा गुणवती के उस मानसिक रोग की अवधि समाप्त हो गयी। गुणवती ने राव रणमल को सन्देश भिजवाया कि वह उनसे परामर्श करना चाहती है। इस बार राव रणमल ने गुणवती के पास स्वयं आने के स्थान पर गुणवती को अपने यहाँ बुलवा लिया।

गुणवती ने रणमल से कहा, "अब मैं पूर्ण रूप से ठीक हो गयी हूँ, कल से मैं राजकाज की व्यवस्था के लिए दरबार में आया करूँगी। एक महीना से ऊपर हो गया मुझे घर में बैठे बैठे।"

"जैसी तेरी मर्जी," रणमल ने उत्तर दिया, "वैसे राज्य का काम सुचारु रूप से चल रहा है। समस्त समस्याएँ मेरी पकड़ में आ गयी हैं। कभी कभी दरबार में औपचारिक रूप से आ जाया कर।"

"लेकिन मुझसे प्रजा अपेक्षा करती है कि मैं आकर उसे अपने दर्शन दूँ।"

रणमल हँस पड़े लेकिन उनकी हँसी में एक तरह का व्यंग था। उन्होंने कहा, "ठीक है—लेकिन पितृपक्ष आरम्भ हो गया है अशुभ मुहूर्त है। पितृपक्ष के समाप्त होने के बाद ही तेरे लिए अपना काम सँभालना उचित होगा।"

गुणवती बोली, "ठीक है पितृपक्ष के बाद सही। लेकिन विजयादशमी के अब कुल तेईस चौबीस दिन बाकी है। विजयादशमी के दिन राणाजी का दरबार होना है, उस दरबार की व्यवस्था करनी है। मेवाड़ के सामन्तों को निमन्त्रण भिजवाने हैं।"

लापरवाही के साथ रणमल ने उत्तर दिया, "राणा मुकुलजी का विजयादशमी के दिन दरबार तो होगा ही—समस्त भारतवर्ष में क्षत्रिय राजाओं की यह परम्परा है। मेवाड़ के सामन्तगण इस परम्परा से परिचित हैं, वे स्वयं दरबार में उपस्थित होते हैं, उन्हें निमन्त्रण नहीं भेजा जाता। जो सामन्त इस दरबार में नहीं आयगा वह राणाजी की अवज्ञा के दोष का भागी होगा।"

दक्षिणा आवश्यक है।'

गुणवती ने बात आगे नहीं बढ़ायी। आगे बटाने के लिए उसके पास कोई बात थी ही नहीं। रणमल ने धार्मिक नशे का दूसरा घट गुणवती को पिला दिया था।

चित्तौड़ में राजमाता गुणवती के तत्त्वावधान में नवरात्रि का उत्सव बड़ी धूमधाम के साथ आरम्भ हुआ। वैसे नवरात्रि बंगाल के बाहर समस्त उत्तर भारत में स्मार्तों द्वारा एक पावन पर्व की तरह वैयक्तिक उपासना के रूप में ही मनाया जाता है। लेकिन रत्नू पण्डित ने बंगाल की दुर्गा पूजा के ढंग से नवरात्रि का सार्वजनिक रूप दिया, जो चित्तौड़वासियों के लिए एक नवीनता थी।

सप्तमी के दिन जब काली की पूजा होनेवाली थी, प्रातःकाल के समय चित्तौड़गढ़ के प्रहरियों ने राजमाता गुणवती को राजधानी में कुंवर चूण्डा के सामन्त कम्मल तथा उसके दल की आने की सूचना दी। रानी गुणवती प्रातःकाल उठकर पूजा के मण्डप में पहुंच गयी थी। पुरोहित के रूप में रत्नू पण्डित पूजा की तयारी में व्यस्त थे। कुंवर चूण्डा के प्रतिनिधि के रूप में सामन्त कम्मल के आने की सूचना पाकर गुणवती के मन में एक पुलक सा जाग उठा। एक लम्बे अरसे से मानो कुंवर चण्डाजी से हरेक तरह का सम्पर्क कट गया था। और उस अवसर पर जबकि गुणवती की अनजानी तह में एक तरह का धुंधलापन छा रहा था, कुंवर चूण्डा से सम्पर्क की स्थापना उसे अपने लिए एक वरदान के रूप में लगी। राव रणमल द्वारा गुणवती को समय-समय पर जो सूचना मिलती थी उसमें तो यही समझा जाता था कि चूण्डाजी एक स्वतन्त्र राज्य की स्थापना कर रहे हैं। लेकिन चण्डाजी ने मेवाड़ के दुलारे की हैसियत से राणा मुकुलजी को दशहरे के दरबार के लिए अपनी भेंट भेजी है इस समाचार से गुणवती विभोर हो उठी थी। उसने तत्काल सामन्त कम्मल को पूजामण्डप में ही बुला भेजा।

कम्मल अँचली के साथ राजमाता गुणवती की सेवा में उपस्थित हुआ। भूमि पर मस्तक नवाकर कम्मल पीछे खड़ा हो गया। अँचली राजमाता के सामने आयी। उसने अपने आँचल में खोलकर कुंवर

चूण्डा का पत्र राजमाता को दिया ।

एक संक्षिप्त-सा पत्र जिसमें चण्डाजी ने राणा मुकुलजी का अभिवादन किया था, राजमाता गुणवती को अपने उस वचन की याद दिलाते हुए कि जब राजमाता स्वयं याद करेंगी, तभी वह चित्तौड़ आयेगा। चूण्डाजी ने लिखा था कि राणाजी के एक इलाकेदार की हैसियत से मैं अपनी भेंट भेज रहा हूँ और हमेशा भेजता रहूँगा। एक संक्षिप्त-सा पत्र, ममता और पूज्य भावना से युक्त। राजमाता गुणवती ने उस पत्र को अपने मस्तक से लगाकर अपने आँचल में बाँध लिया। फिर वह अँचली की ओर मुड़ी—"हूँ ! तो कुवर चण्डाजी चित्तौड़ तब आयेंगे जब मैं उनसे चित्तौड़ आने की प्रार्थना करूँगी।' और एकाएक राजहठ ने उस ममतामय पुलक का स्थान ले लिया। फिर राजमाता गुणवती ने अँचली की ओर गौर से देखा।

गहरे ताम्र वर्ण की युवती जो दूर से काली दिखती थी। गठा हुआ शरीर, अति सुन्दर मुखाकृति। गुणवती को अनुभव हुआ कि साकार काली भवानी उसके सामने प्रकट हुई है। अन्तर केवल इतना था कि अँचली के गले में मुण्डमाला नहीं थी, लेकिन कमर के नीचे बाघम्बर झूल रहा था। हाथ में खड्ग लेकिन पीठ पर तरकस कसा हुआ था जिसमें तीर थे, और कन्धे पर धनुष लटक रहा था। मुग्ध भाव से कुछ देर तक वह अँचली को देखती रही फिर गुणवती ने अपने सर को झटका दिया। कल्पना लोक से निकलकर वह यथार्थ के धरातल पर आ गयी। उसने कम्मल से पूछा 'तुम्हारी बेटी है ?"

"बेटी भी है, बेटा भी है। मेरी अकेली सन्तान।" कम्मल ने उत्तर दिया।

"इसका विवाह हो गया है ?" गुणवती ने फिर पूछा।

"नहीं महारानीजी। यह विवाह करती ही नहीं, मैंने कहा न कि यह मेरी बेटी भी है और बेटा भी है। इसका तीर का निशाना अचूक है। भीलों में इतना अच्छा निशाना लेनेवाला कोई नहीं है। भील मर्द इससे थर थर काँपते हैं। तो इससे विवाह करता कौन करे ? किसकी शामत आयी है ?' और कम्मल हँस पड़ा।

राजमाता गुणवती ने बड़े स्नेह से अँचली के सिर पर हाथ फेरते हुए

कहा, दिन कैसे काटेगी बिना विवाह किये हुए यह ?"

'जैसे अभी काट रही हूँ ! शिकार करना, बापू की गैरहाजिरी में कबीलों के झगड़े निपटाना और देवता महाराज की सेवा करना। रात के समय नाचना गाना और फिर चैन की नींद सोना।" अँचली ने बड़े भोलेपन के साथ मुस्कराते हुए कहा।

राजमाता ने कम्मल और अँचली तथा उनके दल के लोगों के अलग अलग स्थानों में ठहरने की व्यवस्था करते हुए अँचली से कहा, 'जल्दी से तुम स्नान करके पूजा मण्डप में आ जाओ। कालीजी की आरती तुम्हीं उतारोगी। और उन्होंने एक सेविका द्वारा अँचली के लिए एक रेशमी परिधान की व्यवस्था करा दी।

एक घण्टे के अन्दर ही अँचली स्नान करके तथा रेशमी परिधान पहनकर अपने साथ आये हुए दो वाद्य बजाने भीलों के साथ पूजा मण्डप में पहुँच गयी। उस समय तक काली की मूर्ति की स्थापना होने के बाद मूर्ति के पूजन का प्रबन्ध हो गया था। चित्तौड़ में उपस्थित समस्त सामन्तगण, श्रेष्ठीगण एवं राजकर्मचारियों के साथ जनता का एक बड़ा दल सभामण्डप में एकत्रित हो चुका था। एक ऊँचे आसन पर रणमल की गोद में राणा मुकुलजी बैठे थे। उनकी बगल में उनका पौत्र सिंहा भी अपने बाबा से चिपका हुआ बैठा था। काली का विधिवत पूजन किया रत्नू पण्डित ने। और फिर काली की आरती का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। आरती का थाल हाथ में लेकर अँचली ने अपना नृत्य आरम्भ किया। इतना सुन्दर नृत्य वहाँ उपस्थित किसी भी व्यक्ति ने नहीं देखा था—रौद्र और वीररस का अद्भुत सम्मिश्रण! प्राय एक घण्टे तक यह नृत्य चलता रहा।

आरती के बाद काली की पूजा का कार्यक्रम समाप्त हुआ और सभामण्डप की वह भीड़ प्रसाद पाकर विसर्जित हुई। राव रणमल ने गुणवती से पूछा, 'यह भीलनी जिसने आरती उतारी थी, इसे मैंने प्रथम बार देखा है। कौन इसे ढूँढ़कर लाया है? इसे तो चित्तौड़ के राजभवन की शोभा की तौर पर यहाँ रहना चाहिए!'

गुणवती ने कहा, यह राधा के सामन्त कम्मल की पुत्री है। कुरव

चूण्डा ने दशहरे के दरबार में राणाजी के लिए अपने सामन्त कम्मल के हाथ भेंट भेजी है। कम्मल के साथ उसकी बेटी अँचली भी आयी है।'

आश्चर्य के साथ रणमल बोले, ' मुझे तो खबर मिली है कि चण्डाजी ने राधा में अपने स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की है। उन्होंने यह भेंट कैसे भेजी है, भेंट तो मेवाड के सामन्त और इलाकेदार की आती है।"

गुणवती बोली, "कुँवरजी तो आये नहीं, न उन्होंने पहले कभी कोई समाचार भेजा, नहीं तो मैं उनसे पूछती। राणाजी के लिए भेंट के साथ उन्होंने एक छोटा सा पत्र भी भेजा है कि राधा मेवाड का इलाका रहेगा। स्वर्गीय राणाजी की इच्छा के अनुसार उन्होंने मेवाड के अन्तर्गत अपना इलाका स्वयं जीत लिया है। राधा की स्थापना स्वतन्त्र राज्य के रूप में नहीं हो रही है।'

रणमल हँस पडे, 'दक्षिण में मेवाड, उत्तर में मेवाड! स्वतन्त्र राज्य की स्थापना दाँतो तले लोहे के चने चबाना है। मेवाड राज्य का सपना अब भी शायद उनकी आँखों में तैर रहा है। लेकिन सुस्पष्ट रूप में कुछ भी नहीं कहा जा सकता।" फिर हँसते हुए उन्होंने अपनी बात पूरी की 'राणा मुकुलजी का हित उनके नाना रणमल के हाथ में है।" और राव रणमल के मस्तक पर की चिन्ता की रेखा उनकी कृत्रिम मुस्कान में दब गयी।

राजमाता गुणवती ने अपने पुत्र राणा मुकुलजी के शानदार दरबार की जो कल्पना की थी वह झूठी निकली। राणा मुकुलजी का दरबार बडे साधारण ढंग से हुआ। कहीं किसी तरह का कोई उत्सव नहीं था। न ही कहीं किसी तरह की उमंग थी। सब कुछ यन्त्रचालित ढंग से हो रहा था। भावना का लेश कहीं कोई स्थान नहीं था। दरबार के बाद जब शयन के समय गुणवती माँन के लिए लेटीं उनका मन बुझा हुआ था। देह थकी हुई थी। उन्हें यह अनुभव हो रहा था कि मेवाड का शासन सूत्र उनके हाथों में निकल गया है। वह अब उनके पिता राव रणमल के हाथ में आ गया है। एक अजीब तरह की दुश्चिन्ता उनके मन में व्याप्त हो गयी थी, जिसका रूप उनकी पहचान में नहीं आ रहा था।

ग्रौर तभी ग्राशा की किरण के रूप म ग्रँचली की मूर्ति उनकी ग्रांखो म उभर ग्रायी। वानी की साक्षात प्रतिमा प्रकट हुई थी मेवाड म। राणा मुकुलजी ग्रौर राजमाता की रक्षा वाली भवानी स्वय बनगी—ग्रौर उनके दु स्वप्न दूर होन गये दूर होते गय।

विजयादशमी के दूसर दिन ही मेवाड के ग्रन्य भागा स ग्राये हुए सामन्तो न चित्तौड म जाना ग्रारम्भ कर दिया। कम्मल की विदाई क पहले राजमाता गुणवती न ग्रचली को बुला भेजा। राजमाता गुणवती का चूण्डा के प्रति ग्रँचली की भावना का कुछ ग्राभास हो गया था। ग्रनायास ही उनके मन म ग्रँचली क प्रति ईर्ष्यामिश्रित ममता की भावना जाग उठी। गुणवती ने ग्रँचली का रेशमी वस्त्र तथा ग्राभूषण दिय तथा उसके सिर पर हाथ रखकर ग्रपना ग्राशीर्वाद दिया। फिर बडे धीमे स्वर म उन्होंने ग्रचली स कहा कवरजी देवता ह यह तेरा सौभाग्य है कि तुझे उनकी सेवा करने का ग्रवसर मिला है। प्राणपण से उनकी सेवा करना, उन पर कोई विपत्ति न ग्राने पाये।' यह कहते कहते राजमाता गुणवती का गला भर ग्राया ग्रौर उनकी ग्रांखो म ग्रासू ग्रा गये।

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

चूण्डा नित्य की भाति राज्य क पूर्वोत्तरवाले क्षेत्रो का दौरा करके लौट रहे थे ग्रपने विचारो म खोये हुए-स। राज्य को एक सम्पन्न ग्रौर सुसम्पन्न क्षेत्र बनाने की योजना का जो चित्र ग्रपन मानस-पटल पर उन्होंने बनाया था वह धुधला पडता जा रहा था। उन्हे यह ग्रनुभव हो रहा था कि एक दु साध्य कार्यक्रम उन्होंने उठा लिया है, विशेष रूप से धन निष्ठा ग्रौर स्वाभिमान की दृष्टि से। मेवाड के ग्रनेक शक्तिशाली सामन्तो ग्रौर धनी श्रेष्ठियो न चूण्डा को पूरी सहायता देने की इच्छा जतायी थी, लेकिन मेवाड क शासन एव राणा मुकुलजी के हितो क विपरीत होने के कारण वह सहायता उन्होंने नही ली। चूण्डाजी जो कुछ त्याग सकते थे वह ग्रपनी इच्छा से, जो कुछ प्राप्त कर सकते थे वह ग्रपने बाहुबल स।

उनके मानस पटल पर समस्त राधा के इलाके का एक मानचित्र था—क्या खेती हो सकती है, कहा बस्तियां बस सकती है, कहाँ से एक भाग से दूसरे भाग को जोड़नेवाली सडकें बन सकती है। चार घण्ट से लगातार घोडे की पीठ पर सवार रहने के कारण वह कुछ क्लान्त-से हो गये थे, तन से उतना नही जितना मन से। प्राय एक सप्ताह पहले सामन्त कम्मल और अँचली चित्तौड से लौटे थे। उनसे चित्तौड की राजनीतिक स्थिति का जो आभास उन्हे मिला, उससे वह चिन्तित थे। एकाध बार उनके मन मे आया भी कि वहा जाकर वह स्वय वस्तुस्थिति का पता लगायें, लेकिन जब तक गुणवती उन्हे स्वय चित्तौड न बुलाये तब तक वहा न जाने का उन्होने सकल्प जो कर लिया था। वह सकल्प न टूटने पाये, यही भावना उन्हे रोक रही थी।

एक ओर विरक्ति की सीमा तक पहुचनेवाली उनकी निस्पृहता, दूसरी ओर आत्मविश्वास एव सकल्प से भरा उनका हठ। और इन दोनो के बीच झूलता हुआ अपने छोटे भाई राणा मुकुलजी के प्रति उनका दायित्व।

एकाएक चूण्डा चौक उठे। चार सशस्त्र सैनिक उनके सामने खडे थे। ये लोग चूण्डा के सैनिक तो नही थे क्योकि अपने हरेक सरदार और सैनिक को वह पहचानते थे। उन्होने अपना घोडा रोकते हुए प्रश्न किया "तुम लोग कौन हो और कहा से आये हो?"

मगर उनके प्रश्न के उत्तर मे उन चारो के भाले तन गये। जो सैनिक सबसे आगे था उसने भाले से चूण्डा पर वार किया।

चूण्डा भले ही असावधान रहे हो, उनके अश्व ने तेजी के साथ कतराकर उस प्रहार को बचा लिया। चूण्डा की तलवार निकल पडी। उन्होने घोडे से कूदकर उस सैनिक पर तलवार से प्रहार किया और तुरन्त ही उसका सर कटकर भूमि पर लोटने लगा। तभी उन्हे अनुभव हुआ कि उन्हे तीन शत्रुओ का मुकाबला करना है जो पूर्ण रूप से सशस्त्र है—तलवार भाले और ढाल से सुसज्जित, और उनके पास केवल एक तलवार थी।

उन तीनो ने भी अपनी अपनी तलवारें निकाल ली थी। दूसरे

सैनिक की तलवार उनकी बायीं भुजा को छूती हुई निकल गयी, लेकिन उनकी तलवार से उस सैनिक की भुजा तलवार-सहित कटकर गिर गयी। इसी समय उन्हें अपने पीछे एक चीख सुनायी दी और चौथा सैनिक तेजी के साथ भागता हुआ नजर आया। उन्होंने मुड़कर पीछे देखा, उनके ठीक पीछे तीसरा सैनिक जमीन पर पड़ा था और उसकी छाती में एक तीर घुसा हुआ था। वह तड़पते हुए दम तोड़ रहा था।

यह तीर कहाँ से आया? यह जानने के लिए चूण्डा ने अपने चारों ओर देखा लेकिन कहीं कोई नजर नहीं आया। उनका ध्यान उस सैनिक से हट गया था जिसकी भुजा कटकर गिर गयी थी। घायल सैनिक का तड़पना वह देख ही रहे थे कि उन्हें एक तीर की सनसनाहट सुनायी दी और साथ ही एक चीख की आवाज भी। उन्होंने मुड़कर देखा—वह हथकटा सैनिक जमीन पर लोट रहा था, एक तीर उसके पेट में धँसा हुआ था। चूण्डा ने फिर अपनी नजर चारों ओर घुमायी और उन्होंने देखा कि बायीं ओरवाले घने जंगल से हरिणी की भाँति चौकड़ी भरती हुई एक युवती उनकी ओर चली आ रही है। उन्होंने तत्काल उस युवती को पहचान लिया, वह अँचली थी। उस अंचल में और उस बेला में अँचली को देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ। वह अंचल राजधानी से प्रायः सात कोस की दूरी पर था, और उस समय सूर्य मस्तक पर आ चुका था।

चूण्डाजी चिल्ला पड़े, "तुम अँचली—तुम! इस बेला में और गहन वन में एकदम निरान्त अकेली!"

अँचली अब तक चूण्डाजी के निकट आ गयी थी। भूमि पर अपना मस्तक नवाते हुए अँचली बोली "हाँ महाराज! महाराज पर विपत्ति आयी और महाराज की छाया यह अँचली प्रकट हो गयी।" अँचली के मुख पर आत्मसन्तोष का उल्लास था।

अँचली की कविता चूण्डाजी की समझ में नहीं आयी, "मैं समझा नहीं।"

अँचली की हँसी की झनकार अब चूण्डा के कानों में गूँज उठी। उसने कहा "महाराज ने अपनी अनुचरी के रूप में मुझे अपने साथ रहने से मना कर दिया था तो मैं महाराज की छाया बन गयी। इस राज्य

म महाराज जहाँ भी जाते है, ग्रँचली उनकी परछाइ बनकर उनके साथ लगी रहती है।'

चूण्डाजी को जैसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था "तुम क्या रोज मुझसे छिपे छिपे पदल ही मरे साथ कोसो की यात्रा करती हो ?"

"हाँ महाराज ! हम खुले जगलो मे रहनेवाले भील—हम शिकार का पीछा करते हुए कोसो दौडना पडता है, तो फिर दूरी का सवाल ही क्या आये हमारे सामने ? मैं तज म तेज हिरन का भी पीछा कुछ दूर तक कर सकती हूँ। मैं तो महाराज के अनजाने म महाराज की छाया बन गयी हूँ—इसमे कोई भूल हो गयी हो या अपराध हुआ हो तो महाराज, छमा कर दें मुझे।"

नियति के इस विधान पर दग रह गये चूण्डाजी। ग्रँचली की भक्ति और अपने प्रति उसकी अनुरक्ति का यह रूप देखकर उनका मस्तक झुक गया। उन्होंने मन ही-मन भगवान का धन्यवाद दिया और फिर ग्रँचली पर अपनी दृष्टि जमा दी 'भगवान के वरदान के रूप म तुम मेरे जीवन म आयी हो !" फिर उन दोनो सैनिको की ओर सकेत करते हुए, जो भूमि पर पडे अन्तिम साँस ले रहे थे, कहा 'ग्रँचली तुमने मेरे प्राणो की रक्षा की है।'

ग्रँचली ने अपना मस्तक नवा दिया, भावना के आवेग म तनिक कापते हुए और अत्यन्त कोमल स्वर मे वह बोली 'महाराज के प्राणो की नहीं, मैंने तो अपने प्राणो की रक्षा की है—मैं इतना ही जानती हूँ।"

चूण्डा चक्कर मे पड गये, "अपने प्राणो की कैसे तुम्हारे ऊपर तो कोई प्रहार हुआ नहीं था ?'

और ग्रँचली जैसे कविता की साकार प्रतिभा बन गयी हो, "महाराज मनुष्य का प्राण तो उसके देवता म बसता है। महाराज मेरे देवता हैं और महाराज मे ही इस ग्रँचली के प्राण बसते है।"

चूण्डा के प्रति अपने निष्कलक और पावन प्रेम की इस स्वीकारोक्ति के क्रम म ग्रँचली के स्वर मे न किसी तरह की हिचकिचाहट थी, न किसी तरह का दुराव छिपाव था, न किसी तरह की लाज। जैसे हिमाच्छादित

पवनो के किसी झरने की धारा की निमल धवलता और नैसर्गिक सगीत हो उसमे । एक तरह की ऐसी पुलकन जो उन्होने पहले कभी अनुभव न की थी।

एकाएक चूण्डा मन ही मन काँप उठे । उनके सामने नारी थी एक ताम्र-वर्णी कलाप्रतिमा, साचे मे ढली हुई सी—यावन जिसके अगो से फूटा पड रहा था । समस्त समर्पण-भावना के उस साकार रूप को अपने सामने देखकर वह मानो अपने आप से ही घबराकर झट घोडे पर सवार हो गये । अपने को जबदस्ती नियन्त्रित करते हुए वह बोले 'तुम साकार जलदवी हो ! मेरे न जाने किस पुण्य के फलस्वरूप तुम प्रकट हुई हो—एक ऐसे पुरुष के आगे जिसका अन्तर कलुष से भरा है। नही, तुम अदृश्य ही रहो—अदृश्य ही रहो ! ' और चूण्डा ने अपने घोडे को राजधानी की ओर दौडा दिया।

अचली अपलक नयनो से चूण्डाजी को जाते देखती रही। जब वह उसकी दृष्टि से ओझल हो गये तो उसने उन दोनो मृतप्राय सैनिको के बदन से अपने तीर निकाले और सूखे पत्तो से उन पर लगे हुए लहू को साफ किया । फिर थिरकती हुई वह दक्षिणवाले जगलो मे विलीन हो गयी।

राजधानी के अपने भवन मे पहुचकर चूण्डा ने अपने दो विश्वस्त सरदारो और आठ सैनिको को बुला भेजा । घोडो पर सवार उन लोगो के साथ वह फिर उसी स्थल की ओर रवाना हुए जहा उन पर प्रहार हुआ था। तीनो सैनिक वहा मरे पडे थे और आकाश पर गिद्ध मडराने लगे थे। इन लोगो ने उन शवो का निरीक्षण किया । एक सरदार ने कहा "अन्नदाता ये तो राठौर सैनिक दिखते है।" दूसरे सरदार ने कहा, "अन्नदाता, जिसका सर भूमि पर कटा पडा है, उसे मैं पहचानता हूँ । वह राव रणमल का अगरक्षक था।'

चूण्डा ने अपना सर हिलाया 'हूँ ! तो रणमल ने मेरी हत्या करने का प्रयत्न किया है ? स्थिति इतनी बिगड गयी है इसका मुझे अनुमान नही था । लगता है चित्तौड मे जल्दी ही कोई भयानक अनिष्ट होने वाला है ।

एक सनिक ने हाथ जोड़कर कहा, "महाराज! गिद्धो के झुण्ड एकत्रित हो रहे हैं, इन शवों का क्या होगा ?"

शान्त भाव से चूण्डा बोले, "हमें अपने धर्म का निर्वाह करना चाहिए। झाड़ झंखाड़ तथा जंगल की लकड़ियों का ढेर लगाकर अग्नि प्रज्वलित की जाय और उसमें इन शवों का दाह कर दिया जाय।"

दाह-संस्कार के पहले उन शवों की तलाशी ली गयी। काम की कोई चीज नहीं निकली उनके पास। चूण्डा के सैनिकों ने पगडण्डी से कुछ दूरी पर झाड़ झंखाड़ तथा लकड़ियों की चिता जलाकर तीनों शवों को उसमें डाल दिया।

चूण्डा जब राजधानी वापस लौटे सूर्यास्त हो रहा था। अजीब तरह की उदासी भर गयी थी उनके अन्दर। चितौड़ में क्या हो रहा था, इसका कुछ-कुछ आभास तो कुछ दिन पहले अँचली और सम्मन की बातों से हो गया था, लेकिन उन सबसे चूण्डा तो अनजान नहीं थे। फिर चूण्डा पर यह प्रहार क्या हुआ? अगर अँचली उस अवसर पर उनकी सहायता के लिए न आ गयी होती तो वह शायद जीवित नहीं लौटते। और अँचली उनके जीवन में क्या वरदान के रूप में आ गयी? चूण्डा के पास इन प्रश्नों का कोई उत्तर न था।

राजधानी लौटकर चूण्डा ने स्नान पूजन करके भोजन किया और थके हुए से वह अपनी शय्या पर लेट गये। लेकिन उन्हें नींद नहीं आ रही थी। उनके सामने प्रश्न था—क्या उन्हें स्वयं चित्तौड़ जाकर स्थिति का निरीक्षण करना चाहिए?

बाल्यकाल से ही चूण्डा में एक तरह की निस्पृहता थी, लेकिन इस निस्पृहता के साथ उनमें एक तरह का हठ भी था। जहाँ तक निस्पृहता का प्रश्न है मनोवैज्ञानिक कसौटी पर वह एक सामाजिक सत्ता है और व्यक्तिवाद का उत्कृष्ट पक्ष है, लेकिन हठ विशुद्ध रूप से वैयक्तिक सत्ता है, अहंवाद से युक्त। शायद यह हठ स्वयं में निस्पृहता की प्रतिक्रिया का एक विकृत पहलू है। निस्पृहता दूसरों के प्रति होती है और दूसरे होते हैं व्यक्ति से अलग हटकर। अपनी भावना, अपनी आत्मतुष्टि निस्पृहता का सबल पक्ष है। और जहाँ तक आत्म-तुष्टि का प्रश्न है, हठ उसका

मुख्य भाग ह, एक विकृति की भाति ग्रहम मे चिपका हुग्रा ।

राजमाता गुणवती ग्रौर राणा मुकुलजी के लिए चूण्डाजी न जो कुछ भी किया वह ग्रपने ग्रहम की तुष्टि के लिए ग्रौर उह इस तुष्टि का ग्रनुभव हो रहा था।

पिता राणा लाखा न गयाके ग्रभियान के समय चूण्डाजी पर विश्वास करके राणा मुकुलजी क ग्रभिभावक होन का भार सौंपा था। सदभावना ग्रौर ग्रास्था के साथ वह ग्रपना दायित्व निभा रह थ। चूण्डाजी का राव रणमल की नीयत पर विश्वास नहीं था — रणमल ऊपर स ग्रत्यत मधुरभाषी दिखता था लकिन उसके ग्र तर म कुटिलता भरी हुइ थी। सौम्य स चेहर के पीछे एक ग्रत्यत कुरूप व्यक्तित्व—चूण्डा न रणमल का देखत ही जान लिया था। कठिनाइ केवल यह थी कि राव रणमल की चाला का ता वह मुकाबला कर सकत थे, लेकिन राजमाता गुणवती के ग्राग बिल्कुल विवश थे।

बालक के ग्रभिभावक का पद उसके पिता के बाद उसकी माता को ही मिल सकता ह शायद पिता की ममता से भी ग्रधिक माता की ममता हाती है। लेकिन नीतिशास्त्र की व्यवस्था से ग्रधिक प्रबल धम की व्यवस्था ह इसलिए धम पर सम्पूण ग्रास्था रखनवाले चूण्डाजी के लिए धम का ही स्थान नीति स ऊँचा था। धम वस्तुत वयक्तिक सत्ता है, नीति सामाजिक सत्ता ह।

राजमाता न उन पर ग्रविश्वास किया था, यह बात चूण्डा के मन म तीर की भाति चुभ गयी थी। चित्तौड छोडते समय उन्हान मन-ही मन सकल्प कर लिया था कि जब तक राजमाता स्वय उह चित्तौड नहा बुलायेंगी तब तक वह चित्तौड न जायेंग। यह सकल्प भी सचमुच हठ का ही तो दूसरा रूप ह! चूण्डा ने ग्राकाश की ग्रार ग्रपन दोना हाथ जाड दिय "प्रभो तुम्हारा जा विधान ह वही होगा। मुझे ता ग्रपन धम का पालन करना है फलाफल तुम्हारे हाथ म है। ग्रौर तब चूण्डा न ग्रसीम शाति ग्रनुभव की।

दूसर दिन जब चूण्डा स्नान पूजन करके ग्रपने भवन के बाहर निकल ग्रँचली नित्य की भाति बाहर भूमि पर बैठी उनके दशना की

प्रतीक्षा कर रही थी। चूण्डा को देखते ही उसने नित्य की भांति भूमि पर अपना मस्तक नवाकर कहा, "महाराज, कोई हुकुम है ?

अँचली को देखते ही चूण्डा के मन में एक प्रकार की ममता का पुलक जाग पडा। उन्होंने मुस्कराते हुए कहा, "मेरा हुकुम—मेरा हुकुम यह है कि मेरे जाने बिना मेरी छाया बनकर मेरा पीछा करना तुम छोड दो।'

'कौन-सा अपराध हो गया है मुझसे, जो इतना बडा दण्ड दे रहे हो महाराज ?" अँचली की आँखें सजल हो गयीं।

अँचली के इस उत्तर से चूण्डा विचलित हो उठे, 'दण्ड नहीं दे रहा हूँ, तुम्हें मैं खतरे में नहीं डालना चाहता।'

"महाराज के रहते मुझे कोई खतरा नहीं है।" अँचली बोली "महाराज की सेवा करना तो मेरा सबसे बडा पुण्य है।"

चूण्डा को जैसे अपने ही कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। वह बोले, "अँचली, मुझे लगता है कि चित्तौड में बहुत कुछ अप्रिय होनेवाला है। मैं वहाँ से संकल्प करके आया हूँ कि जब तक राजमाता मुझे नहीं बुलायेंगी तब तक मैं स्वयं चित्तौड नहीं जाऊँगा। तुम अगर अपने कुछ साथियों को लेकर नाचने गानेवाले के रूप में चित्तौड चली जाओ और वहाँ कुछ दिन रहने के बाद चित्तौड की वस्तु स्थिति का पता लगाकर मुझे सूचना दो तो वह मेरी सबसे बडी सेवा होगी। तुम्हारी सहायता करने के लिए मैं छद्मवेश में बीस सैनिकों को तुम्हारे आगे पीछे भेज दूँगा। मैं उन्हें आदेश दे दूँगा कि तुम जो कुछ कहो उसका वे राज्याज्ञा की तौर पर पालन करें।"

अँचली बोली, "महाराज ! मैं निर्बुद्धि नारी ! यह सब मैं कैसे कर सकूँगी ?'

'तुम सबकुछ कर सकोगी—तुम तो साक्षात भवानी हो ! ' चूण्डा जी मुस्कराये, और फिर विनोद के स्वर में बोले "लेकिन तुम्हें नित्य प्रात मेरे दर्शनों का अवसर नहीं मिलेगा।"

अँचली भी हँस पडी, 'देवता की मूरत तो मेरे हृदय में है ! अपने देवता के दर्शन करने से मुझे रोक कौन सकता है ?" और फिर कुछ गम्भीर होकर बोली, 'तो मुझे कब जाना होगा महाराज ? '

कुछ सोचकर और मन ही मन हिसाब लगाकर चूण्डा बोले, "आज द्वादशी है। कल प्रातःकाल तुम लोग यहाँ से प्रस्थान कर दो तो चतुर्दशी के दिन सन्ध्या के पहले ही चित्तौड़ पहुँच जाओगे। मैं अभी अपने बीस सैनिकों को आदेश दिये देता हूँ—कुछ आज चल देंगे, कुछ कल तुम्हारे जाने के बाद चलेंगे। तो अब तुम घर जाकर यात्रा की तैयारी करना आरम्भ कर दो।"

अँचली ने भूमि पर अपना मस्तक नवा दिया, "महाराज के हुक्म को मैं पालन करूँगी।" और वह अपने घर को लौट पड़ी। चलते चलते अचली ने यह अनुभव किया कि एक अनजाने विषाद की छाया कहीं अदृश्य से निकलकर उसके हृदय के अन्दर सिमटने लगी है। फिर भी वह सन्तुष्ट थी प्रसन्न थी।

चूण्डा ने एकाएक जो निर्णय ले लिया था उस पर उन्हें स्वयं ही आश्चर्य हो रहा था। अचली के जाने के बाद उनके मन में आया कि वह अँचली को चित्तौड़ जाने से रोक दें, लेकिन निर्णय लिया जा चुका था। उस दिन उन्होंने राधा के सुदूर क्षेत्रों में दौरा करने का कार्यक्रम स्थगित कर दिया। उन्होंने अहरिया के सरदार भँवर को बुला भेजा। भँवर के आते ही उन्होंने पूछा "भँवर, चित्तौड़ के कुछ समाचार मिले हैं क्या?"

हाथ जोड़कर भँवर ने उत्तर दिया, "चित्तौड़ से तो अपना सम्बन्ध भी कट गया है सरकार! अपने परिवार को मैं यहाँ बुला लिया है। लेकिन अभी कुछ अहरिया के परिवार वहीं हैं यहाँ निवास की व्यवस्था हो जाय तो वे परिवार भी यहाँ आ जायेंगे। आजकल यहाँ जो समाचार मिलते हैं वे शुभ तो नहीं हैं। गढ़ की रक्षा के लिए जैसलमेर के भट्टी बुला लिये गये हैं वे राव रणमल को अपना स्वामी मानते हैं।

"और सुना है कि गढ़ के फाटक पर कड़ी छानबीन होती है, बाहर से चित्तौड़ में प्रवेश करना कठिन हो गया है? मुझे लगता है कि हम चित्तौड़ के अन्दर प्रविष्ट होकर राठौरों से युद्ध करना होगा तभी चित्तौड़ मुक्त होगा।

कुछ सोचते हुए भँवर ने कहा, "महाराज जैसी आज्ञा दें।"

'तुम बीस ग्रहरिया को साथ लेकर चित्तौड़ चले जाओ—कुछ ग्रहरिया के परिवार तो अभी वहां है ही। बहाना होगा कि परिवार वालों के साथ दीपावली पर्व मनाने आये हैं। अचनी भीला के नर्तक संगीत के दल को लेकर कल जा रही है। तुम ग्रहरिये लोग चित्तौड़गढ़ के फाटक के भेदों को जानते हो। तो मेरे आदेश की एक मास तक प्रतीक्षा करना। जहां तक शस्त्रों की व्यवस्था का प्रश्न है'

भँवर ने बात पूरी कर दी, 'उसकी चिंता न करें महाराज—वह चित्तौड़ पहुंचकर हम स्वयं कर लेंगे।'

सोलहवाँ परिच्छेद

वह मोह ढंग की कमी जिसे राजमाता गुणवती अनुभव भी करती थी और नहीं भी अनुभव करती थी। मेवाड़ की समस्त राज्य सत्ता अब पूरी तौर से राव रणमल के हाथ में आ गयी थी। घोर लम्पट और चरित्रहीन, क्रूर और स्वार्थी—इन विकृतियों से युक्त होते हुए भी जहां तक प्रशासन का प्रश्न है, रणमल में अद्वितीय सूझ बूझ थी। अत्यन्त मधुरभाषी हरेक आदमी को अपनी वाक्चातुरी से वश में कर लेने में निपुण राव रणमल ने मेवाड़ और चित्तौड़ नगर को जैसे अपने वश में कर लिया था। वैसे मेवाड़ के राणा तो मुकुलजी थे और राजसिंहासन पर बैठते भी वही थे, लेकिन रणमल की गोद में। रणमल अपने साथ अपने पौत्र सिंहाजी को भी राजसिंहासन पर बैठा लेते थे, गुणवती को इसमें कोई आपत्ति नहीं थी।

दीपावली का पर्व निकट आ रहा था। एक दिन कलवाड़ा से रघुदेव चित्तौड़ आये, राजमाता गुणवती और राणा मुकुलजी का हाल-समाचार लेने के लिए। दीपावली के दो दिन पहले यानी धन त्रयोदशी के दिन रघुदेव के पुत्र रामदेव का अन्नप्राशन संस्कार था इसलिए उसने विनय के साथ त्रयोदशी के दिन राजमाता गुणवती और राणा मुकुलजी को उस उत्सव में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया, 'राजमाता सरकार, यदि राणा मुकुलजी के साथ राजमाता भी उस उत्सव को पवित्र करें

ता मैं अपने को बडा भाग्यशाली मानूगा।"

राजमाता न धन त्रयोदशी के दिन कैलवाडा चलन की अनुमति द दी। यह निश्चित हुआ कि त्रयोदशी के दिन प्रात काल ब्राह्म मुहूर्त मे राजमाता के साथ राणा मुकुलजी कैलवाडा के लिए प्रस्थान करेंगे और अन्नप्राशन के बाद ही दोपहर के समय कैलवाडा से लौट पडेंगे, जिसस सूर्यास्त के समय वे चित्तौड वापस आ जायें। रघुदेव के जाते ही गुणवती ने कलवाडा की यात्रा की तैयारी का आदेश दे दिया।

राणा मुकुलजी के साथ अपने कलवाडा जाने की खबर गुणवती ने राव रणमल के पास भिजवा दी। स ध्या के समय राव रणमल गुणवती से मिले, उन्होंने गुणवती स कहा, 'मुझे तो राणाजी का रघुदेव के यहा जाना उचित नहीं लगता।

आश्चय म गुणवती न अपने पिता को देखा, "क्या, रघुदेव तो राणाजी के भाई हैं। हमे अपन वशजो से मिलकर ही रहना होगा।

"नहीं, ऐसी बात नहीं है।" रणमल बोले, *"बात यह है कि राणाजी* अभी शिशु है चित्तौडगढ के बाहर जाना उनके लिए उचित नहीं होगा।

गुणवती न दृढतापूवक उत्तर दिया "राणाजी मेवाड के शासक हैं— अपन राज्य म वह कहीं भी जाने को स्वतन्त्र है।"

गुणवती के स्वर म जो दृढता थी वह विरोध और सघर्ष का एक रूप धारण कर सकती है—रणमल जसा अनुभवी व्यक्ति यह जानता था। उसने कुछ नरम होकर कहा, "नहीं-नहीं, मेरा आशय यह नहीं था। दरअसल बात यह है कि इन दिनों चित्तौड से बाहरवाले क्षेत्रों की व्यवस्था कुछ शिथिल-सी पड गयी है। चित्तौडगढ की सुरक्षा का पूरा पूरा प्रबन्ध तो मन कर लिया है लेकिन मेवाड के सिसौदिया सनिक चूण्डा के साथ रहने के लिए निरन्तर राघ्रा की ओर जा रहे हैं। ऐसी *स्थिति म मेवाड के बाहरी क्षेत्रों की व्यवस्था करने म मुझे* समय लगेगा।'

गुणवती न उसी अविकार और दृढता के साथ उत्तर दिया, "मैं कलवाडा म रघुदेव स इस विषय पर परामर्श करूँगी। राणा मुकुलजी

मेवाड के शासक हैं, सिसौदिया वश के सिरमौर ! अपने ही राज्य की राजधानी चित्तौड मे ब दी की भाति रहना उन्हे शोभा नही दगा।'

रणमल उठ खडे हुए, "जैसी तुम्हारी मर्जी !"

अपने कक्ष मे पहुचकर रणमल न बीजा को बुलाया, "बीजा, रात्रा से कोई समाचार मिला ?"

"रतना और उसके दो साथियों को चूण्डाजी के सहायकों न मार दिया, गनेसा बचकर भाग आया है। हाँ, चूण्डाजी को यह आभास नहीं हो पाया कि उन पर प्रहार करनेवाले कौन थे।'

चिन्ता के भाव से रणमल बोले, "आभास तो हो जायगा, आज नही तो कल ! कल नही तो परसो !" फिर कुछ सोचकर उन्होंने कहा, "इसके पहले कि दुश्मन सावधान हो, उसका विनाश करना आवश्यक है—मेरा तो यही मत है।"

बीजा बोला, "मैं समझा नहीं। मुझे तो आपका कोई दुश्मन नही दिखायी दता। मेवाड की सारी प्रजा, सभी सामन्त और सरदार आपसे सन्तुष्ट है।"

"जो मातहत है उन्हें सन्तुष्ट होना ही है।" रणमल ने कहा 'ये सब सैनिक और राजकर्मचारी सत्ता के गुलाम होते हैं। असली दुश्मन तो वह है जो बाहर है या वह जो परम्परा के अनुसार मेवाड का स्वामी है, लेकिन अभी असहाय और अबोध है। दोनों ही सही सलामत हैं। मुकुलजी और उसके भाई चूण्डा। तीसरा दुश्मन भी है—रघुदेव। ये लोग राजवंश के सदस्य हैं तथा छोटा होने पर भी मुकुलजी इस राजवंश का प्रमुख है।"

बीजा स्वयं धूर्त, निर्दयी और न जाने क्या क्या था लेकिन रणमल की बात पर वह अन्दर-ही अन्दर सहम गया, 'तो फिर—तो फिर और आगे वह बोल नही पाया।

"मेवाड के स्वामी राणा मुकुलजी हैं, राव रणमल नहीं है—यह समझ ले। मेवाड के समस्त सामन्त, सैनिक और राज्यकर्मचारी मुकुलजी के दास हैं, मेरे नहीं हैं। केवल वही सरदार और सैनिक, जो मन्दौर से मेरे साथ आये हैं और जिन पर मैं निर्भर हूँ, मेरे हैं। ये लोग अभी तक

अपने को मेवाड़ का नागरिक नहीं समझ पाये हैं। लेकिन ये आखिर हैं ही कितने कि उनके सहयोग से मैं अपने को चित्तौड़ में जमा पाऊंगा? चित्तौड़ की सारी प्रजा चाहे वह राजपुरुष हो, चाहे वह चाकर हो, चाहे वह श्रेष्ठी हो, चाहे वह दस्तकार हो, सब के-सब राणा मुकुलजी के लिए उठ खड़े होंगे।' राव रणमल आवेश में यह सब कह जा रहे थे और बीजा जैसे सबकुछ समझता जा रहा था।

कुछ रुककर रणमल ने फिर कहा, 'मेरा वह है जो मेरा नमक खा रहा है, और मेवाड़ के निवासी तो नमक खा रहे हैं राणा मुकुलजी का।" यह कहकर रणमल चुप हो गये जैसे एक पाप भावना मथ रही हो उनके अन्तर को।

थोड़ी देर तक वहां पर एक मौन छाया रहा जिसे बीजा ने तोड़ा, तो फिर क्या किया जाय? सरकार आज्ञा करें।

रणमल उस समय तक सुस्थिर और शान्त हो गये थे उन्होंने कहा त्रयोदशी के दिन राणा मुकुलजी केलवाड़ा जा रहे हैं रघुदेव के यहां सन्ध्या के समय वह लौट आयेंगे। उनके साथ पैदल सैनिक रहेंगे और राणाजी अपनी मां के साथ हाथी पर होंगे। तो, तुम दोपहर के समय चित्तौड़ से दो कोस की दूरी पर जो काले भैरव का मंदिर है वहां पांच छः घुड़सवारों को तैनात कर दो। जैसे ही मुकुलजी का हाथी लौटते समय वहां पहुंचे वैसे ही द्रुतगति से ये घुड़सवार राणा के पैदल सैनिकों पर आक्रमण करें। मुकुलजी के हाथी पर तुम अपने महावत मंगना को तैनात कर देना और उसे समझा देना कि क्या करना होगा। मंगना काले भैरव के मंदिर से हाथी को पूरब के कसरा गांव की ओर मोड़कर दौड़ा दे। दो घुड़सवार हाथी के साथ रहेंगे—बाकी घुड़सवार कुछ देर तक राणा मुकुलजी के पैदल सैनिकों को रोके रहें।"

'राजमाताजी तो राणाजी के साथ हाथी पर पर ही रहेंगी?"

हां। कसरा वहां से तीन कोस की दूरी पर है। वहां पर तुम चार सांडनी-सवारों को तैनात रखना। गुणवती को वापस कर तुम कसरा में ही छोड़ देना और मुकुलजी को लेकर सांडनी सवारों के साथ रातों रात अरावली पर्वत की ओर मन्दार की सीमा में पहुंच जाना। वहां किसी

छोटे से गाव म रुपये देकर किसी गरीब औरत के यहा मुकुलजी के पलने की व्यवस्था करा देना। भावी कायक्रम की रूपरेखा बाद म बना ली जायेगी।"

मौत से नित्य-प्रति खेलने वालो के लिए य सब बडी साधारण सी बातें ह। रणमल के मुख पर अब हल्की मुस्कान आ गयी थी "मैं अपने दाहिने के रक्त से अपने हाथ नहीं रँगना चाहता। यह व्यवस्था तो मुझे अपने ऊपर आनवाले खतरे को दूर करने के लिए करनी पड रही है। वह हरामजादी मेरी लडकी ही मेरे विरुद्ध हो रही है—मेरी बातें मानने तक को वह तैयार नही। तो अब यही मुझे ठीक लग रहा है। मेवाड का स्वामी बनने के लिए मुझे मुकुलजी को अपने रास्ते से हटाना ही पडेगा।"

"मैं तो सरकार का सेवक हूँ। आप निश्चिन्त रहे सब कुछ हो जायगा।' यह कहकर बीजा वहा से चला गया।

त्रयोदशी के दिन ब्राह्म मुहूर्त म राजमाता गुणवती न राणा मुकुल-जी के साथ कैलवाडा के लिए प्रस्थान कर दिया। राजमाता और राणा मुकुलजी हाथी पर सवार थे तथा हाथी के आगे पीछे बीस सशस्त्र पैदल सनिक चल रह थ।

चित्तौडगढ के फाटक के बाहर निकलते ही जैसे गुणवती की चेतना म आमूल परिवतन हो गया। एक लम्बे अरसे तक चित्तौड म बन्द रहने के बाद जसे वह अपने अन्दर एक घुटन-सी अनुभव करने लगी थी। उन दिनो ज्वार और बाजरा के खेत कट चुके थे या कट रह थे, अजीब तरह के उल्लास से भरा हुआ वातावरण था। रास्ते के किसान अपना काम काज छोडकर अपने राणाजी के दशन करने के लिए उमड पडे थ तथा उनकी जय जयकार कर रह थे। बहुत लम्बे काल के बाद अब गुणवती को अनुभव हो रहा था कि उनके पुत्र मुकुलजी गौरवशाली मेवाड भूमि के स्वामी ह और वह राजमाता ह।

कैलवाडा म राणा मुकुलजी और राजमाता गुणवती का जिस ममता और स्नेह के साथ स्वागत हुआ, उससे वह विभोर हो उठी। रघुदेव के पुत्र राजदेव का अन्नप्राशन सस्कार एक अविस्मरणीय उत्सव के रूप मे

सम्पन्न हुआ। मध्याह्न-भोजन के बाद ही राणा मुकुलजी की सवारी चित्तौड के लिए लौट पडी, सूर्यास्त के पहले ही चित्तौड पहुच जाने का कार्यक्रम था।

चित्तौड स दो कोस पहले कालभैरव का मंदिर था। जब राणा जी की सवारी वहाँ पहुची, तो सूय की सवारी भी अस्ताचल के पास पहुच चुकी थी। और उसी समय माना अदृश्य स आठ घुडसवार सनिकों ने निकलकर राणा मुकुलजी के दल पर आक्रमण कर दिया। राणा मुकुलजी के साथ जो सनिक थे उनकी तलवारें भी निकल पडी। लेकिन पैदल सैनिकों और घुडसवार सैनिकों की स्थिति म अन्तर होता है। युद्ध आरम्भ हो गया था और राजमाता गुणवती आश्चय क साथ सब कुछ देख रही थी। और एकाएक उस अनुभव हुआ कि जिस हाथी पर वह और राणाजी सवार हैं वह पूरब दिशा की ओर तेजी के साथ बढ रहा है और दो घुडसवार सैनिक हाथी के पीछे-पीछे चले आ रहे हैं। उन्होंने चौंककर महावत स कहा, "कहाँ जा रहा है—चित्तौड का माग तो उत्तर की ओर है?

महावत ने कोई उत्तर नही दिया, जिससे राजमाता घबरा गयी। स्तब्ध और विवश सी उसने अपनी आँखें मूद ली।

लेकिन अदृश्य के विधान पर राव रणमल या बीजा का कोई वश नही था। राजमाता और राणा मुकुलजी को विदा करने के बाद ही कैलवाडा म रघुदेव को पता चला कि राणाजी तथा राजमाता को जो भेंटें मिली थी वह असावधानी के कारण कैलवाडा म ही रह गयी हैं। रघुदेव हिसाब लगाकर इस निणय पर पहुचा कि अगर उन भेंटों को साथ लेकर घोडा स राणाजी की सवारी का पीछा किया जाय तो चित्तौड से तीन चार कोस पहले ही उन्हें सौंपा जा सकता है। इसलिए वह तत्काल अपने आठ सशस्त्र घुडसवार अनुचरों के साथ उन भेंटों को लेकर चित्तौड की ओर चल पडा।

जिस समय य लोग कालभैरव के मंदिर के पास पहुचे उन्हें अजीब दृश्य दिखायी दिया। बीजा के छह घुडसवारों म स दो मरे पडे थे और शेष चार घुडसवार राणा मुकुलजी के साथवाले सनिकों स युद्ध

कर रहे थे। आठ पैदल सैनिक भूमि पर पड़े थे जो या तो मर गये थे या बुरी तरह घायल थे। रघुदेव और उसके साथियों के आते ही वे घुड़सवार सैनिक भाग खड़े हुए। राणा मुकुलजी के साथ वाले सैनिकों ने रघुदेव से समस्त घटना का विवाद वर्णन करते हुए बतलाया कि राजमाता का हाथी उत्तर में चित्तौड़ की ओर जाने के स्थान पर पूरब की ओर चला गया है तथा उस हाथी के साथ-साथ दो आक्रमणकारी घुड़सवार गये हैं। यह सब सुनते ही रघुदेव अपने अनुचरों के साथ बिजली की तेजी से पूर्व दिशा की ओर मुड़ गया।

बीजा और उसके साथी के निर्देशन में राजमाता और राणा मुकुलजी का हाथी तेजी से पूरब की ओर बढ़ता जा रहा था। राजमाता इस समय तक पूरी तौर से सम्भल गयी थी और अपनी स्थिति को ठीक तौर से समझने का प्रयत्न कर रही थी। हाथी के साथ जो दो घुड़सवार थे उनके मुँह ढके हुए थे, लेकिन राजमाता को लग रहा था कि उन्हें शायद कहीं देखा है। प्रायः डेढ़ कोस ही वे पहुँचे थे कि उन्हें दूर से घोड़ों की टापें सुनायी पड़ीं। टापों की आवाज से राजमाता ही नहीं चौंकी, बीजा और उसका साथी भी चौंक पड़े।

अंधकार अब तेजी के साथ उतर रहा था, फिर भी हाथी पर सवार गुणवती ने उल्लास के स्वर में चीखकर कहा, "अरे रघुदेव!" और न जाने कहाँ का बल आ गया था उसमें कि महावत को उसने ढकेलकर भूमि पर गिरा दिया। महावत के नीचे गिरते ही हाथी ने सूँड से उसे उठाकर अपने पैरों के नीचे दबा दिया तथा खड़ा हो गया। यह देख बीजा अपने साथी-सहित उस काली रात में बायीं ओर वाले जंगल में लोप हो गया।

बिना महावत का हाथी निर्लिप्त भाव से खड़ा था। जो अब तक महावत था वह उसके पैरों के नीचे दबा पड़ा था। रघुदेव ने पूछा, "राजमाताजी, आप और राणाजी सकुशल तो हैं?"

गुणवती की आँखें सजल हो आयीं, भर्राये गले से बोली, "रघुदेव! तुम लोग अगर न आ गये होते तो हम लोगों की क्या गति होती, कौन कह सकता है! पता नहीं कौन थे ये लोग, और हम लोगों के अपहरण

मे इनका क्या उद्देश्य था।"

'राजमाताजी महावत का हाथी ने इस बुरी तरह कुचल दिया है कि वह पहचाना तक नहीं जाता, उससे पूछताछ करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। और इधर रात्रि के अंधकार में आक्रमणकर्ता भी विलीन हो गये हैं। अब चलिए अब चित्तौड़ लौट चलें रात काफी गहरा गयी है। लेकिन चलें भी कैसे—महावत तो है ही नहीं।"

हाथी जैसे सब कुछ समझ रहा था। घूमकर वह बिना महावत के ही जिधर से आया था उसी दिशा में चल पड़ा। जब सब लोग कालभैरव के मन्दिर के पास पहुंचे, तो वहां पर चिंतित खड़े पैदल सैनिकों ने हर्षध्वनि की। रघुदेव ने तुरन्त अपने साथियों के घोड़ों पर हताहतों को लदवाया और सब लोगों के साथ चित्तौड़ की ओर चल पड़ा।

राणाजी के लौटने की प्रतीक्षा में चित्तौड़गढ़ का फाटक अभी तक खुला था। सब के गढ़ में प्रवेश करते ही फाटक बन्द कर दिया गया। रघुदेव और उसके साथी फाटक पर से ही कैलवाड़ा लौट गये।

राव रणमल अपने विश्वस्त मुसाहबों के साथ बैठे थे, मदिरा के दौर-पर दौर चल रहे थे। लेकिन उस समय उस तरह के हास विलास में राव रणमल की कोई रुचि नहीं थी। वह अधीरता के साथ बींदा के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे। आधी रात के लगभग उन्हें राजमाता और राणा मुकुलजी के आने की सूचना मिली। यह भी समाचार मिला कि हाथी का महावत मारा गया है और बीस सैनिकों में से आठ हताहत हुए हैं। अपने अनुचरों के साथ फाटक पर से ही रघुदेव के कैलवाड़ा लौट जाने की सूचना जब मिली तो वह चौंक पड़े। इस बार उन्होंने बहुत बड़ा और अचूक वार किया था और यह वार भी बेकार गया।

पूरे राजभवन में राणाजी तथा राजमाता के अपहरण के प्रयास की चर्चा थी। राव रणमल राजमाता गुणवती के पास पहुंचे। उन्होंने गुणवती से कहा 'लौटने में बड़ा विलम्ब हो गया। सुना है कि रास्ते में बहुत बड़ा हादसा हो गया—वह तो रघुदेव के समय में पहुंचने के

हाती—इसका अनुमान आप स्वयं लगा सकते हैं।"

बीजा ने जो कुछ कहा वह सत्य था। रणमल ने एक ठण्डी सास ली, 'तू ठीक कहता है। जब तक मेवाड के राजकुल का कोई भी व्यक्ति जीवित है, मैं निरापद नही हू। जाकर सो जा, कल विचार करूँगा कि अब क्या किया जाय। जो भी करना है, शीघ्रता के साथ करना है। चित्तौड की पूरी चौकीदारी का भार तुझ पर है, कल से ही सावधानी के साथ अपना काम आरम्भ कर दे। न जाने कब और कहा से हम लोगो पर प्रहार हो जाये।'

सत्रहवाँ परिच्छेद

सन्ध्या घिर रही थी और चित्तौडगढ के फाटक बन्द होने का समय निकट आता जा रहा था। तभी अँचली की अध्यक्षता मे भीलो के एक दल ने चितौड मे प्रवेश किया। फाटक के प्रहरियो ने इस दल को बडी उपेक्षा के भाव से देखा। प्रहरी ने हँसते हुए कहा भी, "दीवाली मनाने आ रहे हो क्या? कहा से आ रहे हो? तुम लोगो को भला शहर से क्या वास्ता?"

'पूरब से आ रहे हैं हम लोग—सुना चित्तौड के श्रेष्ठी बडे ठाठ बाट से दीवाली मनाते हैं। हम नाचने गानेवाले लोग है।' अँचली के दल का एक आदमी बोला। दूसरे प्रहरी ने घरकर अँचली को देखा, 'हो सो सुन्दर! क्या तुम्ही नाचती गाती हो?"

अँचली ने आगे बढकर कहा, "हा, गाते तो सब लोग मिलकर हैं, लेकिन नाचती मैं ही हूँ! आज तो सेठो को नाच दिखाऊगी, अगर राणाजी के यहा पहुच हो जाय तो अच्छा इनाम मिलेगा ही।"

उस समय प्रहरी भाग छान रहे थे, उनके प्रमुख सरदार भद्रा ने कहा, "चल चल, राणाजी को भीलो का नाच देखने का समय है भला! जाओ, सेठो को अपना नाच दिखाओ, लेकिन अभी तो वे भी जुआ खेलने मे मस्त होगे—दो चार दिन बाद ही उन्हे फुरसत मिलेगी।" फिर उसने अँचली को गौर से देखा और बोला, 'पहले हम देखें तुम्हारा नाच, अगर

अच्छा हुआ तो राणाजी से सिफारिश करेंगे अभी नाचोगी !"

अँचली शायद यही चाहती थी, उसने अपने साथिया को सकेत किया—सगीत आरम्भ हो गया। फाटक से अलग हटकर एक खुली जगह पर वह अपना नत्य करन लगी।

अँचली के नृत्य म सम्मोहन था। जितने भी प्रहरी थे सब-के-सब उसी स्थान पर एकत्रित होकर अचली का नृत्य दखन लगे। करीब आधा घण्टे तक यह नत्य चलता रहा।

इस बीच कब और कैसे सरदार भँवर तथा उसके साथवाले पचास सिसौदिया और अहरिया सनिक किसाना का छदम वेश धारण किय, आठ आठ या दस दस के समूहो म, गढ के अन्दर प्रविष्ट हो गय। इसका किसी को पता तक नही चल पाया।

नत्य समाप्त होते होते अँधेरा घिर आया था। गढ रक्षक भट्टी चित्तौडगढ के फाटक बन्द करने मे लग गय। सरदार भद्रा ने अँचली से पूछा 'कितने दिन यहा रुकन का विचार है ?"

'पन्द्रह दिन। कार्तिक पूणमासी के दूसरे दिन यहा से जाने का विचार है।

भद्रा बोला, "बीच बीच मे मिल लेना। राणाजी के यहा सन्देश भिजवा दूगा—अवसर मिला तो राणाजी को तेरा नृत्य भी दिखा दूगा।" और यह कहकर उसने अँचली और भीला के उस दल को वहाँ से नगर के अन्दर विदा किया।

नगर के मुख्य बाजार मे चूण्डा के सनिक इधर उधर बिखर हुए घूम रह थे, मुख्य भाग पर भँवर खडा था। अँचली को दखते ही भँवर उसके पास पहुँचा। उसने अँचली से कहा, 'यहा तो समाचार शुभ नही है—क्या कायक्रम है तुम्हारा ?"

'अभी तो तत्काल राजमाताजी को अपने आने की सूचना देनी है।" अँचली बोली, 'तुमसे कहा मिलना होगा—यह बतला दो !'

'पूरबवाले बाजार मे मेरे बडे भाई सामन्त सुमेर की हवेली है, हरेक आदमी उन्हे जानता है। वहा मैं कल सुबह तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।'

'अच्छी बात है।' अँचली बोली, "और अपने साथिया के साथ वह

राजभवन की ओर चल दी।

अँचली वहां से सीधे गुणवती के महल में पहुंची। उस समय सूर्यास्त हो रहा था और राजभवन के पट बन्द हो रहे थे। तभी अंचली ने जाकर एक दासी से कहा, 'राजमाता को सूचना दे दो कि भीलनी अँचली आयी है—तत्काल दर्शन करना चाहती है। राजमाता मुझे अच्छी तरह जानती हैं।

पिछले दिन की घटना से गुणवती दिन भर चिन्तित रही थी। दिन भर वह यही सोचती रही कि राणा मुकुलजी का यह अनदेखा और अनजाना शत्रु कौन और कहां छिपा बैठा है? उसके पिता राव रणमल ने उसे सचेत कर दिया था और लगातार वह सचेत करते ही जा रहे थे। जहाँ तक चूण्डाजी का प्रश्न था, वहां ऐसी कल्पना ही नहीं की जा सकती थी कि ऐसा ओछा और घृणित कृत्य वह करेंगे। राणा मुकुलजी की रक्षा भी रघुदेव ने स्वयं की थी। राजमाता का पूरा दिन अभाव भ्रमित अवस्था में बीता और वह अपने अन्दर से बुरी तरह थकी और टूटी हुई अनुभव कर रही थी। मगर सहसा अँचली के आने का समाचार पाकर वह चौंक उठी। जैसे घने अन्धकार को चीरती हुई एक क्षीण प्रकाश की किरण उसे दिखायी पड़ी। अँचली को अन्दर न बुलाकर वह स्वयं रनिवास के द्वार पर पहुँच गयी। अँचली ने भूमि पर मस्तक नवाकर राजमाता का अभिनन्दन किया।

तू यहां! गुणवती बोली, 'कब आयी, कैसे आना हुआ?

धीमे स्वर में अँचली ने उत्तर दिया, 'अभी रात्रि में सीधी आ रही हूं। महाराज ने कल हुकुम दिया कि मैं राजमाता की सेवा में उपस्थित होऊँ—तो मैं हाजिर हुई हूं।' फिर वह गुणवती की दासियों को देखते हुए बोली, 'अभी राजमाता की हाजिरी बजा दी है, नगर में अपने ठहरने की व्यवस्था भी करनी है।

गुणवती अँचली का संकेत समझ गयी, उसने अपनी एक दासी से कहा, यह रनिवास में ही ठहरेगी। इसके लिए मेरे कक्ष के बायीं ओर वाले चौथे कक्ष में व्यवस्था कर दो। फिर वह अँचली से बोली, 'तेरे साथ कितने आदमी हैं?

अँचली ने उत्तर दिया, 'मैं इस समय सामन्त कम्मल की पुत्री नहीं हूँ। मैं मात्र एक भील नतनी हूँ, अँचली हूँ। मेरे ये साथी भील अपने ठहरने की व्यवस्था स्वयं कर लेंगे। फिर वह अपने एक साथी से बोली, 'कँवरजी ने कह देना कि मैं रनिवास में ठहर गयी हूँ, कल प्रातःकाल उनसे मिल लूंगी।

रात में भोजनोपरान्त गुणवती ने अँचली को बुला भेजा। अँचली आकर गुणवती के सामने भूमि पर बैठ गयी।

गुणवती ने बात आरम्भ की चूण्डा कुशलपूर्वक तो है? तुझे यहां किसी विशेष काम से भेजा है?

'महाराज कुशलपूर्वक हैं अभी। लेकिन चार दिन पहले उनकी हत्या करने का प्रयत्न किया गया था। चार आदमियों ने वन में उन पर हमला किया। महाराज अपने घोड़े पर अकेले जा रहे थे। वह तो मैं महाराज के अनजाने ही थोड़ी दूरी पर उनके साथ-साथ चल रही थी इसलिए उन लोगों को मैंने दूर से ही देख लिया था। एक को तो महाराज ने ही मार गिराया था, दूसरे को मैंने तीर से मार गिराया जिसने पीछे से वार किया था। तीसरे को भी मैंने मारा मगर चौथा उसी बीच भाग गया।

गुणवती सिहर उठी, पता चला कौन थे वे लोग?

महाराज का अनुमान है कि वे लोग या तो चित्तौड़ से आये थे या मण्डोर के थे। उसी प्रहार से महाराज बहुत सोच में पड़ गये थे। यहां पर राणाजी के अनिष्ट की चिन्ता उनके मन में जाग उठी तो उन्होंने मुझे यहाँ भेजा कि अगर यहाँ कोई अनिष्ट की बात दिखे तो मैं तुरन्त उन्हें सूचना दे दूं।"

गुणवती के आगे जो धुंध था वह जैसे अब दूर हटने लगा। लेकिन उसी धुंध के पीछे जो वास्तविकता थी उस पर वह सहज ही विश्वास नहीं कर पा रही थी। वह थोड़ी देर तक एकटक अँचली को देखती रही। उसे अनुभव हो रहा था कि वह अकेली नहीं उसका हितैषी भी कोई है। वह धीमे स्वर में बोली 'मुझसे अनजाने ही बहुत बड़ा पाप हो गया है। और एकाएक उसका गला रुँध गया, आंखों में आंसू आ

गय। आँसू पोछकर जब वह शान्त हुई, तो अँचली से पूछा, "कितने दिनो के लिए कुँवरजी ने तुझे भेजा है ?"

'महाराज ने मुझे पचास सैनिको के साथ आपकी सेवा मे भेजा है—आप जब तक चाहगी तब तक के लिए।

गुणवती ने अब राणा मुकुलजी पर हुए प्रहार की बात विस्तार से बतलाते हुए अँचली से कहा, 'तू यहाँ रनिवास मे ठहर, अपने साथवालो को यहाँ ठहरने के लिए कह दे। बहुत सम्भव है कि कुँवरजी की सहायता की आवश्यकता मुझे पड़े, मगर अभी निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। अच्छा अब जाकर विश्राम कर!'

दूसरे दिन दीपावली के पर्व की चहल पहल सब ओर आरम्भ हो गयी थी। सवेरा होते ही राव रणमल ने गुणवती को बुलाकर कहा, 'मैं कल दिन भर सोचता रहा कि राणा मुकुलजी पर प्रहार किस ओर से हुआ। ज्योतिषियो का कहना है कि उनके ग्रह नक्षत्र अच्छे नहीं है, बहुत सतर्क रहने की आवश्यकता है। लेकिन रघुदेव ने जैसे राणाजी की रक्षा की है उसके लिए उन्हे विशिष्ट पुरस्कार और सम्मान मिलना चाहिए। आज दीपावली का पर्व है, रघुदेव को पाँचो वस्त्र अलंकार और राज्य की एक सनद मिलनी चाहिए। यह सब उन्हे आज ही भेज दिया जाय—लक्ष्मीपूजन के अवसर पर उन्हे यह सब मिल जायगा। क्या मत है तुम्हारा ?

सन्तोष के साथ गुणवती बोली 'यह तो उचित ही होगा। सनद पर मै राणाजी की मुहर लगा दूँगी।'

गुणवती प्रसन्न मन लौट आयी। अपने पिता के इस व्यवहार से उसके अन्दर का सम्भ्रम हटता सा लगा। लेकिन तब भी उसको लग रहा था कि उसके अन्दरवाली दुश्चिन्ता वैसी की वैसी बनी है।

गुणवती के जाने के बाद रणमल ने बीजा को बुला भेजा। बीजा के आते ही उन्होंने कहा, "बीजा, हमारे दो वार खाली गये है, आज मुझे तीसरा वार करना है—इस बार चूक नहीं होनी चाहिए किसी तरह की।'

'अन्नदाता ! इस बार किसी तरह की चूक नहीं होगी, चाहे मुझे

प्राण भी दने पड़ें ।" बीजा न तनकर कहा ।

रणमल मुस्कराये, "प्राण देने की नौबत नही आयेगी, तू ध्यान स सुन । रघुदव के लिए राणा मुकुलजी की रक्षा करने के उपलक्ष म राजमाता गुणवती और राणाजी की ओर से राज्य की मुहर के साथ एक सनद ले जानी है तुझे, सैनिको की एक टुकडी के साथ । इस सनद के साथ पाचो परिधान होगे, अलकार होगे । ता तुम पचास राठौर सैनिका के साथ यह सब लेकर तत्काल कलवाडा के लिए रवाना हो जाओ । जब तक तुम वहा जाने की तयारी करोग तब तक दूसरी मारी व्यवस्था मैं कर रखूगा ।

"लेकिन वहा मुझे करना क्या होगा ?'

'वही तो बतला रहा हू । परम्परा के अनुसार परिधान और अलकार प्राप्त करत ही उन्ह धारण करना हाता है । जिस समय वह परिधान धारण कर रहा हो, तुम अपमानजनक शब्द बोलकर अथवा और किसी बहाने उत्तेजित करके उस समाप्त कर देना । कल प्रात काल रघुदेव की मत्यु की सूचना मुझे मिल जानी चाहिए ।"

बीजा बाला "सरकार, इसके बाद ता सब कुछ स्पष्ट हो जायगा !'

'और वह स्पष्ट हो जाना चाहिए ।" रणमल का स्वर कठोर हो गया, "मवाड पर अब शासन सिसौदिया वश का नही, राठौर वश का है। और यह सब बिना किसी युद्ध के, बिना अनावश्यक रक्तपात के हो रहा है ।'

"सरकार, अच्छी तरह सोच लें,' बीजा बोला, "मेवाड की प्रजा कही विद्रोह न कर दे !' उसके स्वर म एक तरह का अज्ञात भय था ।

लकिन रणमल के अन्दर दबा हुआ राक्षस अब पूरी तरह उभर आया था । वह हस पडे, एक पशाचिक हँसी 'प्रजा कभी विद्रोह नही करती वह पशु होती है—पशु ! युद्ध करत हैं सैनिक जो गुलाम होत है, क्योकि वे वेतनभागी होत है। सामन्त ही शासक के प्रतिरूप होत है । मैंने राठौर सामन्तो को एक बडी सख्या म यहाँ बुला लिया है— तू यह जानता है तू अब उनका प्रमुख है ।'

विस्मित और चकित-सा बीजा कुछ देर तक रणमल को देखता रहा,

फिर उसन एक ठण्डी सास ली और कुछ साहस बटारकर बोला, "आप निश्चित रह, मैं रघुदव का बध करके ही चित्तौड वापस लौटूगा।' और वह चला गया।

सरदार बीजा अपन आदमिया के साथ सनद और अय उपहार लेकर जिस समय कैलवाडा पहुँचा मध्या हा गयी थी। उस समय लक्ष्मीपूजन की तयारियाँ हा रही थी। रघुदेव स्नान के बाद अपनी दनिक साध्य उपासना करके उठ रहा था लक्ष्मीपूजा की तैयारी क लिए। वह अपने बडे भाई चण्डा की अपेक्षा कही अधिक धार्मिक प्रवृत्ति का था—अत्यन्त शान्त-स्वभाव का व्यक्ति, किसी तरह की महत्त्वाकाक्षा नही थी उसम। दयावान और उदार! लकिन जहा तक साहस और वीरता का प्रश्न था इन गुणा का भी उसम अभाव नही था।

रघुदव का चित्तौड से सनद और अय उपहारा के आन की सूचना मिल चुकी थी। पूजागृह स निकलकर उसने बीजा तथा अय लोगो का स्वागत किया। रघुदव इन लागा और उपहार वहन करनवाले भृत्या को अपन मुख्य कक्ष म ले गया। बीजा ने सविनय कहा, 'राणा मुकुलजी तथा राजमाताजी न यह सनद एव परिधान और अलकरण आपके लिए भिजवाय ह, इन्ह स्वीकार करें।

सर नवाकर रघुदव ने सनद स्वीकार कर ली तथा अपन दो भत्या स कहा कि परिधान और अलकार का यथास्थान रख दें। फिर बीजा से कहा, "मैंन तो केवल अपने कत्तव्य का पालन किया था—फिर भी राणाजी की सनद मर मस्तक पर!"

बीजा बाला 'राज परम्परा ता यह है कि परिधान और अलकार तत्काल धारण करक सनद ली जाये!"

इस पर रघुदव न मुस्कराते हुए कहा "सुना ह कि दिल्ली क मुसलमान बादशाहा म यही प्रथा है—राजपूताने मे भी अब यह प्रथा देखा देखी प्रचलित हो रही है। राणाजी का आदर करना हरेक सामन्त का धम है। मैं इन परिधाना को इसी समय धारण करता हूँ।'

रघुदेव न अपन भत्या को सकेत किया वे कक्ष के बाहर चले गय। उनके साथ ही बीजा क साथी भी वहाँ स हट गय। रघुदेव न अपनी

तलवार अलग रख दी और वह वस्त्र बदलने लगा। तभी बीजा बोला "परसों संध्या समय राणाजी का अपहरण करनेवालों में से किसी को आप पहचान पाये थे क्या ?'

इस प्रश्न से रघुदेव चौंक उठा। उसने बीजा का ध्यान से देखा और उसके मुंह से सहसा निकल पड़ा, 'तुम—तुम नकली दाढ़ी बांधे हुए थे।" और यह कहते हुए वह अपनी तलवार उठाने को झुका। बीजा ने अपनी तलवार पहले से ही थाम रखी थी, उसने उसी समय रघुदेव पर भरपूर प्रहार किया। रघुदेव का सर कटकर भूमि पर गिर पड़ा।

रक्त से सनी हुई तलवार हाथ में लिये बीजा रघुदेव के राजमहल से बाहर निकला। जब तक रघुदेव के सैनिक सम्हलें, बीजा और उसके सैनिक अपने घोड़ों पर सवार होकर चित्तौड़ की ओर रवाना हो गये। रघुदेव के राजमहल में हाहाकार मच गया। सिसौदिया सैनिकों के तैयार होते होते बीजा के सैनिक अदृश्य हो गये थे।

उस रात चित्तौड़गढ़ का फाटक खुला हुआ था। भोर होने के पहले ही ये लोग गढ़ के फाटक पर पहुँच गये। सरदार भद्रा अन्य भट्टी प्रहरियों के साथ इनकी प्रतीक्षा कर रहा था। इन लोगों के गढ़ में प्रवेश करने के साथ ही गढ़ का फाटक बन्द हो गया।

दोपहर के समय राजमाता गुणवती को रघुदेव की हत्या की खबर मिली, जब कि कैलवाड़ा से एक व्यक्ति ने आकर राजमाता को सब कुछ बताया। हत्या की यह खबर पाकर वह सहम सी गयी। कैलवाड़ा से आनेवाले दूत ने राजमाता के समक्ष विस्तार के साथ समस्त घटना का वर्णन किया था। और वह सब सुनकर गुणवती को यह स्पष्ट समझ में आ गया कि ये प्रहार रणमल की ओर से ही हो रहे हैं।

राजमाता गुणवती ने उसी समय रनिवास की क्षत्राणियों को बुलाया। उसके पिता राव रणमल ने मेवाड़ और चित्तौड़ का शासन पूरी तौर से अपने हाथ में ले लिया था। इसलिए तत्काल ही कुछ किया जाना था। क्षत्राणियों से वह कुछ कहना ही चाहती थी कि तभी एक दासी ने हांफते हुए सूचना दी, 'राजकुमार सिंहा को साथ लेकर अमिया राजमहल के बहिर्कक्ष में चली गयी है जहां राव रणमल अपने सामन्तों के

साथ रहते हैं।"

राणा मुकुलजी की धाय भानकुमारी तेज स्वर में बोली, "भव में राणाजी की रक्षा करनेवाले कुवर चूण्डाजी का राजमाताजी ने निवारि कर दिया है। लेकिन मैंने तो राणाजी को पाला है। मेरे रहते राणा पर कोई आंच नहीं आ सकती। जब तक मैं जीवित हूं, तब तक कं उनका बाल बांका नहीं कर सकता।" यह कहकर उसने अपनी कट निकाल ली।

उसकी देखादेखी उसी समय बीस राजपूतनियों ने अपनी कटा निकाल ली, "हम सब राणाजी की रक्षिकाएं हैं।" सबने अपनी कट हवा में हिलाते हुए एक स्वर में कहा "राणा मुकुलजी की जय।"

गुणवती को यह सब देखकर लगा कि अभी भी सब कुछ गया नह है।

शोर सुनकर अंचली भी वहां आ गयी थी। गुणवती ने अंचली कहा, "राणा में चूण्डाजी को खबर करा दो मेरी विनय के साथ उन कहना देना कि मुझे अविलम्ब उनकी सहायता की आवश्यकता है सरदार भंवर और सामन्त सुमेर से कह दो कि जब तक चूण्डाजी न आ जायें, तब तक वे लोग सतर्कता से रनिवास पर नजर रखें।"

और अपनी कटार लेकर भावावेग में वह अपने कक्ष से बाहर रणमल के कक्ष की ओर चली गयी।

अठारहवां परिच्छेद

राव रणमल के कक्ष में उल्लास का वातावरण था—उनके सारे खास खास मुसाहिब वहां एकत्र थे। बीजा राव रणमल को विस्तार के साथ बता रहा था कि पिछली रात क्या-क्या हुआ और कैसे हुआ। ठीक उसी समय बिना कोई सूचना दिये राजमाता गुणवती ने उनके कक्ष में प्रवेश किया। गुणवती को देखते ही सब लोग चुप होकर खड़े हो गये। गुणवती अपने पिता के सामने पहुंचकर बोली "मुझे अभी-अभी खबर मिली है कि कल रात केलवाड़ा में बीजा ने रघुदेव की हत्या कर दी—

क्या यह सत्य है ?"

कुछ हिचकिचाते हुए रणमल ने कहा, "बीजा यही बता रहा था अभी अभी, कि मनद और उपहार पाकर रघुदेव ने किस तरह तुम्हारा और मेरा अपमान किया। बीजा ने जब इसका विरोध किया तब रघुदेव ने तलवार खींच ली। आत्मरक्षा के लिए विवश होकर बीजा को भी अपनी तलवार खींचनी पड़ी और द्वन्द्व-युद्ध में उसने रघुदेव को मार दिया।"

गुणवती चीख उठी, 'यह झूठ है! रघुदेव की हत्या के आरोप में बीजा को बन्दी बनाया जाय—मैं आज्ञा देती हूँ।'

राव रणमल इस समय तक सुव्यवस्थित हो गये थे, उनका स्वर अनायास ही कठोर हो गया, 'तुम आज्ञा देनेवाली होती कौन हो ? मेवाड़ की शासन व्यवस्था मेरे हाथ में है। इस समय बिना सूचना पठाये तुम यहाँ चली कैसे आयीं ?"

"अवयस्क राणाजी की अभिभाविका राजमाता से अपने ही राज्य में यह प्रश्न ? यह राजभवन मेरा है।"

राव रणमल उठ खड़े हुए, 'सुन री निर्बुद्धि लड़की! मैं तेरा पिता हूँ—मैं राणा मुकुलजी का नाना हूँ। तेरे हाथ में न राणाजी की सुरक्षा निश्चित है, न उनका भविष्य। मैं यहाँ अपने नाती के मोह में रुका हुआ हूँ। यह सिसौदिया वंश! यह चूण्डा की मुट्ठी में है। राणा मुकुलजी का सबसे बड़ा शत्रु चूण्डा है। इसे ठीक तरह से समझकर बात कर।"

गुणवती चिल्लाकर बोली, "देवता को कलंकित करनेवाला पाप का भागी होता है। राणा मुकुलजी को आपकी सुरक्षा की आवश्यकता नहीं है। चण्डाजी पर अविश्वास करना ही मुझसे बहुत बड़ी भूल हो जाना था।"

रणमल हँस पड़े और गुणवती को लगा कि उसका पिता नहीं, एक शक्तिशाली राक्षस उसके सामने खड़ा हँस रहा है। अन्दर ही अन्दर वह एक क्षण के लिए सहम सी गयी। फिर एकाएक जोर लगाकर उसने अपनी कटार निकाल ली।

इस अप्रत्याशित रुख की रणमल ने आशा नहीं की थी। रणमल

सावधान हो गये। उनकी मुद्रा मे उसी समय परिवर्तन हो गया अत्यन्त सहज और स्वाभाविक मुद्रा धारण करके वह बोले, "तू जि अपना सबसे बड़ा हितैषी तथा मित्र समझती है, वही तेरा और तेरे पु का सबसे बड़ा शत्रु है। मैं तुझसे फिर कहता हू, मेरे गुप्तचरों पता लगा लिया है कि धनतेरस के दिन राणा मुकुलजी का अपहरण करने का षडयन्त्र चण्डा का था। तू ही बता, जब से वह चित्तौड़ गये हैं यहा नहीं आये। क्या यही अपने छोटे भाई तथा विमाता के प्रति मोह और आदर का भाव है? अनेक सिसौदिया सैनिक और सरदा चित्तौड़ छोड़कर मांडू चले गये और अब भी जा रहे है। राजा उन्होंने एक शक्तिशाली राज्य कायम कर लिया है। जल्दी ही वह चित्तौड़ पर हमला करके राणा मुकुलजी को अपदस्थ करनेवाले है मेवाड़ का शासक बनने की पूरी योजना उन्होंने बना ली है।'

गुणवती जैसे फिर एक चक्कर में पड़ रही हो। यह सत्य है कि उसका पिता उसके पुत्र का शत्रु बन सकता है, इस बात पर विश्वास ही नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन अब उसे अपने आप से ही संघर्ष करना पड़ रहा था। उसने एक बार फिर अपना साहस बटोरकर चिल्लाते हुए कहा यह झूठ है।'

'क्या अपने आपको धोखा दे रही हो गुणा!" पिता मानो अपनी नादान पुत्री को समझा रहा था, 'इससे काम नहीं चलेगा। तू अनुभव-हीन है, राजनीतिक षडयन्त्रों का तुझे पता नहीं। तू कभी शतरंज से खेली नहीं है। रघुदेव सब कुछ होते हुए भी चूण्डा का सगा छोटा भाई था। चूण्डा ने अपने षड्यन्त्र में उसको सम्मिलित नहीं किया—केवल इस लिए कि वह निर्बुद्धि प्राणी था। परसों उसने राणा मुकुलजी की रक्षा करने की गलती हो गयी थी। और कल बीना से यह भूल हो गयी कि उसने रघुदेव से चूण्डा के षडयन्त्र का भेद खोल दिया। इस भेद को जानकर रघुदेव ने धोखा तो दिया नहीं, मेरा तुम्हारा और राणा मुकुलजी का भी अपमान किया। इस सबका जो परिणाम हुआ वह तो तुम्हारे सामने है—मैं अभी यही खोज-बीन कर रहा था।

जिस दृढ़ता को धारण करके गुणवती आयी थी, वह सहसा गायब

हा गयी। वह मुलावे मे आ गयी और अपन पिता के प्रति उसका माह फिर जाग उठा। सर झुकाकर वह कुछ सोचन लगी। स्थिति की अनुकूलता का लाभ उठाकर रणमल बोले, "तुम निश्चिन्त रहो। मवाड के राणा ता मुकुलजी ही है। मेरी बात क्या ? मैं तो अब वद्ध हा गया हू। मेरे पुत्र जाधा ने समस्त मारवाड को बाहुवल से जीतकर अपना एक शक्तिशाली राज्य बना लिया है। सिंहा उसका उत्तराधिकारी है। सिंहा मेरे हाथो पला है उसके पिता के पास उसके लालन पालन का समय नही है। इसीलिए वह मेरे पास है। तुम अपन मन का विकार दूर कर दो, प्रसन्न और निद्वन्द्व भाव से अपना जीवन बिताओ। राणा मुकुलजी के बारे म सतकता अवश्य बरतनी होगी। बाहरी सतकता ता म बरत ही रहा हूँ, अन्दरूनी सतकता बरतना तुम्हारी जिम्मेदारी है। मैंने तुम्हे पहले ही सावधान कर दिया है। रणमल के रहत उसकी बटी और नाती का कोई अहित नही कर सकता।'

एक बार फिर जैस गुणवती की डूबती हुइ चेतना न जोर मारा, 'मुझे अभी अभी यह खबर मिली है कि आपने अमिया और सिंहा को अपने कक्ष म बुला लिया है।

"मंन तो बुलाया नही, हा, अभी कुछ देर पहले सिंहाजी को साथ लेकर अमिया मेरे कक्ष मे आ गयी। कुछ एमा कह रही थी कि रघुदव की मृत्यु का समाचार पाकर रनिवास की छत्राणिया क्षाेभ म आ गयी हैं और यह मम्भावना है कि कही सिंहा का कोइ अहित न हो जाय। मैं फिर उसस विस्तार के साथ बात करूँगा। और तब मुस्कराते हुए उन्होने कहा, 'जाओ अपने अधिकार और प्रयत्न से राजकुल और रनिवास वालो को शात करो। मुझ तो मिसोदिया सामन्तो तथा चूण्डा के आक्रमणो का मुकाबला करने की व्यवस्था करनी है। शायद चूण्डा अब खुलकर मुकुलजी पर प्रहार कर।"

आयी तो थी गुणवती मकल्प और दृढ़ता के साथ, लेकिन लौटी एक अजीब तरह की पराजय और थकावट की भावना लेकर। अपन पिता के यहा स लौटकर उसने राजभवन की छत्राणियो को शात किया और फिर कुछ बीमार सी वह अपन कक्ष मे लेट गयी। उस दिन उसन

किसी से कुछ बात नही की। अँचली को कहला दिया कि अभी वह भँवर के यहा न जाय, रात म उससे बातें होगी।

व्यक्तिवाद और व्यक्तिपूजा! समस्त सामन्ती व्यवस्था और परम्परा इन दो शब्दो पर आधारित है। राजपूतो का इतिहास इसी व्यक्तिवाद का इतिहास रहा है। रघुदेव की हत्या की गयी या उसकी मत्यु बीजा के साथ द्वंद्व-युद्ध में हुई—यह प्रश्न राजकुल के लोगो के लिए भले हो महत्त्वपूर्ण रहा हो, लेकिन जहा तक चित्तौड तथा मेवाड की प्रजा का प्रश्न है उनकी इस विषय म कोई दिलचस्पी नही थी। प्रजा की बात छोड दी जाय, स्वय मेवाड के सामन्तो और सरदारो ने भी यह खबर एक कान स सुनी और दूसरे कान म निकाल दी। मनुष्य का समस्त अस्तित्व ही व्यक्तिगत स्वार्थों की टकराहट के धरातल पर स्थित है।

गुणवती की मूर्खता और अदूरदर्शिता के फलस्वरूप मेवाड का शासन तन्त्र राव रणमल के हाथ म आ चुका था। धूर्त और मक्कार, झूठे और ढोंगी—इसी तरह के लोग आदिकाल म जीवन में सफल प्रतीत होते हैं। राजनीति मे तो चाणक्य से लेकर माइकावली तक तमाम नीतिशास्त्रियो ने नतिक अवगुणो को राजनीति मे गुण ही माना है। राव रणमल सफल शासक थे—प्रजा सुखी थी कही किसी तरह की अव्यवस्था नही थी कही किसी तरह का विद्रोह अथवा विरोध नही था। मेवाड का राजकाज रणमल के व्यक्तिगत अनुचरो और समथको के लिए खुला था—वे चाहे सिसोदिया हो, चाहे राठौर हो, चाहे भट्टी हो अथवा चाहे ब्राह्मण या वश्य ही क्या न हो!

दिन भर गुणवती सम्मोहित-सी अपने पलग पर लेटी रही। उसकी समझ म नहीं आ रहा था कि कौन उसका वास्तविक मित्र है और कौन उसका वास्तविक शत्रु।

लेकिन यह एक तथ्य है कि अन्दर की घुटन हमेशा एक सी नही रहती। रात म अपने इसी अनिश्चय की अवस्था से विकल होकर गुणवती ने अँचली को बुला भेजा। वह आ गयी तो राजमाता ने पूछा 'दोपहर को तून यह खबर तो सुनी ही होगी कि रघुदेव की मत्यु हो गयी है?'

सर झुकाये हुए अँचली ने उत्तर दिया 'हाँ सरकार, बीजा ने उनकी

हत्या कर दी है—सारा रनिवास इस खबर से आतंकित है।"

'मेरे पिता का कहना है कि रघुदेव बीजा के साथ द्वन्द्व-युद्ध में मारे गये। कैलवाड़ा से आये हुए दूत का कहना है कि उनकी हत्या की गयी है। मुझे तो समझ में नहीं आ रहा कि सत्य क्या है।'

निश्छल और निष्कपट भाव से अँचली बोली, "आपके बापू आपसे झूठ क्या बोलेंगे? उनकी ही बात सच होगी।"

गुणवती ने कुछ सोचकर पूछा, "तेरे साथ राधा से कितने सैनिक आये हैं?"

"कुल पचास। चालीस तो महाराज के राजपूत और अहेरिये सैनिक हैं, बाकी दस हमारे भील हैं।

"राजपूतों का सरदार कौन है? वह कहाँ ठहरा है?"

"सरकार, वह सरदार भँवरजी हैं सिसौदिया सामन्त सुमेर के छोटे भाई। भँवरजी अपने भाई सामन्त सुमेर के साथ ठहरे हैं। वहाँ का पता भँवरजी ने मुझे दे दिया है। आज सुबह मुझे उनसे मिलना था लेकिन मैं जा नहीं सकी वह जरूर चिन्तित होंगे।

"सामन्त सुमेर—मैं उन्हें जानती हूँ। तो तू इसी समय भँवरजी से कह दे कि मैं उनसे मिलना चाहती हूँ। मैं तुम लोगों की प्रतीक्षा करूँगी।"

अँचली चली गयी। दो घण्टे बाद वह अकेली ही लौटी। उसने कहा, "भँवरजी मार्ग से ही लौट गये—राजभवन पर शायद पहरा लगा है। उन्हें उन पहरेदारों के बीच गुप्तचरों की उपस्थिति का सन्देह हुआ। सरकार के यहाँ उनका आना और वह भी विशेष रूप से रात के समय निरापद नहीं होगा। मुझसे उन्होंने कहा है कि जो कुछ सँदेसा है उन्हें मेरे द्वारा पहुँचा दिया जाय। वैसे चित्तौड़ नगर और बाजार में पूर्ण शान्ति है। कल दीपावली की रात्रि में कैलवाड़ा में क्या हुआ, इसकी कहीं कोई चर्चा नहीं। रघुदेवजी की हत्या का समाचार पाकर सामन्त सुमेर और सरदार भँवरजी दोनों ही बड़े चिन्तित हो उठे हैं।"

गुणवती ने मानो अपने आपसे ही कहा, "पता नहीं, इस समय तक चूण्डाजी को भी इस घटना की खबर मिली होगी या नहीं?" और

वह मन ही-मन तक वितर्क करने लगी। फिर उसने अँचली से कहा, 'प्रातःकाल भँवरजी से कह दो कि वह कल ही स्वयं राध्रा जाकर या किसी अन्य व्यक्ति को भेजकर चूण्डाजी को रघुदेव की मृत्यु की सूचना दे दें। तू अब जा, रात बहुत बीत चुकी है, इसलिए जाकर विश्राम कर।'

'उन्हें यहां आने का संदेसा भी भिजवा दूं ?'' अँचली ने सहज भाव से पूछा।

गुणवती की मुद्रा एकाएक बदल गयी, उसका स्वर कठोर हो गया, 'नहीं, मैं किसी तरह का सँदेसा नहीं भेजूंगी। मैं स्वयं अपनी रक्षा करने में समर्थ हूं। भँवरजी को कल शाम ही राध्रा भेज देना, परसों कुंवर चूण्डाजी को यह खबर मिल जाय।'

भँवर तीसरे दिन दोपहर के पहले ही राध्रा पहुंच गया। नित्य नियम के अनुसार चूण्डा निकटवर्ती जंगलों में शिकार के लिए निकल गये थे। शिकार से जब वह वापस आये, तब भँवर उनके सामने उपस्थित हुआ। भँवर के गम्भीर और उदास चेहरे को देखते हुए चूण्डा ने कहा, तुम बड़ी जल्दी वापस आ गये? अकेले आये हो, या अन्य लोगों के साथ? क्या राणा मुकुलजी पर कोई विपत्ति आयी है?''

''इसका ठीक-ठीक आभास तो मिलता नहीं और न कुछ पता ही चल पाता है। लेकिन धनतेरस की रात को जब राणा मुकुलजी कलवाडा से वापस आ रहे थे तब चित्तौड़गढ़ के बाहर कुछ अनजान लोगों ने उनका अपहरण करने का प्रयास किया। वह तो आपके भाई रघुदेव अनायास ही घटना-स्थल पर पहुंच गये थे, इसीलिए शत्रु का प्रयास विफल हो गया। मगर दीपावली की रात को उनकी हत्या हो गयी। राजमाता के आग्रह पर अँचली ने आपको तुरन्त सूचित करने के लिए मुझे यहां भेजा है।' और तब भँवर ने विस्तार के साथ उन घटनाओं का वर्णन कर डाला। रणमल के पत्र की बात भी भँवर ने बतला दी कि उसने ही आपका से राणा मुकुलजी का चित्तौड़ से बाहर जाना उन्होंने रोक दिया था।

चूण्डा चीखकर उठ खड़े हुए, 'रघुदेव की हत्या हो गयी! और वह भी चित्तौड़ में!' कुछ क्षण गुमसुम रहने के बाद फिर जैसे कुछ

सचेत होकर उन्होने भँवर से पूछा, "केवल सूचना देने की बात है या राजमाता ने तुम्हारे द्वारा कोई सँदेसा भी भिजवाया है ?"

'अँचली ने तो यही कहा कि मैं महाराज को केवल सूचना दे दूँ—कोई सँदेसा नहीं भेजा है।' भँवर ने टूटे हुए स्वर में कहा।

एक ठण्डा निःश्वास भरकर जैसे चूण्डा अपने आसन पर गिर पड़े, अस्पष्ट स्वर में वह मानो अपने आप से ही कह उठे, "हठी और निर्बुद्धि नारी! मैं तुझे वचन दे चुका हूँ कि तब तक चित्तौड़ वापस नहीं आऊँगा जब तक मुझे बुलाया नहीं जायगा।" और फिर जैसे स्वगत सम्भाषण से वह स्वयं कुण्ठित हो उठे हों। अपने निजी भृत्य से बोले, "रनिवास में जाकर कह दे कि मैं भोजन नहीं करूँगा। दीपावली की रात को रघुदेव की हत्या हो गयी है, परिवार में सूतक मनाया जाये। आज तृतीया है, दशमी एवं तेरहवीं में सम्मिलित होने के लिए मैं नवमी के दिन सपरिवार कैलवाड़ा की यात्रा करूँगा।

चूण्डा कुछ देर तक आँखें बन्द किये हुए बैठे रहे। अतीत की घटनाएँ एक के बाद एक विशृंखल रूप में उनके मानस पटल पर आ रही थीं। अपने ही आंतरिक मन्थन से घबराकर उन्होंने अपनी आँखें खोल दीं, सामने भँवर खड़ा था। अतीत के गर्त से निकलकर वर्तमान में आते हुए उन्होंने भँवर से पूछा "तुम लोग तो कुशलपूर्वक हो न ? तुम लोगों के मेवाड़ में होने का पता किस किसको है ?"

'केवल राजमाता को और मेरे बड़े भाई सुमेर को, और किसी को भी नहीं। अँचली को राजमाता ने रनिवास में ठहरा लिया है—बड़े भाई के यहाँ रहने से मेरे बारे में कोई सूचना किसी को नहीं मिल सकती। मेरे साथवाले दस अहेरिये गढ़-रक्षक भट्टियों के सेवक बने हुए हैं बाकी तीस राजपूत सैनिक राठौरों के चाकर बन गये हैं।'

सारा विवरण सुनकर कुँवर चूण्डाजी कुछ आश्वस्त हुए। जीवन-मृत्यु का खेल आरम्भ हो गया है लेकिन अभी तक हर दाँव ठीक पड़ रहा है। यही सब सोचते हुए उन्होंने भँवर से कहा, 'जा, भोजन कर ले जाकर। थका हुआ है कुछ विश्राम भी कर ले। अपराह्न के बाद चित्तौड़ के लिए रवाना होना। कल सुबह तक तू चित्तौड़ पहुँच जायगा।

अब पूरी सतर्कता बरतनी है। राजमाता से कहला देना कि मैं नवमी क प्रात कैलवाडा पहुचूगा। मुझे यदि कोई सँदेसा भेजना हो तो नवमी और चतुर्दशी के बीच कैलवाडा भेज दें। एक बार फिर आश्वासन द देना कि चूण्डा अपने वचनो के धनी हैं।"

दूसरे दिन ही भँवर चित्तौड पहुच गया। पूर्वनिर्धारित योजना के अनुसार अँचली चित्तौड के महाकालेश्वर के मदिर के मुख्य द्वार पर अपने एक भील साथी की दूकान पर पहुच गयी, जिसने जगली जडी बूटियो के विक्रेता का रूप धारण कर लिया था। वह उस भील की सहायिका का पद सँभाले हुए थी। भक्तो की भीड उमड रही थी और अँचली की नजरें उस भीड मे भँवरजी को तलाश रही थीं।

दोपहर के समय भँवर एक भक्त के वेश म मदिर के मुख्यद्वार पर आया। उसकी आखें भी अँचली को खोज रही थी। अँचली जब दिखायी पड गयी तब वह उसके पास पहुचा। उसने आते ही अँचली से कहा, 'अभी कुछ दर पहले मैं चित्तौड वापस आया हूँ। गढ के प्रवेशद्वार पर बडी सतर्कता बरती जा रही है।'

अँचली ने बडे आग्रहपूर्वक पूछा, 'महाराज तो सकुशल ह न ? मेरे लिए उन्होंने कोई सँदेसा भेजा है ?"

भँवर मुस्कराया। चूण्डाजी के लिए अँचली मे जो नितात सम पण और भक्ति की भावना थी, हरेक राठानिवासी उससे परिचित था। उस भावना मे जो औदार्य था, जो पवित्रता थी उसका पता हरेक व्यक्ति को था। उसने कहा, "पहला प्रश्न जो तुमने मुझसे किया वह तरे कुशल क्षेम के सम्बन्ध म ही था। महाराज न मुझसे तुम्हारे द्वारा राजमाता स यह कहला दने को कहा है कि नवमी के दिन वह कैलवाडा आयेंगे और चतुर्दशी तक वहाँ ही रहग। राजमाता को जो कुछ भी सदेसा भिजवाना हो वह नवमी स चतुर्दशी तक कैलवाडा म उह भिजवा दें। इस बीच हम लोगो को छद्म वेश म चित्तौड म ही रहना है अत्यन्त गोपनीयता और सतर्कता के साथ। शायद बहुत-कुछ होने की सम्भावना है।" और यह कहकर भँवर न मुख्यद्वार से मदिर क भीतर प्रवेश किया।

अँचली जब रनिवास पहुची, तब राजमाता अपनी दासिया से घिरी बातें कर रही थी। अचली ने जैसे ही अपने आन की सूचना राजमाता को भेजी, वैसे ही गुणवती ने वहाँ बैठी सभी दासिया का विदा करके अँचली को बुला लिया।

सर नवाकर अँचली बाली "सरदार भँवर आज प्रात राआ स चित्तौड वापस आ गय ह। वह यह समाचार ले आय ह कि महाराज नवमी के दिन अपन परिवार क साथ कैलवाडा पहुचेंगे। उनका कहना है कि अगर राजमाता चित्तौड म उनके आने की आवश्यकता समझें तो नवमी आर चतुदशी के बीच उन्हे संदेसा भिजवा द।

राजमाता गुणवती ने अपने हाठो का दाँता स काटते हुए पूछा बस, इतना ही ? और कोई सदेसा है ?

अँचली बाली "सरकार के लिए बस इतना ही है! बाकी हम लोगो के लिए कुछ आदेश अवश्य है।'

गुणवती बुदबुदायी "इतना हठ! या सम्भव है मेरे पिता की ही बात ठीक हो!"

उन्नीसवाँ परिच्छेद

जिस पाप या पुण्य कहा जाता है वह केवल सामाजिक परिकल्पना है, भावना स्वय म न पाप है न पुण्य है। काय का प्रेरक तत्व होत हुए भी यह मनुष्य की जन्मजात प्रवत्ति भर है। बौद्धिक तत्व हाने के नाते सामाजिक परिकल्पना मूल रूप से काल और परिस्थिति पर निभर करती है।

सामाजिक प्राणी हाने के कारण मनुष्य की जा प्रवत्तिया समाज के लिए अहितकर साबित होती है, वे अनादिकाल स वर्जित मानी जाती रही है और कौन सी प्रवत्तिया वर्जित हा, इसका निणय बुद्धि करती है। बौद्धिक प्राणी होन के कारण मनुष्य ने हमेशा स सामाजिक सगठन पर जोर दिया है, लेकिन यह सामाजिक सगठन वस्तुत काल और परिस्थिति की सीमाआ मे बँधा रहता है। मनुष्य न भले हा एक

सावभौम समाज की कल्पना की हो, लेकिन उस सावभौम समाज की स्थापना हमेशा असम्भव रही है क्योंकि वैसे समाज की स्थापना का अथ है—घूम फिरकर फिर उसी व्यक्तिवाद पर पहुचकर उसम चिपक जाना। सम्भवत भारत म 'वसुधव कुटुम्बकम' का स्वर उठानेवाले ऋषि और मनीषी हिन्दू धम के घोर व्यक्तिवाद के दायरे म सिमट गए थ।

व्यक्तिवाद स आगे बढकर कुल और परिवार की परिकल्पना की गयी, जो पशुता की स्थिति से ऊपर उठने का प्रथम चरण है। राव रणमल की सामाजिक धारणा कुल और परिवार तक ही सीमित थी, उसम सद असद, गुण और विकृति का कोई स्थान न था।

समरथ को नहि दोष गुसाइ' वाली कहावत के अनुसार राव रणमल की विकृतियो ने मेवाड म नगा रूप धारण कर लिया था। उन विकृतियो पर न नैतिक अथवा सामाजिक डर तनिक सा अकुश जाना रहा। राव रणमल म प्रवृत्ति के रूप मे वृद्धि का वह आदिम प्रमुख था जिस मक्कारी कहते है, और समथ व्यक्ति म यह मक्कारी और ढोग हो तो वह समाज के लिए बडा घातक सिद्ध हो सकता है।

घटनाए क्या घटित होती है ? कैसे घटित होती है ?—और इन घटनाओ का मनुष्य के जीवन पर क्या प्रभाव पडता है ? ये एस प्रश्न है जो अनादि काल से अनुत्तरित रहे और अनन्तकाल तक अनुत्तरित रहेंगे।

एक ओर तो गुणवती अँचली से सबकुछ सुनकर चूण्डा के सम्बन्ध म एक तरह से निराश सी होकर अपने पलग पर गिर पडी थी, दूसरी ओर अमिया को खबर मिली कि उसकी बेटी राधा अपने पति के घर से भागकर मन्दार स चित्तौड आ गयी है। राधा को सब लोग 'रधिया' कहते थ और मन्दार से उसे चित्तौड ले आये थे आचाय सुधाकर।

आचाय सुधाकर एक लम्बे अरसे तक चित्तौड स बाहर रहे थ। वह मारवाड चले गय थ जोधा को यह प्रेरित करने कि वह चित्तौड आकर उस पर अपना अधिकार जमा ले। लेकिन जोधा को मारवाड म अपने अभियान मे निरन्तर सफलता मिलती जा रही थी और उस अपने दाव एव पुरुषाथ पर विश्वास था। उसने चित्तौड पर आक्रमण करने म माग

इनकार कर दिया। अन्दर से अत्यन्त नीच और विकृत प्रवृत्तियोंवाले आचार्य सुधाकर जब निराश हो चले, तो अचानक उन्हें रधिया दिखायी पड़ी जो अपने वैवाहिक जीवन से असन्तुष्ट और क्षुब्ध थी। उसे देखकर आचार्य सुधाकर की कुटिलता फिर जाग उठी और वह रधिया को बहका कर चित्तौड़ ले आये।

रधिया की अवस्था प्रायः सत्रह वर्ष थी और उसके विवाह को अभी तीन ही साल हुए थे। उसका गौना करा देने के बाद ही अमिया मन्दौर से चित्तौड़ आयी थी।

रधिया के पिता राव रणमल थे अमिया यह बात जानती थी। उसने इस बात का संकेत भी रणमल से कर दिया था। लेकिन राजस्थान में उन दिनों गोलियों (दासियों) के पुत्र पुत्री की परम्परा मातृ कुल में सम्बद्ध मानी जाती थी, पितृ कुल से नहीं। इसलिए रधिया का लालन पालन उसकी आठ वर्ष की अवस्था से ही अमिया के पितृ कुल में हुआ था। अमिया यह नहीं चाहती थी कि रधिया को गोली का अपमानजनक जीवन बिताना पड़े इसी कारण उसने अपनी बेटी का विवाह एक निम्न कोटि के राजपूत परिवार में कर दिया था। वर के पिता को धन काफी रुपये दिये थे ताकि वह सम्पन्न बन सके। राधा के विवाह में उसके अनुपम सौंदर्य का प्रमुख योगदान था रुपये तो महज उस सम्बन्ध को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए दिये गये थे।

राधा का सौंदर्य अनिन्द्य और अप्रतिम था—उसे निरखनेवालों की दृष्टि जैसे अघाती ही नहीं थी। हरिणी की सी बड़ी-बड़ी आँखें, सुनहरे चम्पे का सा रंग, विधाता ने मानो स्वयं अपने हाथों से उसका नाक-नक्शा गढ़ा हो। विवाह के बाद रधिया अपने पति गृह में छोटे मोटे झगड़ों में उलझी हुई थी कि आचार्य सुधाकर राहु के समान उसके जीवन में आ गये। आचार्य सुधाकर ने रधिया के द्वारा राव रणमल की काम विकृति को शान्त करने की बात सोची। वह बहका फुसलाकर उसे उसके पति के घर से निकाल लाने में समर्थ हुए। रधिया के मन में उन्होंने अमिया के प्रति मोह जगा दिया और वह उनके साथ चित्तौड़ चली आयी।

आचाय सुधाकर रधिया को उसकी माता अमिया के पास छोडकर रणमल के यहा चले गय और अपन वापस आने की सूचना दी। उहान रणमल से बताया कि इन दिनो मारवाड मे क्या-क्या हो रहा है तथा जोधाजी से उनकी क्या क्या बातें हुई। इस बीच चित्तौड तथा मवाड राज्य म जो कुछ हुआ था, उसका विवरण भी उहान सुना। फिर चलत चलत बडी प्रसन्नता और सताष की मुद्रा म उहान रणमल को यह सूचित किया कि वह रधिया को अपन साथ ले आय है।

रणमल का दरबार उस समय समाप्त हो रहा था—अब रात के निजी राग रग की तैयारी चल रही थी। अत रणमल वहाँ स उठकर रधिया के सौदय की झलक लन के लिए अमिया के कक्ष की ओर चले गय।

अमिया को रधिया के अपन पति गह स चले आन की बात खल गयी थी। उसन सुधाकर को पचासा गालियाँ दी और रधिया को समझाया कि वह अपन पति क पास चली जाय। समझान का असर जब नहीं हुआ ता उसन रधिया को डाटा डपटा मारा पीटा भी।

रणमल जिस समय अमिया के कक्ष म पहुँचे उस समय रधिया सिसक रही थी। रणमल को दखत ही अमिया सहमकर खडी हो गयी, रधिया की सिसकियाँ और बढ गयी थी।

रधिया का दखकर रणमल की आखें सहसा फैल-सी गयी—मादक सौदय की साकार प्रतिमा सामन खडी थी। वह कुछ दर तक आश्चय क साथ रधिया का देखत रह, फिर अमिया से पूछा, "इस मार क्या रही ह तू ?"

'मारूँ नहो ता पूजू इस ? अपन धनी को छाडकर उस चाण्डाल सुधाकर के बहकाव म पडकर यहाँ भाग आयी है। मुहजली काख म ही क्या न मर गयी !'

रणमल क मुख पर एक कृत्रिम मुस्कान, लेकिन आँखा म भयानक काम लिप्सा झाक रही थी जिस अमिया अच्छी तरह पहचानती थी। रणमल बाल, "अभी यह नासमझ ह, पीछे प्यार स समझा दना। आखिर आयी ता तर पास है ! रनिवास का वातावरण तू दख ही रही

है। तू अकेली है, यह तर साथ रहगी। सिहा का भार सँभालना और मेरी देख भाल करना—तुम दोना माँ-बेटी यह जिम्मेदारी निभा लागी।' और फिर आगे बढकर उन्हाने रधिया के सर पर बडे प्यार स हाथ फेरा, "फल की तरह कोमल है—बस, अब इस मारना पीटना मत।" इसके बाद हसत हुए वह चले गय।

अमिया सर म पैर तक सिहर उठी। उसके मन म एक ऐसी भय-मिश्रित आशका जाग उठी, जिसे वह समझ नही पा रही थी। फिर भी उसन यह सोचकर अपने को सयत करने का प्रयत्न किया कि वह रधिया को दूसरे ही दिन समझा बुझाकर मन्दौर भेज देगी। जो कुछ हो रहा था उसका अन्त क्या होगा, इसका उसे पता न था। उसका समस्त जीवन ही दासियो और गोलिया बीच अपमान सहत व्यतीत हुआ था—यह बात अनायास ही उसके मन मे आयी। समस्त राजकीय सुख सुविधा उपलब्ध रहने पर भी यह बात कैसे और क्यो उसके मन म आयी, यह एक प्रश्न उठता है—ऐसा प्रश्न जो सदा से अनुत्तरित रहा है और शायद आग भी अनुत्तरित ही रहेगा।

रणमल के जान के बाद अमिया ने रधिया के वस्त्र बदले। सिहा सो गया था, और अमिया के मन मे रधिया के प्रति मातृत्व की भावना एकाएक उमड आयी थी। रणमल स रधिया की रक्षा उसे करनी ही पडेगी। उस रधिया के जीवन को सुखी, सम्मानपूर्ण और सफल बनाना ही होगा। परायी सन्ताना को पालत पालते वह अब बुरी तरह ऊब उठी थी। वह सोच रही थी कि उसकी बेटी का परिवार बढे वह फूले फले और उसका पृथक अस्तित्व कायम हो। सोचत-सोचत उसकी ममता उमड आयी, बडे प्यार से उसने अपनी बेटी को वक्ष म चिपका लिया।

अमिया के पास कीमती आभूषण थे, वस्त्र थे अपार धन था। क्या नही था उसके पास! फिर भी उसे अनुभव हो रहा था कि वह अपन वतमान जीवन स बुरी तरह थक गयी है। रधिया का शृगार करने के बाद वह उसे अपने वक्ष स लगाकर लेट गयी, और फिर पता ही नही चला कि कब उसे नीद आ गयी थी।

एकाएक कुछ शोर सुनकर अमिया की नीद टूट गयी। उसने देखा

कि रधिया को हाथ पकडकर रणमल उस बिस्तर म खीचे लिय जा रह हैं। उनकी आखें शराब के नशे मे जल रही थी, जसे एक हिंस्र पशु की क्रूरता भरी हुई हो उनमे। तडपकर अमिया अपने पलग से चीखती हुइ उठी, 'उसे कहा लिये जा रहे हो—मैं यह नही होने दूगी!" और आगे बढकर रधिया को रणमल की पकड स मुक्त करने का प्रयत्न करते हुए वह गिडगिडायी, 'यह तुम्हारी ही सन्तान है!"

रणमल ने यह सुनते ही घूमकर अमिया को एक तमाचा मारा, "चुप रह हरामजादी!' और फिर बाहर खडे अपने एक भृत्य को बुलाकर कहा 'अगर यह चुप न रहे और शोर मचाये तो इसकी भरपूर पूजा कर देना।'

रणमल रधिया को खीचते हुए वहा स चले गये। रधिया जसे कुछ न जानते हुए भी सबकुछ जानती थी। चुपचाप कुछ सहमी सी वह रणमल के साथ चली गयी। अपने कक्ष म पहुचकर रणमल ने दूसरे भृत्य के द्वारा मदिरा के दो प्याले भरवाये और कहा 'जा अब जाकर अपने साथी के साथ अमिया को सभाल! वह हरामजादी अभी तक चीख रही है। द्वार बाहर से बद कर दे—यहा अब कोई न आने पाये।'

भृत्य के चले जाने पर रणमल ने मदिरा का पात्र अपने होठो से लगाया और एक ही सास म उसे खाली कर दिया। दूसरा पात्र उन्होंने रधिया के होठो से लगा दिया, जिसे रधिया ने आगे खीचकर खाली कर दिया। अमिया के चीखने चिल्लाने का जो स्वर उनके कानो म आ रहा था, वह धीरे धीरे धीमा पडने लगा—शिकारी ने शिकार को दबोच लिया था।

अमिया उधर पागल-सी चीख रही थी, चिल्ला रही थी। वह भुवराज को गालिया दे रही थी, रणमल को गालियाँ दे रही थी। रणमल के भृत्य उसे चुप कराने के लिए कोड़े मार रहे थे, लेकिन उन कोडो का मानो उस पर कोई असर ही नही हो रहा था। वह तब तक चीखती रही जब तक बेहोश नहीं हो गयी। उसी बेहोशी की अवस्था म उसे बिस्तर पर डालकर दोनो भृत्य चले गये।

अमिया की जिस समय बेहोशी टूटी भोर हो गयी थी। रात की

समस्त घटनाएँ उसकी आँखों के आगे भूल गयी। लटखटाती हुई वह उठी और फिर जैसे पागलपन का भूत उस पर सवार हो गया। उसने अपनी कटार निकाली और अपने कक्ष से निकलकर वह आचार्य सुधाकर के कक्ष की ओर झपटी। सुधाकर उस समय प्रातःस्नान करके पूजा पर बैठे ही रहे थे कि अमिया ने चिल्लाकर कहा, 'क्या रे नरक के कीड़े! तूने आखिर मेरी बेटी का सर्वनाश कर ही दिया—जा नरक में जा!' और यह कहते हुए उसने पूरे बल से कटार उनकी पीठ में भौंक दी।

केवल एक चीख, और सुधाकर औंधे मुँह गिर पड़े। अमिया ने बलपूर्वक कटार बाहर खींचकर फिर प्रहार करना चाहा, लेकिन तब तक सुधाकर का प्राणान्त हो चुका था। सुधाकर का शव देखते ही अमिया का पागलपन एकाएक दूर हो गया। पागलपन का स्थान अब भय ने ले लिया था—ब्रह्महत्या का भय। उसे अनुभव हुआ कि ब्राह्मण की हत्या करके उसने अपने आवेश में एक भयानक पाप कर डाला है। सहमी सहमी वह अपने कक्ष में वापस आयी और फौरन अपने संदूक में ढूँढकर संखिया की पुड़िया निकाली। राजपरिवारों में रहनेवाली गोलियाँ और दासियाँ उन दिनों छिपाकर अपने पास संखिया रखती थीं। वे अक्सर षड्यन्त्रों में भाग लेती रहती थीं, इसलिए भी ऐसा करना जरूरी था। क्या पता कब जीवन का अन्त कर देने की नौबत आ जाये! तो अब अमिया के लिए यह नौबत आ गयी थी। उसने पानी के सहारे संखिया को गले के नीचे उतार दिया।

कुछ ही क्षण बाद एक भयानक जलन उसके शरीर में जाग उठी, मृत्यु के पहले उठनेवाली जहर की जलन। वह अपने कक्ष से रनिवास की ओर भागी। रनिवास के द्वार खुल गये थे इसलिए फाटक पार करके वह सीधे राजमाता गुणवती के कक्ष के सामने पहुँची। गुणवती स्नान करके पूजा पर बैठने जा रही थी। अमिया को देखकर एक दासी ने उसे अन्दर जाने से रोका तो वह चिल्लाकर बोली "क्या रोक रही हो मुझे? मैं तो हमेशा के लिए इस पापी दुनिया से जा रही हूँ—हमेशा के लिए!" और वह जबर्दस्ती कक्ष में घुसकर बोली, 'बेटी मैं चली—हमेशा के लिए। तेरे बाप ने अपनी ही बेटी रधिया पर रात में बलात्कार किया

है पापी नरक का कीडा। वह हरामजादा सुधाकर कल मन्दौर म रखिया का बहका लाया था और मैं अभी अभी उसी राक्षस की हत्या करके आ रही हू। मुझ पर ब्रह्महत्या का पाप लग गया है मैंने सखिया खा ली है।

गुणवती न चिल्लाकर अपनी दासिया स कहा "राजवैद्य को जल्दी बुलाओ, जल्दी ' और फिर वह अमिया की ओर घूमी, "इतना सब हो गया ' मगर इसके पहले कि गुणवती और कुछ कह, अमिया बोली, 'बटी, बचा अपने को और अपने बेट को इस राक्षस से! तेरा बाप तेरे बट की हत्या कर डालेगा, सिहा को यहा की गद्दी पर बिठान क लिए ' और यह कहत कहत अमिया लडखडाकर जमीन पर गिर पडी। उसकी जीभ ऐंठ रही थी, मुह स झाग आ रहा था।

रनिवास म एक हलचल सी मच गयी। गुणवती के सामने सहसा एक नग्न और अत्यन्त भयानक सत्य प्रकट हो गया था।

अमिया बुरी तरह छटपटा रही थी। राजवैद्य का आन म कुछ समय लगा। आते ही उन्होन अमिया की परीक्षा की, फिर सर हिलाकर बोले 'जहर का पूरा असर हो गया है इस पर यह मर रही है।' और सचमुच कुछ ही क्षणा में उसकी छटपटाहट जाती रही—वह मर चुकी थी।

गुणवती ने दासिया स कहा, 'इस इसके कक्ष मे बिस्तर क नीच डाल आओ और वहीं जाकर इसकी आत्महत्या की सूचना मर पिता को द दो।'

रखिया भाग होते ही अमिया क कक्ष म पहुँचा दी गयी थी, जहाँ वह गहरी नीद म सो गयी। उस पता ही नहीं था कि उस और क्या क्या हो गया था। इधर अमिया की आत्महत्या की सूचना तत्काल रणमल को द दी गयी। सूचना पाकर रणमल अवाक् रह गय। यहाँ तक हो जायगा, इसकी उन्होन कल्पना नहीं की थी। सूचना लानवाली दासी स उन्होन पूछा, 'सिहाजी कहाँ है ?"

'व अपने कक्ष म रूपा दासी की सुरक्षा म है अमिया रात म सिहाजी क पास गयी ही नहीं।' दासी न कहा।

"सिंहा को उसके कक्ष से मत निकलने देना अभी कुछ समय तक।" रणमल ने यह कहा ही था कि तभी उन्हें आचार्य सुधाकर की हत्या की सूचना भी मिली। उन्हें यह भी बताया गया कि अमिया की कटार सुधाकर के पास पड़ी हुई मिली है।

समस्त वस्तु-स्थिति रणमल की समझ में आ गयी। अमिया ने सुधाकर की हत्या करके स्वयं आत्महत्या कर ली थी। एकाएक रणमल के अन्दर का हिंस्र पशु जाग उठा। उन्होंने कहा, 'तो वह अधम-पापी ब्राह्मण भी गया! उसकी लाश को चित्तौड़गढ़ की प्राचीर के बाहर फेंक दो—गिद्धों के भोजन के लिए। ब्रह्मराक्षस बनकर वह भी गढ़ की रखवाली करेगा।' और अपने इस क्रूर मजाक पर वह देर तक हँसते रहे। फिर संयत होकर उन्होंने कहा, 'उस हरामजादी की लाश को लावारिस की तरह फुँकवा दो। सिंहा की देखरेख का भार अब रधिया और रूपा मिलकर सँभालेंगी।'

अमिया गयी, उसके स्थान पर रधिया आ गयी थी। उस अभागी अमिया के लिए रणमल के हृदय में न किसी तरह का मोह, न किसी तरह का दर्द! और जहाँ तक आचार्य सुधाकर का प्रश्न था, रणमल को यह अनुभव हो रहा था कि उन्हें पाप मार्ग पर अग्रसर करने में सुधाकर की भी प्रेरणा थी। उसकी मृत्यु पर न उन्हें खेद था न परिताप!

लेकिन रधिया? वह अवसन्न हो उठी सहसा—कहीं गहरे में उसका हृदय बुरी तरह हिल उठा था।

राजपरिवारों में दासी के अस्तित्व को जैसे कभी स्वीकारा ही नहीं गया। वह तो महज प्राणहीन काया ही समझी जाती रही। दासियों के लिए अपनी भावना का प्रदर्शन वर्जित माना जाता रहा। रधिया की माता की मृत्यु इसी भावना के प्रदर्शन का दुष्परिणाम थी। रधिया यह जान चुकी थी और इसीलिए एक अन्दर से दहकते मगर सुप्त ज्वालामुखी की भाँति अमिया का दायित्व उसने अपने ऊपर ले लिया था।

अमिया जाते जाते राजमाता गुणवती के अन्तर में एक भयानक उथल-पुथल पैदा कर गयी। रणमल के छल कपट और झूठ के व्यवहार ने उसकी चेतना को कुहासे की भाँति पूरी तरह से दबा रखा था। वही

धुहासा सहसा फट गया। गुणवती पर अब यह स्पष्ट हो गया कि उनका पिता उनके पुत्र के रक्षक के रूप मे भक्षक है तथा वह एक भयानक इरादा लेकर चित्तौड में बैठा हुआ है। दिन भर ता वह सोचती-विचारती रही मगर सन्ध्या समय अपना समस्त साहस बटोरकर रणमल के पास गयी। रणमल उस समय अपने मुसाहिबो में घिरे बैठे थे। गुणवती ने बात आरम्भ की "असिया तो चली गयी, सिहाजी की देख-भाल अब कौन करेगा?'

रणमल को उस समय गुणवती का आना अच्छा नहीं लगा, गुराकर बोले, 'रधिया आ गयी है।"

'मैं समझती हूँ कि आपको और सिहाजी को यहा आये हुए एक लम्बा अरसा हो चुका है "तभी रणमल ने उसकी बात काटी, 'और तू यह कहने आयी है कि हम लोग चित्तौड से चले जायें। तो अब साफ-साफ सुन ले इस समय मेवाड का शासक मैं हू—मैं! मेरे मरने के बाद ही यह प्रश्न उठेगा कि मेवाड का शासक सिहाजी है या मुकुलजी है—मेवाड पर राठौरो का शासन है या सिसौदिया का! और आज मैंने तुझे अंतिम चेतावनी दे दी है कि भविष्य मे मेरे किसी काम मे हस्तक्षेप करने का दुस्साहस मत करना। रघुदेव का अन्त तूने देख ही लिया है। अब मैं अपने नाती के खून से अपने हाथ नहीं रगना चाहता। इन दिनो रघुदेव के सूतक के कारण मुकुलजी दरबार मे नही आ रहे है, सूतक हट जाने पर भी वह दरबार मे नही आयेंगे। सिहा भी दरबार मे नही आयगा, इसकी व्यवस्था मैं किये देता हूँ। दरबार अब होगा मगर, रणमल का जो चित्तौड का असली शासक है। बस अब चली जा और आगे जो कुछ भी करना वह अच्छी तरह सोच समझकर करना।'

अपने पिता के इस भयानक रूप को गुणवती ने पहले कभी नहीं देखा था। इस रूप के सम्बन्ध मे यद्यपि बाल्यकाल मे उसने समय-समय पर कुछ उड़ती उड़ती-सी बातें सुनी अवश्य थी, लेकिन आज उसने प्रत्यक्ष देख लिया। वह सहसा उठी और चुपचाप पराजित-सी सर झुकाये रनिवास की ओर चली गयी। लेकिन वह चुप बैठनेवाली नारी नहीं थी। वह क्षत्राणी थी और उसी रणमल का रक्त उसमे प्रवाहित हो रहा था जिसका

असली रूप देखकर वह लौटी थी। रनिवास म आकर उसने मुकुलजी की धाय मानवती को बुलाकर पूछा, "राणाजी कहा है?"

"मेरे कक्ष मे है, ले आऊँ उन्हे?'

"नही। लेकिन याद रख, अब वह तेरी दृष्टि से जरा भी ओझल न होने पायें। पाच सशस्त्र छत्राणिया उनकी रक्षा करने के लिए तर इर्द-गिर्द रहेगी—राणाजी पर किसी तरह के प्रहार की आशका होन पर तत्काल मुझे खबर दी जाये, चाहे जहा या जिस अवस्था मे म रहू।'

कुछ दुखी स्वर म मानवती बोली, "मैंने न जाने कितनी बार सरकार से यह आशका व्यक्त की लेकिन मरी बात पर तो आपन कभी ध्यान ही नही दिया। देवता सरीखे चूण्डाजी पर अविश्वास करके आपन यह विपत्ति स्वय बुलायी है।"

एक ठण्डी सास लेकर गुणवती बोली विपत्ति बुलायी है ता विपत्ति दूर भी करूँगी। जा, थोडी देर म अँचली को मरे पास भेज देना।

मानवती के जाते ही गुणवती कागज-कलम लेकर बठ गयी। उसन लिखा

"कुवरजी! मुझे क्षमा करो। मैं निर्बुद्धि नारी—अपन राक्षस पिता के छल-कपट और बहकावे म आकर मैंने देवता पर अविश्वास ही नही किया, उसका निरादर भी किया। यह अब राणाजी के प्राण लेन पर तुल गया है। कब इसका प्रहार होगा, नही कहा जा सकता। अविलम्ब आकर अपने भाई के प्राणो की रक्षा करो—तुम्हारे चरणो पर मस्तक रखकर विनय करती हू। तुमन मुझे वचन दिया था।'

और गुणवती ने उस पत्र पर अपनी मुहर लगा दी।

राजभवन मे उस दिन जो जो हुआ था, भँवर और सुमर को उसकी सूचना देकर तथा अपन भील साथियो की खोज-खबर लेकर अँचली कुछ देर पहले ही नगर से राजभवन लौटी थी। मानवती से सूचना पाकर वह तुरन्त राजमाता के समक्ष उपस्थित हुई। उसके आते ही राजमाता न वह पत्र एक रेशमी थली मे बन्द करके अँचली को दिया और कहा, 'भँवर जी से कहो कि वह स्वय कल सुबह केलवाडा जाकर यह पत्र चूण्डाजी को दे दें।

मनुष्य की स्मृति का न कोई विधान है, न कोई नियम है। स्मृति अतीत से जुटी हुई सत्ता है जो विगत है, हमारा जीवन वर्तमान में स्थित है जो प्रत्येक क्षण अतीत में लोप होता जा रहा है भविष्य का रूप ग्रहण करता जा रहा है। इस वर्तमान के धरातल पर ही तो भविष्य की परिकल्पना होती है। भविष्य अज्ञात है अतीत विस्मृति के गर्त में डूबता जा रहा है।

मेवाड के राणा लाखा के महत्त्वपूर्ण योगदान को स्वयं मेवाड के निवासी प्रायः भूलते जा रहे थे, बहुत तेजी के साथ, लाखा के पूर्वजों को लोग बहुत पहले भूल चुके थे। मेवाड के शासन-तन्त्र से असम्बद्ध होने के कारण कुंवर चूण्डाजी वर्तमान में स्थित होते हुए भी, वर्तमान से हटकर अतीत की स्थिति में लौटते जा रहे थे। लेकिन वह नियति के क्रम में अनजाने ही भविष्य की रचना में संलग्न थे।

मेवाड के राणा मुकुलजी को तो जैसे चित्तौड का जन-साधारण भूलता ही जा रहा था। वर्तमान अब केंद्रित हो रहा था राव रणमल में, मेवाड का शासनसूत्र जिनके हाथ में पूरी तौर से आ गया था।

राणा मुकुलजी अपने ही राजभवन में बन्दी का जीवन बिता रहे थे। बहुत कम लोगों को इस बात का पता था कि राजभवन में क्या-क्या हो रहा है। कुशल प्रशासक अतिशय क्रूर और निरंकुश छल कपट और मक्कारी में निपुण राव रणमल के हाथ में मेवाड की सत्ता होने के कारण लोग किसी तरह की रिक्तता का अनुभव नहीं कर रहे थे—बाहर से सब कुछ शान्त, सुव्यवस्थित। चित्तौड की आन्तरिक व्यवस्था से रणमल निश्चिन्त थे, चित्तौड नगर के बाहर मेवाड के अन्य क्षेत्रों की चिन्ता उन्हें अवश्य थी। चित्तौड के फाटकों पर पचास भट्टियों के अलावा चुने हुए सौ राठौर सैनिक उन्होंने नियुक्त कर रखे थे जो दिन रात तैयार रहते थे। फाटक के बाहर उन्होंने दस गुप्तचर लगा दिये थे जिनके पास तेज घोड़े थे और जो किसी भी बाहरी आक्रमण की सूचना तत्काल दे सकते थे, जिससे गढ़ का फाटक उसी समय बन्द कर दिया जाय।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही अँचली सुमेर के भवन में गयी और भँवर से मिली। भँवर मानो अँचली की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे चूण्डा के नाम गुणवती का पत्र देते हुए अँचली ने कहा, 'राजमाता सरकार ने महाराज के नाम यह पत्र भेजा है। आज सप्तमी है, परसों महाराज कलवाडा पहुंच जायेंगे। इसलिए तुम कल प्रातःकाल ही कैलवाडा के लिए रवाना हो जाओ। महाराज के वहां पहुंचते ही यह पत्र तुम उन्हें दे देना।"

भँवर ने पूछा, "राजमाता ने कुछ कहलवाया भी है?"

"नहीं, कहलवाया कुछ नहीं है—केवल यह पत्र भिजवाया है।' और अँचली ने सुधाकर की हत्या तथा अमिया की आत्महत्या का विवरण सुनाते हुए कहा, "राजमाता का नया रूप देखकर मुझे डर लगता है—वह अचानक बदल गयी है। राजभवन और रनिवास में अन्दर ही अन्दर बहुत जल्दी ही कुछ भयानक होनेवाला है—ऐसा मुझे लगता है।"

सर हिलाते हुए भँवर बोला, "महाराज की शंका निर्मूल नहीं थी जो उन्होंने हम लोगों को यहाँ भेजा है। मैं अपने बड़े भाई को सावधान किये देता हूं। उनके दो सौ सैनिक यहां चित्तौड में हैं। राजमाता से कह देना कि विपत्ति के समय तीन बार दस दस पल के बाद तुरही का घोष करवा दें, जिसे सुनते ही मेरे भाई अपने सैनिकों के साथ रनिवास की रक्षा के लिए पहुंच जायेंगे।" फिर कुछ रुककर वह बोला, "कल प्रातःकाल मैं कैलवाडा के लिए प्रस्थान कर दूंगा। कोई और सँदेसा भेजना हो तो आज सन्ध्या तक बतला देना। मैं प्रयत्न करूँगा कि दशमी तक महाराज का सँदेसा लेकर आ जाऊँ। दशमी के दिन महाकालेश्वर के मन्दिर में सन्ध्या समय मैं तुमसे मिलने का प्रयत्न करूंगा। और राजमाता से यह कहना न भूलना कि सामन्त सुमेर राणाजी की रक्षा करने के लिए हर समय तयार है।"

नवमी के दिन चूण्डाजी अपने परिवार के साथ कलवाडा पहुंच गये। अपने चुने हुए सौ सैनिक उन्होंने छोटी छोटी टुकड़ियों में पहले ही कलवाडा की ओर भेज दिये थे, जिससे रणमल के गुप्तचरों को किसी भी खतरे का आभास न होने पाये। कैलवाडा में शोक, निराशा और घुटन का

निवाहा है, आगे भी मैं अपने वचन निवाहूगा ! मेरे वचनो का मूल्य मेरे प्राणो से अधिक है।"

और एकाएक वह शान्त हो गये। वह शान्ति ठीक वैसी थी जैसी भयानक झंझावात के पहले वातावरण मे आ जाया करती है। उन्होने नपे-तुले शब्दो मे कहा, "त्रयोदशी के दिन ही रघुदेव की 'तरही' है और ठीक पूर्णिमा के दिन मैं चित्तौड मे प्रवेश करूगा, अपने सौ सैनिको के साथ।"

कुछ आश्चर्य के साथ भँवर ने कहा, 'चित्तौड के फाटक पर पचास भट्टी गढरक्षको के अलावा सौ राठौर सैनिक तैनात कर दिये गये है। और जहाँ तक मुझे पता है, चित्तौड मे इस समय राव रणमल के दो हजार से अधिक सामन्त और सैनिक मौजूद है।'

लापरवाही के साथ चूण्डा बोले, "मुझे भी इसका अनुमान है। मैं सन्ध्या के एक घडी बाद आक्रमण करूँगा जब रात हो जायगी। वे बीस अहेरिये कहा है जिन्हे मैंने तेरे साथ भेजा था ?"

'वे सब भट्टी गढरक्षको के चाकरो के रूप मे गढ के फाटक के पास ही रहते हैं।"

"ठीक है। उन्हे सदेसा दे देना कि पूर्णिमा की सन्ध्या के समय वे सब गढ के फाटक के पास ही रहे। अचली से कह देना कि अब उसके सक्रिय सहयोग की मुझे आवश्यकता होगी। नगर मे सन्ध्या समय कार्तिकी पूर्णिमा का उत्सव मनाने के लिए अचली का नृत्य आरम्भ हो, ठीक चन्द्रमा के उदय के समय भीलो का यह दल उत्सव मनाता हुआ गढ के फाटक पर पहुच जाये मानो वह चित्तौड से बाहर जाने की तयारी मे आया हो। भीलो के दल के साथ दर्शको के रूप मे तेरे मित्र और सुमेर के भी कुछ सैनिक साधारण नागरिको के रूप मे रहे। मैं चन्द्रोदय के एक घडी बाद ही अपने सैनिको के साथ फाटक पर पहुच जाऊँगा। तुरही और नगाडे का स्वर सुनते ही तुम लोग भट्टियो पर आक्रमण कर देना और उसी समय अहेरिये गढ का फाटक खोल दें। मेरे आदेश को अच्छी तरह से समझ लो।"

सर झुकाकर भँवर बोला, "महाराज के आदेश का अक्षरश पालन

होगा। और कोई आज्ञा ?"

चण्डा की आँखें उस समय चमक रही थीं, 'राजमाता से कहना कि पूर्णिमा को मेरा विश्वास करें, मृत्यु के बाद भी मेरा होगा। वह त्यार रहें। तुम सूर्योदय होते ही चित्तौड़ के लिए चल दो।'

एकादशी के दिन भँवर मध्याह्न के समय महाकालेश्वर मन्दिर के मुख्यद्वार पर पहुँचा। अँचली वहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसने उत्सुकता के साथ उससे पूछा, 'महाराज कुशलपूर्वक तो हैं ? राजमाता के लिए उन्होंने कोई पत्र भेजा है ?'

चूण्डा के लिए अँचली की उत्सुकता देखकर भँवर मुस्कराकर बोला, 'महाराज स्वस्थ हैं। उन्होंने कोई पत्र नहीं भेजा। केवल कहा है कि पूर्णिमा की सन्ध्या तक वह चित्तौड़ आयेंगे।' और तब भँवर ने अँचली को विस्तार के साथ चूण्डाजी के आदेश सुना दिए।

अँचली जैसे खिल उठी, 'महाराज के युद्ध अभियान में मुझे भी भाग देना है मेरे भाग्य ! महाराज की सेवा में मुझे अपने प्राण देने पड़ें—यह मेरी आन्तरिक कामना है।'

अँचली को क्या पता था कि वह स्वयं अपने लिए भविष्यवाणी कर गयी थी उस समय।

रनिवास पहुँचकर अँचली ने राजमाता गुणवती से सब बातें बता दीं। सब कुछ सुनकर गुणवती एक उल्लास के साथ बोलीं, "पूर्णिमा ! आज एकादशी है—कुल चार दिन ! चार दिन !'

अँचली बोली, 'राजमाताजी ! कल प्रातःकाल मैं रनिवास से जा रही हूँ, अपने भील साथियों के पास !'

'ठीक है। कल प्रातःकाल तू चली जा। पूर्णिमा की रात को मैं अपनी दासियों के साथ चूण्डाजी की प्रतीक्षा करूँगी।'

अँचली के जाते ही गुणवती ने चूण्डा की मानसिक प्रतिमा के सामने बड़ी श्रद्धा भक्ति के साथ अपना मस्तक नवा लिया।

उधर अमिया की आत्महत्या के बाद राव रणमल के अन्दर का राक्षस पूर्णरूप से जाग उठा था। भयानक रूप से हिंस्र और क्रूर हो उठे थे वह। लेकिन इस सबके ऊपर उभर आयी थी उनके अन्दरवाली

बढ़ा जा रहा था।

सूर्यास्त होते ही गढ़रक्षक भट्टियों ने गढ़ का फाटक बंद कर दिया और निश्चिंत होकर भाग छानने की तैयारी करने लगे। पूर्णिमा का चांद पूर्वी क्षितिज पर उभर आया था, एक धुंध में लिपटा हुआ, कुछ सहमा सहमा सा। भट्टी सरदार भद्रा ने चन्द्रमा की ओर देखते हुए कहा, 'चन्द्रमा का यह रूप सुन्दर होने के बदले आज भयानक सा लग रहा है। लक्षण शुभ नहीं दिख रहे हैं, शायद चित्तौड़ में ही कुछ अनिष्ट होनेवाला है।' और इसके पहले कि उस विषय पर बात अधिक बढ़ती, उन लोगों को भीलों का संगीत सुनायी दिया। वह हँसकर बोला, 'चित्तौड़ में बाहर जा रहे होंगे ये लोग और यहाँ फाटक बंद हो चुका है।'' इतना कहकर वह भाग की लोटा चढ़ा गया। फिर उस नाचती हुई अँचली दिखी वह बोला, 'अरे, ये लोग तो वही भील हैं जो कुछ दिन पहले चित्तौड़ आये थे। इनके पीछे पीछे यह भीड़ कैसी? क्या ये लोग इन्हें चित्तौड़ से जबर्दस्ती निकालने के लिए इनका पीछा कर रहे हैं? इस भीड़ से रुकने को कहो और उस भीलनी को यहां बुलाओ।

अँचली का उस दिनवाला रूप देखकर भद्रा दंग रह गया। वह उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो गया। उसने पूछा, 'क्या यह भीड़ तुम्हें यहां से जबर्दस्ती निकालने के लिए आयी है?

आंख नचाते हुए अँचली बोली, 'मुझे क्या निकालेंगे ये लोग? ये लोग तो मुझे जबर्दस्ती रोक रहे हैं। आज मेरा नाच देखकर इनका जी ही नहीं भर रहा है।'

शरारत की मुद्रा के साथ भद्रा बोला, 'बात तो इन्हीं की रहेगी गढ़ का फाटक बंद हो चुका है, कल सुबह खुलेगा।' और वह फिर बोला, ''उस दिन फिर आने का वादा कर गयी थी, लेकिन आयी नहीं! रावजी को अपना नाच नहीं दिखायेगी? आज रुक जा, मैं कल रावजी के सामने तुझे उपस्थित करूँगा।'

इठलाती हुई अँचली बोली, 'राजमाताजी ने मेरा नाच देखा है— रनिवास में उन्होंने मुझे रोक रखा था।' फिर उस भीड़ की ओर संकेत करते हुए उसने कहा, ''मुझे चाहनेवालों की यह भीड़ देख रहे हो?

मुझे रावजी की बरसीस नही चाहिए। शीत ऋतु आ गयी है, अब हम लोग जगना म अपन घर जा रहे है। रात मे आग जलाकर तापेगे, दिन म शिकार करेंगे।" और अँचली ने तरकस स एक तीर निकालकर अपने धनुप पर चढाया और फिर उसे अपने हाथ मे ले लिया।

भद्रा ने एक भद्दा और फूहड मजाक किया, "अरे शिकार के लिए तरकसवाले तीर की क्या आवश्यकता, तेरे नयन बाण ही क्या कम है! फाटक तो अब कल प्रात काल ही खुलेगा, इसलिए रात मे यही फाटक के पासवाली किसी कोठरी मे रुक जाओ—कल सुबह चली जाना। आज पूर्णिमा की चादनी मे हम लोगो का भी अपना नाच दिखा दो।'

आत्मसमपण के भाव म अँचली बोली, "अच्छी बात है!" और भीड की ओर घमकर उसन कहा, "जी भरकर देख लो मेरा नाच—तुम्हारा ही हठ रह गया।" और उसने अपने साथवाले भीलो को सकेत किया। भीलो के वाद्ययन्त्र बज उठे, अँचली ने अपना नत्य आरम्भ कर दिया।

वह मानो अपनी कल्पना म सामन खडे हुए अपने देवता चूण्डाजी के सामन नत्य कर रही थी। हाथ म धनुप, और धनुप पर बाण! विद्युत की तडपवाली गति! उसका जूडा खुलकर दो वेणिया मे विभक्त हो गया था और नागिना की भाति लहराने लगी उसकी वेणिया! किसी को क्या पता था, शायद अँचली की बहिर्चेतना को भी नही, कि वह काल नृत्य नाच रही है। समस्त गढरक्षक भट्टी और फाटक पर नियुक्त राठौर सैनिक अपन अस्त्रो को रखकर विश्राम की मुद्रा म थे लेकिन अब वे उस नत्य को देखन के लिए उमड पडे। अँचली के साथ जो भीड आयी थी वह भी इनकी भीड मे मिल गयी थी। कितनी देर तक यह नत्य चलता रहा, किसी को भी इसका पता नही लगा। लोगो का ध्यान तब टूटा जब फाटक के बाहर से तुरही और नगाडा का स्वर सुनायी पडा।

चौकन्ना होकर भद्रा ने फाटक की ओर देखा, भट्टी भी तत्काल सतर्क-सचेत हो गय। तभी अचानक एक तीर अँचली के धनुप से निकला और भद्रा की छाती मे घुस गया। जब तक भट्टी सँभलें तब तक

ग्रँचली के मायवानी भीड के लोगा न ग्रपनी ग्रपनी तलवारें खींच ली ग्रौर नि शस्त्र राठौरा एव भट्टिया पर टूट पडे। इधर यह सब हा रहा था, उधर भट्टिया व चाकरो के रूप मे जो ग्रहरिये थ उन्होने गढ का फाटक खोल दिया।

फाटक के खुलत ही चण्डा न अपन सौ घुडसवार सनिका व साथ गढ म प्रवश किया। इन लोगा के हाथा म भी नगी तलवारें थी। बात की-बात मे दाना दला ने फाटक पर नियुक्त राठौरा ग्रौर भट्टिया का सफाया कर दिया।

इसके पहले कि नगर म फैल हुए रणमल के सैनिक सँभलें, चूण्डा का राजभवन पहुचकर राव रणमल तथा उसके सरदारा का काम तमाम कर देना था। उन्हान ग्रँचली का कृतज्ञता की दृष्टि म केवल देखा भर, ग्रौर वे ग्रपन सैनिका के साथ राजभवन की ग्रोर टूट पडे।

चारा ग्रोर एक कोलाहल मच गया। रणमल के दरबारवाले कक्ष म कुसुम्मा के बाद मदिरा का दौर चल रहा था, ग्रौर रणमल ग्रपना दरबार समाप्त करके कुछ ही देर पहल रधिया के साथ शयन-कक्ष म चल गय थ।

राजभवन के बहिर्कक्ष पर नियुक्त प्राय पचीस सशस्त्र राठौर सनिका का पहरा था। चण्डा व सैनिका न उनका सफाया किया ग्रौर चूण्डा अपन कुछ सरदारा का साथ ल दरबार कक्ष म घुस गया। वहा बीजा उसका रुद्र रूप देखकर कोइ प्रतिक्रिया व्यक्त करे—इसके पहले ही चूण्डा के एक भरपूर वार न उसका सर धड म ग्रलग कर दिया था। पलक मारते ही दरबार म उपस्थित समस्त सरदारा के शव भूमि पर लोटन लग। चूण्डा न देखा कि राव रणमल वहा नही थे।

राव रणमल तो उस समय ग्रपन शयन कक्ष म रधिया के साथ थ। वह कुसुम्मा के खुमार म बहोश लेट थ। अचानक राजभवन म शस्त्रा की भनभनाहट सुनी तो उसके मत्य यह पता लगाने के लिए बाहर भाग कि वहा क्या हो रहा है। दरबार-कक्ष म उस समय भी राठौर सरदारा का वध हा रहा था, इसलिए डरकर वे भीतर भाग ग्राये ग्रौर रणमल व कक्ष को उन्हान बन्द कर दिया।

रधिया ने भी यह सब देखा और सुना। एकाएक उसको न जाने क्या सूझा। उसने रणमल की पगड़ी उठायी। राजस्थान के राजकुल में पहनी जानेवाली वह लम्बी पगड़ी, उसने उसी से बेहोश पड़े रणमल को पलंग से कसकर बाँध दिया। उधर राठौर सरदारों को समाप्त करके चूण्डाजी हाथ में रक्त से रंगी तलवार लिये हुए रणमल के शयन कक्ष की ओर बढ़े आ रहे थे।

एकाएक रणमल की बेहोशी टूटी, उन्होंने विस्फारित नयनों से रधिया की ओर देखा और रधिया ने उनके मुंह पर थूक दिया। घृणा, असीम घृणा का दबा हुआ विस्फोट था वह ! और अब रणमल को अनुभव हुआ कि वह अपने पलंग से बंधे हुए हैं।

रधिया को गालियाँ देते हुए अपने को बन्धन मुक्त करने के लिए उन्होंने हाथ पैर मारने आरम्भ किये। तभी उनके शयनकक्ष का द्वार खुला और उन्होंने देखा कि हाथ में नंगी तलवार लिये हुए चूण्डाजी उनके शयनकक्ष में प्रवेश कर रहे हैं। चूण्डा की तलवार तो रक्त से रँगी हुई थी ही, उनके वस्त्र भी रक्त से रँग गये थे।

रणमल के मुख से निकला, "तुम !"

"हाँ मैं, तुम्हारा काल !"

बल लगाकर राव रणमल ने पलंग को झटका दिया। अपनी कमर से बंधी हुई कटार तेजी के साथ निकाली और चूण्डा के वक्ष का लक्ष्य कर फेंक दी।

रणमल का निशाना अचूक होता है, यह सर्वविदित था और चूण्डा इस प्रहार के प्रति सचेत नहीं थे। लेकिन चीख चूण्डा के मुख से नहीं, अँबली के मुख से निकली।

अँबली गढ़ के फाटक से ही हरिणी की छलाँगें भरती हुई छाया की भाँति चूण्डा के साथ लग गयी थी। रणमल के कटार फेंकते ही वह चूण्डा का कवच बनकर बिजली की तरह रणमल और चूण्डा के बीच में आ गयी थी कटार उसके वक्ष में धँस गया।

चूण्डा ने आगे बढ़कर उसी समय रणमल पर अपनी तलवार का भरपूर वार किया, रणमल का सर धड़ से अलग होकर भूमि पर गिर

पडा और रक्त का फौव्वारा फूट निकला। चूण्डा को अँचली की याद था, उन्होंने घूमकर देखा। वक्ष में धँसी कटार की मूठ पकड़े हुए अनिमेष दृगों से वह उनकी ओर देखे जा रही थी, लेकिन उसके मुख पर असह्य पीड़ा की ऐंठन थी।

चूण्डा ने दौड़कर अँचली को सम्हाला और उस स्पर्श से अंचली जैसे पुलक उठी हो, उसने कहा, 'मुझे भूमि पर लिटा दो महाराज !"

चूण्डा ने अँचली को भूमि पर लिटा दिया। अंचली बोली, "अपने चरणों पर मेरा मस्तक रख दो महाराज, और कटार मेरे वक्ष से निकाल दो—असह्य पीड़ा हो रही है।"

चूण्डा ने बैठकर अपनी जाँघ पर उसका सर रख लिया, और कटार उसके वक्ष से निकाल दी। अँचली ने टूटते स्वर में कहा, 'महाराज के लिए मैंने अपने प्राण दिये, बड़ा पुण्य किया था मैंने।'

चूण्डा बुदबुदाये, "मेरे लिये तूने प्राण दिये और मैं तुझे कुछ भी नहीं कहते कहते चूण्डा का गला रुँध गया।

अँचली के मुख पर एक क्षीण मुस्कान आयी "देवता के प्राणों में ही तो मेरे प्राण हैं बड़ी शान्ति है।" और तभी अँचली निश्चेष्ट हो गयी।

इन सब बातों में चूण्डा को पता ही नहीं चला कि कब राजमाता उस कक्ष में आ गयी थी। उन्होंने गुणवती को कहते सुना गया राक्षस, गया !' घूमकर देखा, गुणवती साक्षात काली के रूप में हाथ में कटार लिये हुए अपने पिता के सर पर लातें मार रही थी। और तब उसने रधिया का हाथ पकड़कर खीचते हुए कहा, सिंहा कहाँ है ? चल मेरे साथ, बता वह कहाँ है ?" और वह रधिया को खीचती हुई पागल-सी उस कक्ष के बाहर चली गयी।

अपने कक्ष में बालक सिंहा सहमा सा रो रहा था। गुणवती ने चीख कर कहा 'मेवाड़ का राजा बनने आया था !" और कटार लेकर वह सिंहा की ओर झपटी। उसी समय रधिया उसके चरणों पर गिर पड़ी, नहीं महारानी जी, उस अबोध को नहीं !" और उधर सिंहा भय से चीख उठा।

अँचली का निर्जीव गरीर छोडकर चूण्डाजी सिहा के कक्ष की ओर दौडे। रधिया को ठुकराने मे गुणवती को कुछ विलम्ब हुआ, तब तक चूण्डा द्वार पर पहुच गय थे। गुणवती कटार तानकर सिहा पर प्रहार करने ही वाली थी कि चूण्डा ने गरजकर कहा, "नही राजमाताजी यह नही होगा।"

और गुणवती का हाथ ऊपर उठा ही रह गया और कटार हाथ स छूटकर भूमि पर जा गिरी। मुडकर गुणवती न चण्डा को देखा और टूटे स्वर म बोल उठी, "आपने मुझे बचा लिया — मुझे बचा लिया कुवरजी!"

चूण्डा ने गुणवती से कहा, "आप रनिवास में अदर जाइए। यह रात रक्तपात, मृत्यु और विनाश की रात है। रणमल के साथियो को समाप्त करना है मुझे! इस बध-स्थल से इस अबोध और निरपराध बालक सिहा और रधिया को ले जाइए, यह आपका सगा भतीजा है। आप मुझे वचन दीजिए कि यह बालक सुरक्षित रहेगा।'

सिसकती हुई गुणवती बोली, "अपने वचनो के धनी देवता की आज्ञा का मै पालन करूगी मैं वचन देती हू।" और सर झुकाकर उन्होन रधिया स कहा, "चल मेरे साथ, रनिवास मे सिहावाला कक्ष अभी वैसा का वैसा खाली पडा है।

'कल प्रात काल मैं रनिवास मे आकर आपसे मिलूगा—मुझे अभी बहुत-कुछ करना है।" और चूण्डा तलवार हाथ म लिये हुए निकल पडे।

उस समय तक चित्तौड म रहनेवाले राठौर सरदारो और सनिको को यह सूचना मिल चुकी थी कि राव रणमल तथा अय राठौर सनिको और सरदारो का सफाया हो चुका है। चूण्डा ने अपने सैनिको को आज्ञा दी कि बचे हुए सैनिको और सरदारो का बध न किया जाये, उन्हे निरस्त्र करके उनके सामने उपस्थित किया जाय। जो प्रतिरोध करे केवल उन्ही का वध किया जाय।

कौन प्रतिरोध करता और किसके लिए प्रतिरोध करता? सारी रात इस निरस्त्रीकरण और आत्मसमर्पण मे बीत गयी। प्रात काल के पहले ही यह काम समाप्त हो चुका था। बचे हुए राठौरो मे चूण्डा न

कहा, "मैं तुम लोगो म बदला नही लेने आया हूँ। तुम तोग मेवाड के राणाजी की सेवा की शपथ लेकर वैसे ही रह सकत हो जैस यहा रह रहे थे। समस्त वशगत भेद-भाव मिटाकर यहाँ रहना होगा। जो मेवाड मे न रहना चाह वह सिहाजी के साथ मन्दौर जाने के लिए स्वतन्त्र है। मैं उन्ह साथ लेकर परसो मन्दौर की सीमा की ओर प्रस्थान करूँगा। तुम तोग मरे हुए सैनिको एव सरदारो की दाहक्रिया की व्यवस्था करो।"

सब काम समाप्त करके चूण्डा रणमल के कक्ष की ओर बढे। अँचली के साथवाले भीलो को अँचली की मृत्यु की सूचना प्रात काल ही मिल गयी थी। वे सब राजभवन के सामन उपस्थित थे। इस बीच चूण्डा ने स्नान करके अपने वस्त्र बदल लिये थे। उन्होने गुणवती के कक्ष म जाने के स्थान पर स्वय गुणवती को बुला भेजा। गुणवती के आने पर चूण्डा ने कहा, "राव रणमल न जो कुछ किया उसका फल उन्हें मिल चुका, अब हमे और आपको अपना कर्त्तव्य निभाना है। रणमल का दाह-सस्कार करना है—उन्हे अग्नि देंगे उनके पौत्र सिहाजी! और और' चूण्डा का स्वर कापने लगा, "और मुझे अँचली का दाह सस्कार करना है उसे अग्नि दूगा मैं।"

चूण्डा न बडे प्रयत्न स अपने को सँभाला, "राजमाताजी, आप दिन मे दरबार कक्ष को साफ करवा के सजा दीजिए—आज सन्ध्या समय राणा मुकुन्दजी का दरबार होगा। मैं स्वय अपन हाथा से राणाजी का फिर से तिलक करूँगा। कल प्रात काल म रधिया और सिहाजी को तथा मन्दौर के जो सैनिक वापस जाना चाह उन्ह साथ लेकर मन्दौर की सीमा की ओर कूच कर दूगा। कैलवाडा स मेर परिवारवाले आज सन्ध्या तक यहा पहुच जायेंगे—मैंने वहा से चलते समय यह व्यवस्था कर दी थी।'

सन्ध्या के समय राणा मुकुलजी का फिर विधिवत राजतिलक हुआ चूण्डाजी के हाथो। समस्त वातावरण बदला हुआ था, उन्मुक्त, आतक रहित। नगर के श्रेष्ठी चित्तौड म उपस्थित सामन्तगण, मेवाड क राज्य कर्मचारी, सब मौजूद थे। राजमाता की गोद म राणा मुकुलजी थ।

दरबार समाप्त होन के बाद चूण्डाजी ने कहा, "कल प्रात मैं अपनी

सेना के साथ मन्दौर की सीमा के लिए रवाना हो रहा हूँ। जो राठौर सैनिक एव सरदार मेरे साथ मन्दौर जा रहे हैं उनके और रधिया के हाथो मे कुवर सिहाजी को छोडकर मैं मन्दौर की सीमा पर से लौट आऊँगा और राध्रा के लिए प्रस्थान करूँगा।"

राजमाता गुणवती ने विनय के स्वर मे आग्रह किया, "कुँवरजी, आप यही वापस आकर रहिए—राणाजी की रक्षा का भार आप पर है, जब तक यह वयस्क नहीं हो जाते।"

चूण्डा बोले, "राजमाताजी, आपको स्मरण होगा कि आपने केवल सकेत किया था चित्तौड स मेरे चले जाने का, और तभी मन मन ही-मन अपने को मेवाड स निर्वासित मान लिया था। लेकिन न जाने क्या उस समय मेरे मन मे आया था कि राणा मुकुलजी निरापद नहीं है—स्वय आपके पिता ही उनके सबसे बडे शत्रु ह। मैंने वचन दिया था कि मैं राणाजी की रक्षा हर हालत मे करूँगा। अपना वचन मैंने पूरा किया, अब मेरी आवश्यकता यहा नही है। मैं अपने मन मे सदा के लिए निर्वासित ही रहूगा। आप मेरे आग्रह की रक्षा करें।"

सर झुकाकर गुणवती बोली, "कुवरजी, आप जैसे उचित समझें मैं क्या कह सकती हूँ।"

दूसरे दिन प्रात काल रधिया और सिहाजी को साथ लेकर चूण्डाजी ने चित्तौड स प्रस्थान किया। राजमाता गुणवती चूण्डाजी को विदा करने के लिए स्वय रनिवास स बाहर आयी। चूण्डाजी के हाथ मे अँचली की अस्थियो की एक थैली थी जिन्ह वह पुष्कर तीर्थ म विसर्जित करने जा रह थे। अपने घोडे पर बैठने के पहले उन्होंने गुणवती से कहा, "आपके और राणाजी के प्रति मेरी समस्त शुभ कामनाएँ है। आवश्यकता पडने पर मैं हमेशा राणाजी की सेवा मे उपस्थित रहूँगा।' और इतना कहकर उन्होंने घोड पर बैठन के लिए कदम उठाया ही था कि एकाएक राजमाता गुणवती कांपते हुए स्वर म बोली, 'कुवरजी, आपको याद होगा, मेरे विवाह का नारियल आपके लिए आया था लेकिन लेकिन मैं बडी अभागी हूँ।" और यह कहकर गुणवती न अपना मस्तक चूण्डा के चरणो पर रख दिया।

चूण्डा ने तत्काल गुणवती को अपने पैरो से उठाया। एक हाथ म अँचली की अस्थियाँ थी, और सामने खडी थी राजमाता गुणवती—आँखो मे आसू भरे हुए। बायें हाथ से लगाम पकडकर बिना कुछ बोले वह घोडे पर बैठ गये—और उन्होने अपना घोडा आगे बढा दिया।

उपसहार

बस, इतना ही—जहाँ तक युवराज चूण्डा के ऐतिहासिक महत्त्व का प्रश्न है, यह कहना कठिन है कि उन्होने अपना अलग राज्य बनाया या नही। इतिहास म इसका उल्लेख नही है, इसलिए यह मान लिया जाये कि शायद नही बनाया।

समर्पण का जीवन—समर्पित अस्तित्व! नियति के क्रम मे आदर्शो का ज्वलन्त स्वरूप! चूण्डा न दार्शनिक थे, न ऋषि थे। राजपरिवार मे जन्मा हुआ यह व्यक्ति विश्व मे आया, और न जाने कहाँ लोप हो गया! असीम साहस, अद्भुत रचनात्मक प्रवृत्ति! राव रणमल के चगुल मे मेवाड को मुक्त करना साधारण काम नही था। जहाँ तक स्वय उनका प्रश्न था, उनके जीवन मूल्यो का प्रश्न था, वह वज्र की तरह कठोर थे, जहाँ तक दूसरो का तथा दूसरो के जीवन का प्रश्न था, वह अत्यन्त दयावान और न्यायप्रिय थे! कही भी अपने को आरोपित करने की भावना नही, लेकिन अपने परिवार और आत्मीय जनो के प्रति अपने उत्तरदायित्व के मामले म अत्यन्त सजग।

चूण्डावत वश की प्रशस्ति, उस वश का गौरव चूण्डा के महान व्यक्तित्व के कारण ही तो है। चूण्डा का जीवन वस्तुत कर्त्तव्यनिष्ठा एव नितान्त समर्पण का जीवन था।

राजमाता गुणवती और भीलनी अँचली! दोनो ही न जाने अन जाने चूण्डा को अपना माना, अपने अपने ढग से। और बडे निस्पृह-भाव स चूण्डा न दोनो ही का मो भी दिया।

इतिहास न चूण्डा की कहानी म चूण्डा का हठ तो लिखा, लेकिन वह हठ किन उदात्त भावनाओ का प्रतीक था, इस पर उस ध्यान देने

का मौका ही नही मिला।

चूण्डा की कहानी आदर्शवाद की कहानी है, नितान्त कुरूप यथार्थ के परिवेश मे।

यथार्थवाद की परिणति व्यग्य है—व्यग्य अनास्था का ही एक रूप माना जाता है, शायद माना जाना चाहिए भी। मैं यहा व्यग्य के क्षेत्र मे बहक आया लेकिन इस अनास्थाजनित व्यग्य के पीछे जीवनी शक्ति मे युक्त एक तरह की सदप्रेरक भावना तो कही-न-कही है ही! वैसे मुझे लगता है कि अपने को समझ पाना मेरे लिए जरा कठिन है।

मैं चूण्डा के आदर्श के प्रति नतमस्तक हूँ, सद के प्रति अन्तरतम की गहरी तहो मे छिपी अपनी आस्था से विवश होकर! इस सत्य, अर्ध-सत्य एव कल्पना से युक्त उपन्यास को लिखते हुए मैं ऐतिहासिक क्षेत्र मे भटक आया हूँ। लेकिन यह भटकाव भी मुझे बडा प्यारा लग रहा है—जिन्दगी को मैंने एक भटकाव के रूप मे ही तो देखा है!

●●●